श्रीश्रीराधाकृष्णगणोद्देश-दीपिका

श्रीश्रीलरूप गोस्वामी

श्रीश्रीराधाकृष्णगणोद्देश-दीपिका

श्रीश्रीगुरु–गौराङ्गौ जयतः

श्रीश्रीलरूप गोस्वामी प्रणीत

श्रीश्रीराधाकृष्णगणोद्देश–दीपिका

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति एवं तदन्तर्गत भारतव्यापी श्रीगौड़ीय मठोंके
प्रतिष्ठाता, श्रीकृष्णचैतन्याम्नाय दशमाधस्तनवर
श्रीगौड़ीयाचार्य केशरी नित्यलीलाप्रविष्ट
ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्री

श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजके
अनुगृहीत

त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज
द्वारा अनुवादित एवं सम्पादित

गौड़ीय वेदान्त प्रकाशन

प्रकाशक— श्रीशान्ति दासी

प्रथम संस्करण— ५००० प्रतियाँ
श्रीश्रीलरूप गोस्वामीकी तिरोभाव तिथि
श्रीचैतन्याब्द ५२१
२५ अगस्त, २००७

प्राप्तिस्थान

श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ
मथुरा (उ॰प्र॰)
०५६५-२५०२३३४

श्रीरूप-सनातन गौड़ीय मठ
सेवाकुञ्ज, वृन्दावन (उ॰प्र॰)
०५६५-२४४३२७०

श्रीगिरिधारी गौड़ीय मठ
दसविसा, राधाकुण्ड रोड
गोवर्धन (उ॰प्र॰)
०५६५-२८१५६६८

श्रीश्रीकेशवजी गौड़ीय मठ
कोलेरडाङ्गा लेन
नवद्वीप, नदीया (प॰बं॰)
०९३३३२२२७७५

श्रीरमणबिहारी गौड़ीय मठ
बी-३, जनकपुरी, नई दिल्ली
०११-२५५३३५६८

खण्डेलवाल एण्ड संस
अठखम्बा बाजार, वृन्दावन
०५६५-२४४३१०१

समर्पण

परम करुणामय एवं अहैतुकी कृपालु
अस्मदीय श्रीगुरुपादपद्म

नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद

श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजकी
प्रेरणासे

यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है।
श्रीगुरुपादपद्मकी अपनी ही वस्तु उन्हींके
श्रीकरकमलोंमें समर्पित है।

विषय–सूची

भूमिका

आज मुझे श्रीशचीनन्दन गौरहरिके नित्य परिकर शुद्धभक्तिरस-रसिक कुलचूड़ामणि श्रीरूप गोस्वामी द्वारा प्रणीत 'श्रीश्रीराधाकृष्णगणोद्देश-दीपिका' नामक ग्रन्थका हिन्दी-संस्करण श्रद्धालु पाठकोंके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार आनन्दकी अनुभूति हो रही है। उनके द्वारा रचित यह अनुपम ग्रन्थ रागानुगीय व्रजभावमयी उपासनाका प्रधान अङ्ग है। इसकी भाषा गम्भीर, किन्तु सहज बोधगम्य है।

श्रीचैतन्य मनोऽभीष्ट संस्थापक श्रील रूप गोस्वामीने अपने परम मधुर स्वभाववशतः इस ग्रन्थके बृहद् भागमें वात्सल्य और मधुर रसके परिकरों तथा लघु भागमें सख्य और दास्य रसके परिकरोंके नाम, रूप, गुण और सेवा-परिपाटीका संक्षिप्त, किन्तु मार्मिक वर्णन प्रस्तुत किया है। ग्रन्थमें कहीं-कहीं, विशेष करके लघु भागमें श्रीश्रीराधागोविन्दके रूप, अङ्ग-प्रत्यङ्ग, उनके शृङ्गार तथा उनके द्वारा व्यवहृत अद्भुत वस्तुओंका बहुत बारीकीसे वर्णन किया गया है। श्रीकृष्ण एवं उनके परिकरोंका ये सब परिचय एक साथ किसी भी दूसरे ग्रन्थमें उपलब्ध नहीं है। श्रीश्रीराधाकृष्णके गणों अर्थात् परिकरोंका संक्षिप्त रूपसे निदर्शन करानेवाला होनेके कारण इसका नाम श्रीश्रीराधाकृष्णगणोद्देश-दीपिका है।

व्रजके शुद्ध रसिक भक्तोंके मुखसे भगवान्की अप्राकृत लीला कथाओंका श्रवण करके जिन सौभाग्यशाली जीवोंके हृदयमें व्रजवासियों जैसे भावों द्वारा श्रीकृष्णकी सेवा-सुश्रुषा करनेका लोभ जागृत होता है, वे रागानुगा भक्तिके अधिकारी हैं।

श्रीकृष्णके नित्य सिद्ध परिकरोंका कृष्णके प्रति कैसा मधुर भाव है, क्या मुझे भी वैसा ही भाव प्राप्त हो सकता है, कैसे वह भाव प्राप्त हो, इसके लिए हृदयमें छटपटाहट होती है—ऐसी छटपटाहट या तीव्र लालसा ही उक्त लोभका लक्षण है।

जब साधकके जीवनमें ऐसी अवस्था आती है, तब वह महाजनों द्वारा दिखाये गये मार्गका अनुसरण करते हुए साधक देहसे बाहरमें श्रीरूप-सनातन आदि व्रजवासियोंके आनुगत्यमें उनके जैसे श्रवण-कीर्त्तन-संख्यापूर्वक नाम-गान आदि कायिक सेवा तथा सिद्धदेहसे श्रीललिता, श्रीविशाखा और श्रीरूप मञ्जरी आदिके आनुगत्यमें मानसी सेवा करता है।

उस अप्राकृत चिन्मय मानसी सेवाका अनुशीलन करनेके लिए श्रीश्रीराधाकृष्णके जिन नित्य परिकरोंका परिचय तथा उनकी प्रेममयी सेवाकी प्रणालीको जाननेकी आवश्यकता होती है, उसीका ही इस ग्रन्थमें वर्णन किया गया है। प्रसङ्ग वशतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि सिद्धदशामें उपासनाकी परिपूर्णताके लिए यही ग्रन्थ ही एकमात्र पथ प्रदर्शक है।

श्रील रूप गोस्वामीका संक्षिप्त जीवन-चरित्र

श्रील रूप गोस्वामी श्रीगौराङ्गलीलाके षड्गोस्वामियोंमेंसे अन्यतम तथा व्रजलीलामें श्रीरूपमञ्जरी हैं। इनके पूर्वज कर्णाटक देशमें वास करते थे। वहाँ किसी कारणसे इनके पूर्वजोंमेंसे कोई एक अपने देशको छोड़कर बङ्गालमें आकर बस गये थे। श्रील रूप गोस्वामी इन्हींके वंशमें प्रादुर्भूत हुए। भारद्वाज गोत्रीय यजुर्वेदीय ब्राह्मण कुलमें श्रीलरूप गोस्वामीका आविर्भाव लगभग १४११ शकाब्द (अर्थात् १४८९ ईस्वी) में बङ्गालके मोरग्राम माधाईपुर नामक ग्राममें हुआ था। इनके पिताका नाम कुमारदेव था। ये तीन भाई थे। बड़े भाई सनातन गोस्वामी थे, छोटे भाईका नाम अनुपम या वल्लभ था, जिनके पुत्र श्रीजीव गोस्वामी थे। बचपनसे ही इन तीनों भाइयोंकी भगवच्चरणारविन्दमें अत्यन्त अनुरक्ति थी।

विद्याध्ययन समाप्त करनेके बाद युवावस्थामें बङ्गाल (गौड़देश) के बादशाह हुसैन शाहने इनकी तीक्ष्ण मेधा, उदारता और अन्यान्य समस्त गुणोंसे प्रभावित होकर श्रीसनातन गोस्वामीको अपना प्रधानमन्त्री और इन्हें उप-प्रधानमन्त्री (विशिष्ट कर्मचारी) के पदपर नियुक्त

किया। १५१४ ईस्वीमें जब श्रीचैतन्यमहाप्रभुने प्रथम बार व्रजयात्रा की, उस समय उनसे इनकी रामकेलि गाँवमें भेंट हुई। श्रीमन् महाप्रभुजी तो उस बार वहींसे ही लौटकर जगन्नाथपुरी चले गये। परन्तु उनके सत्सङ्गके बाद श्रीरूप गोस्वामीको कृष्णप्राप्तिकी उत्कण्ठा इतनी अधिक सताने लगी कि राजकार्य इत्यादि सभी कुछ छूट गया। द्वितीय बार श्रीचैतन्य महाप्रभु श्रीवृन्दावन पधारे। जब वे वृन्दावनका दर्शनकर लौट रहे थे, तब उस समय प्रयागमें श्रीरूप गोस्वामीकी महाप्रभुजीसे भेंट हुई। महाप्रभुने अपने प्रिय रूपके हृदयमें शक्ति सञ्चारकर उस समय उन्हें भक्तिरसतत्त्वका अपूर्व विवेचन श्रवण कराया था। श्रीचैतन्य-चरितामृत ग्रन्थमें इसका वर्णन किया गया है।

प्रभु कहे,—शुन, रूप, 'भक्तिरसेर लक्षण'।
सूत्ररूपे कहि विस्तार ना जाए वर्णन॥

पारावार-शून्य गभीर भक्तिरस-सिन्धु।
तोमाय चखाइते तार कहि एक 'बिन्दु'॥

(चै॰च॰म॰ १९/१३६-१३७)

अर्थात् श्रीमन् महाप्रभुजीने कहा—"हे प्रिय रूप! मैं तुम्हें भक्तिरसका लक्षण सूत्र रूपमें बतला रहा हूँ, क्योंकि विस्तार रूपसे इसका वर्णन करना असम्भव है। पारावार अर्थात् यह भक्तिरसामृतसिन्धु आर-पारशून्य गभीर है। उसमेंसे मैं तुम्हें एक बिन्दु प्रदान कर रहा हूँ।" इस प्रकार दस दिनों तक प्रयागमें रहकर उन्होंने भक्तिरसतत्त्वका अपूर्व विवेचन किया। श्रील रूप गोस्वामीने अपने भक्तिरसामृतसिन्धु, उज्ज्वलनीलमणि, ललितमाधव, विदग्धमाधव आदि ग्रन्थोंमें इसका विवेचन किया है।

श्रीचैतन्य महाप्रभुके प्रति विलक्षण अनुरागके कारण श्रीलरूप गोस्वामीका स्वाभाविक गृहत्याग, दैन्य, विषयोंके प्रति वैराग्य इत्यादि सर्वत्र ही प्रसिद्ध है। श्रीचैतन्यचरितामृत, भक्तमाल आदि ग्रन्थोंमें सविस्तार इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व जीवनीका वर्णन है। श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशयने यथार्थतः इन्हें 'श्रीचैतन्यमनोऽभीष्ट-संस्थापक' की

उपाधि दी है। श्रीव्रजमण्डलके लुप्त तीर्थोंका उद्धार और भक्तिशास्त्रोंका प्रचार—दो कार्योंके लिए श्रीचैतन्य महाप्रभुने इनको विशेष आदेश दिया था। गौड़देशमें रहते समय ही इन्होंने विदग्धमाधव और ललितमाधव नाटकके सूत्रोंको लिखना आरम्भ कर दिया था। व्रजलीला और पुरलीलाको एक ही नाटक ग्रन्थमें रचनाकर व्रजविरहको प्रशमन करनेकी इच्छा रहनेपर भी उड़ीसाके सत्यभामापुरमें श्रीसत्यभामादेवीकी आज्ञा एवं नीलाचलमें महाप्रभुके साक्षात् उपदेशसे पृथक्-पृथक् रूपमें नाटक ग्रन्थोंकी रचना की। भक्तगोष्ठीमें श्रीचैतन्य महाप्रभु इनकी रचनाओंको सुनकर कितने आनन्दित हुए, एकमात्र रसिकजनोंके लिए ही वह संवेद्य है। श्रीरूपमें सर्वशक्तिका सञ्चारकर प्रभुने इन्हें आचार्यपद प्रदानकर वृन्दावनमें भेजा और अपने मनोऽभीष्टको पूर्ण किया। इसलिए श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशयने लिखा है—

श्रीचैतन्य मनोऽभीष्टं स्थापितं येन भूतले।
स्वयं रूपः कदा मह्यं ददाति स्वपदान्तिकम्॥

श्रीरूपगोस्वामी द्वारा रचित ग्रन्थावली इस प्रकारसे—भक्तिरसामृतसिन्धु, उज्ज्लनीलमणि, लघुभागवतामृतम्, विदग्धमाधव, ललितमाधव, निकुञ्ज-रहस्यस्तव, स्तवमाला, मथुरामाहात्म्य, पद्यावली, उद्धवसन्देश, हंसदूत, दानकेलिकौमुदी, कृष्णजन्मतिथि विधि, प्रयुक्ताख्यात् मञ्जरी, नाटकचन्द्रिका इत्यादि।

प्रस्तुत ग्रन्थका वैष्णव तोषणी टीकामें वर्णन

श्रीमद्भागवतके दशम स्कन्धकी वैष्णवी तोषणी नामक टीकाके अन्तमें श्रीलरूप गोस्वामी द्वारा रचित ग्रन्थोंका इस प्रकार वर्णन आता है—

तयोरनुजसृष्टेषु काव्यं श्रीहंसदूतकं।
बृहद् लघुतया ख्याता श्रीगणोद्देशदीपिका॥

अर्थात् श्रीसनातन गोस्वामीके अनुज श्रीलरूप गोस्वामीने श्रीहंसदूत नामक काव्य तथा बृहद् और लघुके नामसे विख्यात श्रीराधाकृष्णगद्दोदेश-दीपिकाकी रचनाकी है।

भक्ति रत्नाकर ग्रन्थकी पञ्चम तरङ्गमें भी श्रीश्रीराधाकृष्णगणोद्देश-दीपिकाके विषयमें इसी प्रकारका वर्णन आता है।

श्रीलरूप गोस्वामीका यह मूल ग्रन्थ संस्कृत भाषामें है। यद्यपि इसके बहुत-से संस्करण बंगला भाषामें अनुवाद सहित प्रकाशित हुए हैं, तथापि प्रायः सभीमें पाठान्तर, क्रम विपर्यय, अधिक पाठ, कम पाठ आदि दिखायी देता है। हमने संशोधन करके यथा सम्भव इन सबको सुव्यवस्थित एवं पदटीका आदि द्वारा सुसज्जित करनेका भरसक प्रयास किया है। आशा करता हूँ कि इसके द्वारा श्रील रूप गोस्वामी एवं रूपानुगा गुरुवर्ग प्रसन्न होंगे तथा हमारे प्रति कृपा-आशीर्वाद करेंगे। इससे पाठकोंको भी ग्रन्थका अनुशीलन करनेमें सुविधा होगी।

इस ग्रन्थके प्रूफ संशोधनके लिए श्रीमान् भक्तिवेदान्त माधव महाराज, श्रीमान् विजय कृष्ण ब्रह्मचारी और बेटी मधु खण्डेलवाल (एम॰ए॰, पी॰एच॰डी॰), कम्पोजिंग तथा ले-आउटके लिए बेटी शान्ति दासीकी सेवा-प्रचेष्टा अत्यन्त सराहनीय और विशेष उल्लेखनीय है। मुखपृष्ठका डिजाइन श्रीमान् कृष्णकारुण्य ब्रह्मचारी तथा श्रीमान् वसन्त ब्रह्मचारीने किया है।

श्रीश्रीगुरु-गौराङ्ग गान्धर्विका-गिरिधारी इनपर प्रचुर कृपाशीर्वाद वर्षण करें—उनके श्रीचरणोंमें यही प्रार्थना है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भक्ति-पिपासु, रसिक और भावुक तथा व्रज-रसके प्रति लुब्ध रागानुगा भक्तिके साधकोंमें इस ग्रन्थका समादर होगा। श्रद्धालुजन इस ग्रन्थका पाठकर श्रीचैतन्य महाप्रभुके प्रेम-धर्ममें प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे।

अन्तमें भगवत्-करुणाके घन-विग्रह परम आराध्यतम श्रील गुरुपादपद्म मेरे प्रति प्रचुर कृपा वर्षण करें, जिससे उनकी मनोभीष्ट सेवामें अधिकाधिक अधिकार प्राप्त कर सकूँ—यही उनके प्रेम प्रदानकारी श्रीचरणोंमें सकातर प्रार्थना है।

शीघ्रतावश प्रकाशन हेतु इस ग्रन्थमें कुछ त्रुटियोंका रह जाना स्वाभाविक है। श्रद्धालु पाठकगण उसे संशोधन करके पाठ करेंगे और हमें सूचित करेंगे, जिससे कि अगले संस्करणमें हम उन त्रुटियोंका संशोधन कर सकें।

श्रीकामिका एकादशी तिथि	श्रीहरि–गुरु–वैष्णव–कृपालेश–प्रार्थी
श्रीचैतन्याब्द ५२१	दीन–हीन
९ अगस्त, २००७ ई०	**त्रिदण्डिभिक्षु श्रीभक्तिवेदान्त नारायण**

श्रीश्रीराधानाथो जयति

श्रीश्रीराधाकृष्णगणोद्देश-दीपिका

(बृहद्भाग)

मङ्गलाचरणम्

(मङ्गलाचरण)

वन्दे गुरुपदद्वन्द्वं भक्तवृन्द-समन्वितं।
श्रीचैतन्यप्रभुं वन्दे नित्यानन्द-सहोदितम्॥१॥

भावानुवाद—मैं सर्वप्रथम श्रीगुरुपादपद्म सहित समस्त भक्तों और श्रीनित्यानन्द प्रभुके साथ अवतरित श्रीचैतन्य महाप्रभुकी वन्दना करता हूँ॥१॥

श्रीनन्दनन्दनं वन्दे राधिका-चरणद्वयम्।
गोपीजन-समायुक्तं वृन्दावन-मनोहरम्॥२॥

भावानुवाद—मैं गोपियोंके द्वारा परिवेष्टित (चारों ओरसे घिरे हुए) उन श्रीनन्दनन्दन और श्रीमती राधिकाके श्रीचरणकमलोंकी वन्दना करता हूँ, जो सभी वृन्दावनवासियोंके मनको हरण कर लेते हैं॥२॥

ग्रन्थारम्भः

(ग्रन्थकी प्रस्तावना)

ये सूत्रिताः सता रत्या प्रसिद्धाः शास्त्र-लोकयोः।
व्याक्रियन्ते परीवारास्ते वृन्दावन-नाथयोः॥३॥

मथुरामण्डले लोके ग्रन्थेषु विविधेषु च।
पुराणे चागमादौ च तद्भक्तेषु च साधुषु॥४॥

ते समासाद्विलिख्यन्ते स्वसुहृत्परितुष्टये।
आनुपूर्वीविधानेन रतिप्रथित-वर्त्मनः॥५॥

भावानुवाद—मथुरा मण्डलमें, लोक प्रवादमें, पुराण और आगम आदि जैसे विविध ग्रन्थोंमें, भक्तोंके द्वारा संगृहीत तथा साधुओंमें प्रचलित वृन्दावननाथ श्रीकृष्ण और वृन्दावनेश्वरी श्रीमती राधाके परिकरोंके विषयमें जो सब जानकारी प्राप्त हुई है, उसी प्रसिद्ध जानकारीके आधारपर मैं (श्रीरूप गोस्वामी) अपने सुहृत (श्रीसनातन गोस्वामी) की सन्तुष्टिके लिए नित्य सिद्ध व्रजवासियोंका सामूहिक रूपसे रागमार्गके अनुकूल यथाक्रम संक्षेपमें वर्णन कर रहा हूँ। इससे सभीको श्रीश्रीराधाकृष्ण और उनके परिकरोंमें विशेष अनुराग उत्पन्न हो॥३-५॥

श्रीकृष्णस्य परिवाराः

(श्रीकृष्णका परिवार)

ते कृष्णस्य परीवारा ये जना व्रजवासिनः।
पशुपालास्तथा विप्रा बहिष्ठाश्चेति ते त्रिधा॥६॥

भावानुवाद—व्रजवासीजन ही श्रीकृष्णका परिवार है। उनका यह परिवार पशुपाल, विप्र और बहिष्ठ (शिल्पकार) रूपसे तीन प्रकारका है॥६॥

(१) पशुपालाः

(पशुओंका पालन करनेवाले)

पशुपालास्त्रिधा वैश्या आभीरा गुर्जरास्तथा।
गोप-बल्लव-पर्याया यदुवंश-समुद्भवाः॥७॥

भावानुवाद—पशुपाल भी पुनः वैश्य, आभीर (अहीर) और गुर्जर (गूजर) भेदसे तीन प्रकारके हैं। इनकी उत्पत्ति यदुवंशसे हुई है तथा ये सभी गोप और बल्लव जैसे समानार्थक नामोंसे जाने जाते हैं॥॥७॥

(क) वैश्याः

(वैश्य)

प्रायो गोवृत्तयो मुख्या वैश्या इति समीरिताः।
अन्येऽनुलोमजाः केचिदाभीरा इति विश्रुताः॥८॥

भावानुवाद—वैश्य प्रायः गोपालनके द्वारा जीवन निर्वाह करते हैं और आभीर तथा गुर्जरसे श्रेष्ठ माने जाते हैं। अनुलोम जात (उच्च वर्णके पिता और निम्न वर्णकी मातासे उत्पन्न) वैश्योंको आभीर नामसे भी जाना जाता है॥८॥

(ख) आभीराः

(अहीर)

आचाराधेन तत्साम्यादाभीराश्च स्मृता इमे।
आभीराः शूद्रजातीया गोमहिषादि-वृत्तयः।
घोषादिशब्द-पर्यायाः पूर्वतो न्यूनतां गताः॥९॥

भावानुवाद—आचरणमें आभीर भी वैश्योंके समान जाने जाते हैं। ये शूद्रजातीय हैं तथा गाय और भैंस आदिके पालन द्वारा अपना जीवन-निर्वाह करते हैं। इन्हें घोष भी कहा जाता है। ये पूर्वकथित वैश्योंसे कुछ हीन माने जाते हैं॥९॥

(ग) गुर्जराः

(गूजर)

किञ्चिदाभीरतो न्यूनाश्छागादि-पशुवृत्तयः।
गोष्ठप्रान्तकृतावासाः पुष्टांगा गुर्जराः स्मृताः॥१०॥

भावानुवाद—अहीरोंसे कुछ हीन, बकरी आदि पशुओंका पालन करनेवाले तथा गोष्ठ (नन्दव्रज) की सीमापर वास करनेवाले गोप गुर्जर कहलाते हैं। ये प्रायः हृष्ट-पुष्ट अङ्गोंवाले होते हैं॥१०॥

(२) विप्राः

(विप्र)

सर्ववेदविदो विप्राः याजनाद्यधिकारिणः॥११॥

भावानुवाद—विप्र (ब्राह्मण) समस्त वेदोंको जानते हैं तथा यजन (यज्ञ करने), याजन (यज्ञ कराने), अध्ययन, अध्यापन, दान (देने) और प्रतिग्रह (दान लेने) नामक छह कार्योंमें व्यस्त रहते हैं॥११॥

(३) बहिष्ठाः

(शिल्पकार)

बहिष्ठाः कारवः प्रोक्ताः नानाशिल्पोपजीविनः॥१२॥

भावानुवाद—अनेक प्रकारके शिल्पकार्यों द्वारा जीवन निर्वाह करनेवाले शिल्पकारोंको बहिष्ठ कहते हैं॥१२॥

उपरोक्त परिवारका पुनः आठ भागोंमें विभाजन

एभिः पञ्चविधैरेव परीवारा हरेरिह।
पूज्या भ्रातृभगिन्याद्या दूत्यो दासाश्च शिल्पिनः।
दासिकाश्च वयस्याश्च प्रेयस्यश्चेति तेऽष्टधा॥१३॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके ये पाँच (वैश्य, आभीर और गुर्जर नामक तीन पशुपाल तथा विप्र एवं बहिष्ठ) परिवार पुनः आठ भागोंमें विभाजित है। यथा—पूज्य, भाई-बहन आदि, दूतीवर्ग, दास, शिल्पी, दासियाँ, वयस्य और प्रेयसी॥१३॥

पूज्याः

(श्रीकृष्णके पूज्य)

मान्या भ्रात्रादयस्तस्य वयस्याः सेवकादयः।
श्रीगोष्ठयुवराजस्य प्रेयस्यश्च पुर क्रमात्॥१४॥

पूज्याः पितामहाद्याश्च तथा ज्ञेया महीसुराः।१५(क)

भावानुवाद—श्रीव्रजराज नन्दके भ्रातृवर्ग, समवयस्य (समान आयुवाले मित्र), सेवक आदि और प्रेयसी यशोदा तथा व्रजकी अन्यान्य वृद्धा गोपियाँ गोष्ठयुवराज श्रीकृष्णके पूजनीय हैं।

पितामह (दादा), मातामह (नाना) और ब्राह्मण आदि भी श्रीकृष्णके पूजनीय हैं॥१४-१५(क)॥

पितामहो हरेगौरः सितकेशः सिताम्बरः ॥१५(ख)॥

मङ्गलामृतपर्जन्यः पर्जन्यो नाम बल्लवः।
वरिष्ठो व्रजगोष्ठीनां स कृष्णस्य पितामहः ॥१६॥

भावानुवाद—मङ्गलस्वरूप अमृतकी वर्षा करनेवाले होनेके कारण श्रीकृष्णके पितामहका नाम पर्जन्य (मेघ) है। इनकी अङ्गकान्ति तप्त काञ्चनके समान है और केश तथा वस्त्र दोनों ही सफेद रङ्गके हैं। पितामह श्रीपर्जन्य व्रजमें सभीके पूज्य हैं॥१५(ख)-१६॥

यः सुरर्षेर्निदेशेन लक्ष्मीभर्त्तुरूपासनाम्।
पुरा नन्दीश्वरे चक्रे श्रेष्ठसन्ततिकाङ्क्षया।
वागमूर्त्ता तते व्योम्नि प्रादुरासीत् प्रियङ्करी॥१७॥

भावानुवाद—पूर्वकालमें श्रीपर्जन्यने नन्दीश्वर प्रदेशमें उत्तम सन्तान प्राप्तिकी कामनासे देवर्षि नारदके उपदेशानुसार लक्ष्मीपति श्रीनारायणकी उपासना की थी। बहुत अधिक समय तक तपस्या करनेके बाद पर्जन्य महाराजने सुविस्तृत नभमण्डलसे अत्यधिक प्रिय लगनेवाली आकाशवाणीको सुना, जो कह रही थी कि—॥१७॥

"तपसानेन धन्येन भाविनः पञ्च ते सुताः।
वरीयान् मध्यमस्तेषां नन्दनाम्ना भविष्यति॥१८॥

नन्दनस्तस्य विजयी भविता व्रजनन्दनः।
सुरासुरशिखारत्न-नीराजितपदाम्बुजः ॥"१९॥

भावानुवाद—"हे पर्जन्य! तुम्हारी इस धन्यमयी तपस्याके फलस्वरूप तुम्हारे पाँच पुत्र उत्पन्न होंगे। उनमेंसे मझला पुत्र सर्वश्रेष्ठ तथा नन्द नामसे विख्यात होगा। उस नन्दका नन्दन (पुत्र) भुवन विजयी और व्रजको आनन्द प्रदान करनेवाला होगा। 'क्या सुर, क्या असुर' सभी अपने-अपने मस्तकके रत्नसमूह द्वारा उसके श्रीचरणकमलोंकी आरती उतारेंगे॥"१८-१९॥

तुष्टस्तत्र वसन्नत्र प्रेक्ष्य केशिनमागतं।
परीवारैः समं सर्वैर्ययौ भीतो बृहद्वनं॥२०॥

भावानुवाद—श्रीपर्जन्यने कुछ समय तक प्रसन्नचित्त होकर श्रीनन्दीश्वर प्रदेशमें वास किया, किन्तु जब इन्हें केशी नामक असुरके आगमनका पता चला, तब ये भयभीत होकर अपने सम्पूर्ण परिवार सहित महावन (गोकुल) चले गये॥२०॥

पितामही महीमान्या कुसुम्भाभा हरित्पटा।
वरीयसीति विख्याता खर्वा क्षीराभकुन्तला॥२१॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णकी पितामही (दादी) वरीयसीके नामसे विख्यात हैं। ये व्रजमण्डलमें बहुत पूजनीय हैं। इनकी अङ्गकान्ति कुसुम्भ (केसर) के समान तथा वस्त्र हरे रङ्गके हैं। इनकी लम्बाई बहुत ही कम तथा समस्त केश दूधके समान सफेद हैं॥२१॥

पितृव्यौ पितुरूर्जन्यराजन्यौ बल्लवौ च यौ।
नटीसुवेर्जनाख्यापि पितामहसहोदरा॥२२॥
गुणवीरः पतिर्यस्याः सूर्यस्याह्वयपत्तनं।२३(क)

भावानुवाद—श्रीकृष्णके पिता श्रीनन्द महाराजके ऊर्जन्य और राजन्य नामक दो पितृव्य (चाचा) हैं। ये दोनों व्यवसायसे गोप हैं। नृत्यविद्यामें निपुण अथवा नटी नामसे प्रसिद्ध सुवेर्जना श्रीकृष्णके पितामहकी सगी बहन अर्थात् श्रीनन्द महाराजकी बुआ है। सुवेर्जनाके पतिका नाम गुणवीर है। ये सूर्यकुण्डमें वास करते हैं॥२२-२३(क)॥

पिता व्रजजनानन्दो नन्दो भुवनवन्दितः॥२३(ख)॥

तुन्दिलश्चन्दनरुचिर्बन्धुजीवनिभाम्बरः।
तिलतण्डुलितं कूर्चं दधानो लम्बविग्रहः॥२४॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके पिताका नाम श्रीनन्द महाराज है। ये भुवन वन्दित तथा व्रजवासियोंके आनन्दस्वरूप हैं। इनका उदर स्थूल, अङ्गकान्ति चन्दनके समान और वस्त्र बन्धुजीव (बाँधुली) पुष्पके समान है। ये तिल-तण्डुलित अर्थात् सफेद और काले रङ्गकी मिलीजुली दाढ़ीसे युक्त लम्बे शरीरवाले हैं॥२३(ख)-२४॥

उपनन्दानुजो नन्दो वसुदेव–सुहृत्तमः।
गोपराजयशोदे च कृष्णतातौ व्रजेश्वरौ॥२५॥

भावानुवाद—श्रीनन्द उपनन्दके अनुज अर्थात् छोटे भाई तथा वसुदेवके परम मित्र हैं। गोपराज नन्द और यशोदा श्रीकृष्णके पिता और माता हैं, ये दोनों व्रजेश्वर और व्रजेश्वरीके रूपमें भी प्रसिद्ध हैं॥२५॥

वसुदेवोऽपि वसुभिर्दीव्यतीत्येष भण्यते।
यथा द्रोणस्वरूपांशः ख्यातश्चानकदुन्दुभिः॥२६॥

नामेदं गारुडे प्रोक्तं मथुरामहिमक्रमे।
वृषभानुर्व्रजे ख्यातो यस्य प्रियसुहृद्वरः॥२७॥

भावानुवाद—'वसु' शब्द पुण्य, रत्न और धन वाची है। वसुके द्वारा देदीप्यमान होनेके कारण श्रीनन्द महाराजके मित्र वसुदेव कहलाते हैं। अथवा विशुद्ध सत्त्वगुणको वसुदेव कहते हैं, इस अर्थसे शुद्ध सत्त्वगुण सम्पन्न होनेके कारण इनका नाम वसुदेव है। ये द्रोण नामक वसुके स्वरूपांश हैं। ये आनक दुन्दुभि नामसे भी प्रसिद्ध हैं।

इनके इन नामोंका गरुड़ पुराणके मथुरा–माहात्म्यमें वर्णन किया गया है। व्रजमें विख्यात श्रीवृषभानु महाराज इनके परम प्रिय मित्र हैं॥२६–२७॥

माता गोपयशोदात्री यशोदा श्यामलद्युतिः।
मूर्त्ता वत्सलतेवासौ शक्रचापनिभाम्बरा॥२८॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णकी माता गोपजातिको यश प्रदान करनेवाली होनेके कारण यशोदा कहलाती हैं। इनकी अङ्गकान्ति श्यामल वर्णकी है। ये वात्सल्यरसकी प्रतिमूर्त्ति हैं तथा इनके वस्त्र इन्द्रधनुषके समान हैं॥२८॥

नातिस्थूलतनुः किञ्चिद्दीर्घमेचककुन्तला।
ऐन्दवी कीर्त्तिदा यस्याः प्रिया प्राणसखी वरा॥२९॥

भावानुवाद—श्रीयशोदाका शरीर न तो बहुत अधिक मोटा और न ही बहुत अधिक पतला अर्थात् मध्यमाकार है। इनके केश कुछ लम्बे, मेचक (काले) रङ्गके हैं। ऐन्दवी और कीर्त्तिदा इनकी प्राणोंके समान प्रिय श्रेष्ठ सखियाँ हैं॥२९॥

गोकुलाधीशगृहिणी यशोदा देवकीसखी।
गोपेश्वरी गोष्ठराज्ञी कृष्णमातेति भण्यते॥३०॥

भावानुवाद—ये गोकुलाधीशकी गृहिणी अर्थात् व्रजराज श्रीनन्द महाराजकी पत्नी, यशोदा, देवकी सखी अर्थात् श्रीवसुदेवकी पत्नी श्रीदेवकीकी सखी, गोपेश्वरी, गोष्ठरानी और कृष्णमाताके रूपमें प्रसिद्ध हैं॥३०॥

तथा च आदिपुराणे—

(आदिपुराणके अनुसार)

"द्वे नाम्नी नन्दभार्याया यशोदा देवकीति च।
अतः सख्यमभूत्तस्या देवक्याः शौरिजायया॥"३१॥

भावानुवाद—श्रीनन्द महाराजकी पत्नीके दो नाम हैं—यशोदा और देवकी। इसलिए शौरी श्रीवसुदेवकी पत्नी देवकीके साथ नाम की समानता होनेके कारण स्वाभाविक रूपमें यशोदाका विशेष सख्य भाव है॥३१॥

रोहिणी बृहदम्बास्य प्रहर्षारोहिणी सदा।
स्नेहं या कुरुते राम-स्नेहात् कोटि-गुणं हरौ॥३२॥

भावानुवाद—श्रीरोहिणीदेवी श्रीकृष्णकी बड़ी माताके रूपमें प्रसिद्ध हैं तथा सदैव उत्तरोत्तर वर्धित होनेवाले आनन्दको प्राप्त करनेवाली आनन्दकी मूर्त्ति है। ये श्रीकृष्णको बलरामसे भी कोटिगुणा अधिक स्नेह करती हैं॥३२॥

उपनन्दोऽभिनन्दश्च पितृव्यौ पूर्वजौ पितुः।
पितृव्यौ तु कनीयांसौ स्यातां सनन्द-नन्दनौ॥३३॥

भावानुवाद—श्रीनन्दके उपनन्द और अभिनन्द नामक बड़े भाई तथा सनन्द और नन्दन नामक दो छोटे भाई हैं। ये सब श्रीकृष्णके पितृव्य (ताऊ-चाचा) हैं॥३३॥

आद्यः सितारुणरुचिर्दीर्घकूर्चो हरित्पटः।
तुङ्गी प्रियास्य सारङ्गवर्णा सारङ्गशाटिका॥३४॥

भावानुवाद—सबसे बड़े भाई श्रीउपनन्दकी अङ्गकान्ति धवल (सफेद) और अरुण (उगते हुए सूर्य) के रङ्गके मिश्रण अर्थात् गुलाबी रङ्ग जैसी है। इनकी दाढ़ी बहुत लम्बी तथा वस्त्र हरे रङ्गके हैं। इनकी पत्नीका नाम तुङ्गी है, जिनकी अङ्ग कान्ति तथा साड़ीका रङ्ग सारङ्ग अर्थात् चातक पपीहेके रङ्ग जैसा है॥३४॥

द्वितीयः कम्बुरम्यश्री-लम्बकूर्चोऽसिताम्बरः।
भार्यास्य पीवरी नीलपटा पाटलविग्रहा॥३५॥

भावानुवाद—दूसरे भाई श्रीअभिनन्दकी अङ्गकान्ति शंखके समान गौरवर्ण और दाढ़ी लम्बी है। ये काले रङ्गके वस्त्र धारण करते हैं। इनकी पत्नीका नाम पीवरी है। जो नीले रङ्गके वस्त्र धारण करती है तथा जिनकी अङ्ग कान्ति पाटल अर्थात् गुलाबी रङ्गकी है॥३५॥

सुनन्दापरपर्यायः सनन्दस्य च पाण्डरः।
श्यामचेलः सितद्वित्रिकेशोऽयं केशवप्रियः॥३६॥

भार्या कुवलयारक्तचेला कुवलयच्छविः।३७(क)

भावानुवाद—सनन्दका दूसरा नाम सुनन्द है। इनकी अङ्गकान्ति पालीपन लिये हुए सफेद रङ्गकी तथा वस्त्र काले रङ्गके हैं। इनके केशोंमें केवल दो या तीन केश ही सफेद हुए हैं। ये केशवके परम प्रिय है। इनकी पत्नीका नाम कुवलया है। जो कुवलय (नीले और हल्के लाल रङ्गके मिश्रण जैसे) वस्त्रको धारण करनेवाली तथा कुवलय अङ्ग-कान्तिवाली है॥३६-३७(क)॥

नन्दनः शितिकण्ठाभश्चण्डातकुसुमाम्बरः॥३७(ख)॥

अपृथग्वसतिः पित्रा तरुणप्रणयी हरौ।
अतुल्यास्य प्रिया विद्युत्कान्तिरभ्रनिभाम्बरा॥३८॥

भावानुवाद—नन्दनकी अङ्गकान्ति मयूरके कण्ठ जैसी तथा वस्त्र चण्डात (करवीर) पुष्पके समान हैं। श्रीनन्दन अपने पिता (श्रीपर्जन्य महाराज) के साथ एकत्र वास करते हैं। श्रीहरिके प्रति इनका कोमल प्रेम हैं। इनकी पत्नीका नाम अतुल्या है। जिनकी अङ्गकान्ति सौदामिनी अर्थात् विद्युत जैसी है तथा वस्त्र मेघकी तरह श्याम रङ्गके हैं॥३७(ख)-३८॥

सानन्दा नन्दिनी चेति पितुरेते सहोदरे।
कल्माषवसने रिक्तदन्ते च फेनरोचिषी॥३९॥

महानीलः सुनीलश्च रमणावेतयोः क्रमात्।४०(क)

भावानुवाद—श्रीकृष्णके पिता व्रजराज नन्दकी सानन्दा और नन्दिनी नामक दो सगी बहनें हैं। ये अनेक प्रकारके रङ्ग-बिरङ्गे वस्त्र धारण करती है। इनकी दन्तपंक्ति रिक्त अर्थात् इनके बहुत-से दाँत नहीं है। इनकी अङ्गकान्ति फेनकी तरह सफेद है। सानन्दाके पतिका नाम महानील और नन्दिनीके पतिका नाम सुनील है। ये दोनों (महानील और सुनील) श्रीकृष्णके फूफा है॥३९-४०(क)॥

पितुराद्यपितृव्यस्य पुत्रौ कण्डवदण्डवौ॥४०(ख)॥

सुबले मुदमाप्तौ यौ ययोश्चारु मुखाम्बुजम्।४१(क)

भावानुवाद—श्रीकृष्णके सबसे बड़े पितृव्य (ताऊ) श्रीउपनन्दके कण्डव और दण्डव नामक दो पुत्र हैं। दोनों सुबलके सङ्गमें बहुत प्रसन्न रहते हैं तथा दोनोंका मनोहर मुख कमलके समान सुन्दर हैं॥४०(ख)-४१(क)॥

राजन्यौ यौ तु दायादौ नाम्ना तौ चाटु-वाटुकौ।
दधिसारा-हविःसारे सधर्मिण्यौ क्रमात्तयोः॥४१(ख)॥

भावानुवाद—श्रीनन्द महाराजके दो चचेरे भाई, जो उनके चाचा राजन्य (श्लोक संख्या २२ द्रष्टव्य) के पुत्र हैं, उनका नाम चाटु और

वाटु है। चाटुकी पत्नीका नाम दधिसारा और वाटुकी पत्नीका नाम हविःसारा है॥४१(ख)॥

मातामहो महोत्साहो स्यादस्य सुमुखाभिधः।
लम्बकम्बुसमश्मश्रुः पक्वजम्बूफलच्छविः॥४२॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके मातामह (नाना) का नाम सुमुख है। ये बहुत उद्यमी तथा उत्साही हैं। इनकी लम्बी दाढ़ी शंखके समान सफेद तथा अङ्गकान्ति पके हए जामुनके फल जैसी है॥४२॥

मातामही तु महिषी दधिपाण्डरकुन्तला।
पाटला पाटलीपुष्पपटलाभा हरित्पटा॥४३॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णकी मातामही (नानी) का नाम पाटला है। ये व्रजकी रानीके रूपमें प्रसिद्ध हैं। इनके केश देखनेमें गायके दूधसे बने दहीकी तरह पीले, अङ्गकान्ति पाटलपुष्पके समान हल्के गुलाबी रङ्गकी तथा वस्त्र हरे रङ्गके हैं॥४३॥

प्रिया सहचरी तस्या मुखरा नाम बल्लवी।
व्रजेश्वर्यै ददौ स्तन्यं सखीस्नेहभरेण या॥४४॥

भावानुवाद—मातामही पाटलाकी मुखरा नामक गोप-जातीय एक प्रिय सखी है। वह पाटलाके प्रति इतनी स्नेहशील है कि कभी-कभी पाटलाके व्यस्त होनेपर (अन्यान्य कार्योंका तो कहना ही क्या?) उनकी पुत्री व्रजेश्वरी श्रीयशोदाको अपना स्तनपान तक भी करा देती है॥४४॥

सुमुखस्यानुजश्चारुमुखोऽञ्जननिभच्छविः।
भार्यास्य कुलटीवर्णा बलाका नाम बल्लवी।४५(क)

भावानुवाद—मातामह (नाना) सुमुखके छोटे भाईका नाम चारुमुख है। इनकी अङ्गकान्ति अञ्जन (काजल) की तरह है। इनकी पत्नी बलाका नामक गोपी है, जिनकी अङ्गकान्ति कुलटी (गहरे नीले रङ्गकी एक प्रकारकी दाल अथवा अञ्जनके) रङ्ग जैसी है॥४५(क)॥

गोलो मातामही भ्राता धूमलो वसनच्छविः ॥४५(ख)॥

हसितो यः स्वसुर्भर्त्रा सुमुखेन क्रुधोद्धुरः।
दुर्वाससमुपास्यैव कुलं लेभे व्रजोज्ज्वलम्॥४६॥

यस्य सा जटिला भार्या ध्वांखवर्णा महोदरी॥४७(क)॥

भावानुवाद—मातामही पाटलाके भाईका नाम गोल है तथा वे धूम्र (ललाई लिये काले) रङ्गके वस्त्र धारण करते हैं। स्वसुर्भर्त्रा अर्थात् बहनके पति सुमुख द्वारा हँसी-मजाक करनेपर ये क्रोधके मारे विक्षिप्त (पागल) हो जाते हैं।

श्रीदुर्वासाकी उपासनाके फलस्वरूप इन्हें व्रजके उज्ज्वल वंशमें जन्म ग्रहण करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

गोलकी पत्नीका नाम जटिला है। वह कौवेके जैसे रङ्गवाली तथा स्थूलोदरी अर्थात् मोटे पेटवाली है॥४५(ख)-४७(क)॥

यशोधर-यशोदेव सुदेवाद्यास्तु मातुलाः॥४७(ख)॥

अतसीपुष्परुचयः पाण्डराम्बर-संबृताः।
येषां धूम्रपटा भार्या कर्कटी-कुसुमत्विषः॥४८॥

रेमा रोमा सुरेमाख्याः पावनस्य पितृव्यजाः।४९(क)

भावानुवाद—यशोधर, यशोदेव और सुदेव आदि श्रीकृष्णके मामा हैं। इन सबकी अङ्गकान्ति अतसी पुष्प (अलसीके फूल) के समान है। ये सब हल्का-सा पीलापन लिये हुए सफेद रङ्गके वस्त्र धारण करते हैं। इन सबकी पत्नियाँ पावन (श्रीविशाखाके पिता) की पितृव्य कन्याएँ (चचेरी बहनें) हैं, जिनके नाम क्रमशः रेमा, रोमा और सुरेमा है। ये सब धूम्र (ललाई लिए काले) रङ्गके वस्त्र पहनती हैं तथा इनकी अङ्गकान्ति कर्कटी (सेमल) पुष्प जैसी है॥४७(ख)-४९(क)॥

यशोदेवी-यशस्विन्यावुभे मातुः सहोदरे॥४९(ख)॥

दधिसारा-हविःसारे इत्यन्ये नामनी तयोः।
ज्येष्ठा श्यामानुजा गौरी हिङ्गुलोपमवाससी॥५०॥

भावानुवाद—यशोदेवी और यशस्विनी श्रीकृष्णकी माता यशोदाकी सगी बहनें हैं।

ये दोनों दधिसारा और हविःसाराके नामसे भी जानी जाती हैं। बड़ी बहन यशोदेवी श्याम वर्ण और छोटी बहन यशस्विनी तप्तकाञ्चनके समान गौर वर्णकी हैं। दोनों ही हिंगुल (सफेद, पीले और लाल) रङ्गके वस्त्र धारण करती हैं॥४९(ख)-५०॥

चाटुवाटुकयोर्भार्ये ते राजन्यतनूजयोः।
पुत्रश्चारुमुखस्यैकः सुचारुनाम-शोभनः॥५१॥

गोलभ्रातुः सुता यस्य भार्या नाम्ना तुलावती।५२(क)

भावानुवाद—दधिसारा और हविःसारा पहले कहे हुए राजन्य (श्लोक संख्या २२ द्रष्टव्य) के पुत्र चाटु और वाटुक (श्लोक संख्या ४१ख द्रष्टव्य) की पत्नियाँ हैं। (सुमुखके भाई) चारुमुखका सुचारु नामक एक सुन्दर पुत्र है।

गोलकी भतीजी तुलावती इन्हीं सुचारुकी पत्नी है॥५१-५२(क)॥

पितामहसमास्तुण्डु-कुटेर-पुरटादयः ॥५२(ख)॥

भावानुवाद—तुण्डु, कुटेर और पुरट आदि श्रीकृष्णके पितामह (श्रीपर्जन्य महाराजके समान आयु और आस-पास रहनेवाले होनेके कारण दादा) के समान हैं॥५२(ख)॥

किलाऽन्तकेल-तीलाट-कृपीट-पुरटादयः ।
गोण्ड-कल्लोट्ट-कारण्ड-तरीषण-वरीषणाः।
वीरारोह-वरारोह-मुख्या मातामहोपमाः॥५३॥

भावानुवाद—किल, अन्तकेल, तीलाट, कृपीट, पुरट, गोण्ड, कल्लोट्ट, कारण्ड, तरीषण, वरीषण, वीरारोह और वरारोह आदि श्रीकृष्णके मातामह (श्रीसुमुखके समान आयु और आस-पास रहनेवाले होनेके कारण नाना) के समान हैं॥५३॥

वृद्धाः पितामहीतुल्याः शिलाभेरी शिखाम्बरा।
भारुणी भङ्गुरा भङ्गी भारशाखा शिखादयः॥५४॥

भावानुवाद—शिलाभेरी, शिखाम्बरा, भारुणी, भङ्गुरा, भङ्गी, भारशाखा और शिखा आदि वृद्धाएँ श्रीकृष्णकी पितामही (दादी) के समान हैं॥५४॥

भारुण्डा जटिला भेला कराला करवालिका।
घर्घरा मुखरा घोरा घण्टा घोणी सुघण्टिका॥५५॥

चक्किणी चोण्डिका चुण्डी डिण्डिमा पुण्डवाणिकाः।
डामणी डामरी डुम्बी डङ्का मातामही-समाः॥५६॥

भावानुवाद—भारुण्डा, जटिला, भेला, कराला, करवालिका, घर्घरा, मुखरा, घोरा, घण्टा, घोणी, सुघण्टिका, चक्किणी, चोण्डिका, चुण्डी, डिण्डिमा, पुण्डवाणिका, डामणी, डामरी, डुम्बी और डङ्का आदि वृद्धाएँ श्रीकृष्णकी मातामही (नानी) के समान हैं॥५५-५६॥

मङ्गलः पिङ्गलः पिङ्गो माठरः पीठ-पट्टिशौ।
शङ्करः सङ्गरो भृङ्गो घृणिघाटिकसारघाः॥५७॥

पटीर-दण्डि-केदाराः सौरभेय-कलाङ्कुराः।
धुरीण-धुर्व-चक्राङ्गा मस्करोत्पल-कम्वलाः॥५८॥

सुपक्ष-सौध-हारीत-हरिकेश-हरादयः ।
उपनन्दादयश्चान्ये सर्वेऽमी जनकोपमाः॥५९॥

भावानुवाद—मङ्गल, पिङ्गल, पिङ्ग, माठर, पीठ, पट्टीश, शङ्कर, सङ्गर, भृङ्ग, घृणि, घाटिक, सारघ, पटीर, दण्डि, केदार, सौरभेय, कलाङ्कुर, धुरीण, धुर्व, चक्राङ्ग, मस्कर, उत्पल, कम्वल, सुपक्ष, सौध, हारीत, हरिकेश, हर और उपनन्द आदि अन्यान्य गोप श्रीकृष्णके पिताके समान हैं॥५७-५९॥

पर्जन्यः सुमुखश्चेमौ मिथः सख्यं परं गतौ।
वाग्बन्धं चक्रतुः प्रीत्या कैशोरे तौ सुहृद्वरौ।
तेन नन्दादि-नामानस्तिष्ठन्त्यन्येऽपि बल्लवाः॥६०॥

भावानुवाद—पर्जन्य (श्रीकृष्णके पितामह) और सुमुख (श्रीकृष्णके मातामह) परस्पर परम मित्र हैं। इन दोनों श्रेष्ठ सुहृदोंने कैशोर

अवस्थामें प्रीतिपूर्वक वाग्बन्ध (वचन) लिया था कि इनके द्वारा अपने पुत्रोंको दिये गये नन्द आदि नाम दूसरे गोपोंके द्वारा अपने पुत्रोंके लिए भी प्रयोग किये जा सकते हैं। इसी कारणसे श्रीवृन्दावनमें नन्द आदि नामके दूसरे गोप भी देखे जाते हैं॥६०॥

तरङ्गाक्षी तरलिका शुभदा मालिकाङ्गदा।
वत्सला कुशला ताली मेदुरा मसृणा कृपा॥६१॥

शङ्किनी बिम्बिनी मित्रा सुभगा भोगिनी प्रभा।
शारिका हिङ्गुला नीति कपिला धमनीधरा॥६२॥

पक्षतिः पाटका पुण्डी सुतुण्डा तुष्टिरञ्जना।
विशाला शल्लकी वेणा वर्त्तिकाद्याः प्रसूपमाः॥६३॥

भावानुवाद—तरङ्गाक्षी, तरलिका, शुभदा, मालिका, अङ्गदा, वत्सला, कुशला, ताली, मेदुरा, मसृणा, कृपा, शङ्किनी, बिम्बिनी, मित्रा, सुभगा, भोगिनी, प्रभा, शारिका, हिङ्गुला, नीति, कपिला, धमनीधरा, पक्षति, पाटका, पुण्डी, सुतुण्डा, तुष्टि, अञ्जना, विशाला, शल्लकी, वेणा और वर्त्तिका आदि गोपाङ्गनाएँ श्रीकृष्णकी माताके समान हैं॥६१-६३॥

अम्बिका च किलिम्बा च धातृके स्तन्यदायिके।
अम्बिकेयं तयोर्मुख्या व्रजेश्वर्याः प्रिया सखी॥६४॥

भावानुवाद—अम्बिका और किलिम्बा दोनों श्रीकृष्णकी धात्री (नर्स) है तथा उन्हें स्तनपान कराती हैं। दोनोंमेंसे अम्बिका बड़ी तथा व्रजेश्वरीकी प्रिय सखी है॥६४॥

महीसुराः

(ब्राह्मण)

महीसुरास्तु द्विविधा गोकुलान्तर्वसन्ति ये।
कुलमाश्रित्य वर्त्तन्ते केचिदन्ये पुरोहिताः॥६५॥

भावानुवाद—गोकुलमें वास करनेवाले ब्राह्मण दो भागोंमें विभक्त हैं। एक तो श्रीकृष्णके पितृकुलके आश्रित हैं और दूसरे पुरोहित श्रेणीमें हैं॥६५॥

वषट्कार–स्वधाकार–प्राघाराधाः कुलद्विजाः।
सामधेनी महाकव्या वेदिकाद्यास्तदङ्गनाः॥६६॥

भावानुवाद—वषट्कार, स्वधाकार और प्राघार आदि पितृकुलके आश्रित ब्राह्मण हैं। इनकी पत्नियोंके नाम क्रमशः सामधेनी, महाकव्या और वेदिका आदि हैं॥६६॥

वेदगर्भो महायज्वा भागुर्याद्याः पुरोधसः।
एतेषां गौतमी शार्वी गार्गीत्याद्या वराः स्त्रियः॥६७॥

भावानुवाद—वेदगर्भ, महायज्वा और भागुरि आदि पुरोहित हैं। इनकी पत्नियोंके नाम क्रमशः गौतमी, शार्वी और गार्गी आदि हैं॥६७॥

कुब्जिका वामनी स्वाहा सुलता शाण्डिली स्वधा।
भार्गवीत्यादयो वृद्धा ब्राह्मण्यो व्रजपूजिताः॥६८॥

भावानुवाद—कुब्जिका, वामनी, स्वाहा, सुलता, शाण्डिली, स्वधा और भार्गवी आदि वृद्धा ब्राह्मणियाँ व्रजमण्डलमें पूजनीय हैं॥६८॥

पौर्णमासी भगवती सर्वसिद्धिविधायिनी।
काषायवसना गौरी काशकेशी दरायता॥६९॥

भावानुवाद—भगवती पौर्णमासी सर्वसिद्धिविधायिनी अर्थात् श्रीकृष्णकी समस्त लीलाओंको बहुत ही निपुणतासे सम्पादित करनेवाली योगमाया हैं। इनके वस्त्र कषाय अर्थात् गेरुएँ (जोगिया) रङ्गके हैं। इनकी अङ्गकान्ति गौरवर्ण तथा केश काश नामक घासके पुष्पके समान सफेद हैं। ये आकारमें कुछ लम्बी हैं॥६९॥

मान्या व्रजेश्वरादीनां सर्वेषां व्रजवासिनां।
देवर्षेः प्रियशिष्येयमुपदेशेन तस्य या॥७०॥

सान्दीपनिं सुतं प्रेष्ठं हित्वावन्तीपुरीमपि।
स्वाभीष्टदैवतप्रेम्ना व्याकुला गोकुलं गता॥७१॥

भावानुवाद—पौर्णमासी व्रजमें नन्द आदि सभी व्रजवासियोंकी पूज्या तथा देवर्षि श्रीनारदकी प्रिय शिष्या हैं। अपने गुरु श्रीनारदके

उपदेशानुसार (श्रीकृष्ण और बलदेवके विद्यागुरु) अपने प्रिय पुत्र श्रीसान्दीपनिको अवन्तिकापुरी (उज्जैन) में छोड़कर अपने अभीष्टदेव श्रीकृष्णके प्रेममें वशीभूत होकर गोकुलमें वास करने लगीं॥७०-७१॥

यूथः

यूथः परिजनानां स्यात् द्विविधानां महोच्चयः।
वयस्यो दासिका दूत्य इत्यसौ त्रिकुलो मतः॥७२॥

भावानुवाद—दो प्रकारके (?) परिजनोंकी महान समष्टिको यूथ कहते हैं। वयस्य, दासी और दूती भेदसे यूथमें तीन प्रकारका कुल हैं॥७२॥

यूथस्यावान्तरा भेदाः कुलं तस्य तु मण्डलं।
मण्डलस्य तथा वर्गो वर्गस्य गण उच्यते॥७३॥

गणस्य समवायः स्यात् समवायस्य सञ्चयः।
सञ्चयस्य समाजः स्यात् समाजस्य समन्वयः।
इति भेदा नव ज्ञेया लघवः क्रमशो बुधैः॥७४॥

भावानुवाद—रसतत्त्व जाननेवालोंने यूथको पुनः नौ प्रकारके विभागोंमें विभाजित किया है। यथा—यूथके छोटे-छोटे विभाग कुल, कुलके छोटे-छोटे विभाग मण्डल, मण्डलके छोटे-छोटे विभाग वर्ग, वर्गके छोटे-छोटे विभाग गण, गणके छोटे-छोटे विभाग समवाय, समवायके छोटे-छोटे विभाग संचय, संचयके छोटे-छोटे विभाग समाज तथा समाजके छोटे-छोटे विभाग समन्वय कहलाते हैं॥७३-७४॥

वयस्यानां (सखीनां) कुलम्

(सखियोंके कुलका वर्णन)

तत्रादौ कुलमालीनां लिख्यते तत् त्रिमण्डलं।
तारतम्यात्तयोः प्रेम्नां कुलस्यास्य त्रिरूपता।
समाजो मण्डलञ्चेति गणश्चेति तदुच्यते॥७५॥

भावानुवाद—सर्वप्रथम सखियोंके त्रिमण्डल रूप (तीन प्रकारके) कुलका वर्णन किया जा रहा है। प्रेमके तारतम्यसे वह कुल—समाज, मण्डल और गणके भेदसे तीन प्रकारका है॥७५॥

कुलके प्रथम प्रकार समाजका वर्णन—

समाजः परमप्रेष्ठसखीनां प्रथमो मतः।
वरिष्ठश्च वरश्चेति स समन्वययुग्मभाक्॥७६॥

भावानुवाद—परमप्रेष्ठ सखियोंकी समष्टिको समाज कहते हैं, यही प्रथम प्रकारका कुल है। यह समाज वरिष्ठ और वर—इन दो समन्वयोंसे युक्त है॥७६॥

(क) वरिष्ठः

वरिष्ठः सर्वतः ख्यातः सदा सचिवतां गतः।
तयोरेवासमोर्ध्वो वा नासौ प्रेम्नः समाश्रयः॥७७॥

भावानुवाद—वरिष्ठ ललनाएँ सबसे अधिक विख्यात तथा सदैव सचिवता प्राप्त करनेवाली अर्थात् श्रीश्रीराधाकृष्णकी अन्तरङ्ग लीलाओंमें सदैव सब प्रकारसे सर्वाधिक सहायता करनेवाली है। जहाँ तक श्रीश्रीराधाकृष्णके प्रति इनके प्रेमकी बात है, न तो कोई इनके समान है और न ही कोई इनसे बढ़कर॥७७॥

प्रपन्नः सर्वसुहृदां परमादरणीयतां।
अपारगुण-रूपादि माधुरीभिश्च भूषितः॥७८॥

भावानुवाद—यह वरिष्ठ ललनाएँ, सभी स्नेहयुक्त हृदयवाली अनुगत सखियोंके लिए परम आदरणीय तथा अपार गुण-रूप आदि माधुरियोंसे विभूषित है॥७८॥

अष्ट सख्यः

ललिता च विशाखा च चित्रा चम्पकवल्लिका।
तुङ्गविद्येन्दुलेखा च रङ्गदेवी सुदेविका॥७९॥

भावानुवाद—ललिता, विशाखा, चित्रा, चम्पकलता, तुङ्गविद्या, इन्दुलेखा, रङ्गदेवी और सुदेवी—ये आठ वरिष्ठ सखियाँ हैं॥७९॥

(१) ललितादेवी

तत्राद्या ललितादेवी स्यादष्टासु वरीयसी।
प्रियसख्या भवेज्ज्येष्ठा सप्तविंशतिवासरैः॥८०॥

भावानुवाद—इन आठ वरिष्ठ सखियोंमेंसे श्रीललितादेवी सबसे श्रेष्ठ हैं। यह अपनी प्रिय सखी श्रीराधासे सत्ताईस दिन बड़ी हैं॥८०॥

अनुराधातया ख्याता वामप्रखरतां गता।
गोरोचना-निभाङ्गी सा शिखिपिच्छनिभाम्बरा॥८१॥

भावानुवाद—श्रीललिता अनुराधाके नामसे विख्यात तथा वामा[१] और प्रखरा[२] नायिकाके गुणोंसे विभूषित हैं। ललिताकी अङ्गकान्ति गोरोचना (दीप्तिमान द्रव्य विशेष) के समान तथा वस्त्र मयूरपंख जैसे हैं॥८१॥

जाता मातरि सारद्यां पितुरेषा विशोकतः।
पतिर्भैरवनामास्याः सखा गोवर्द्धनस्य यः॥८२॥

भावानुवाद—श्रीललिताकी माताका नाम सारदी और पिताका नाम विशोक है। इनके पतिका नाम भैरव है जो गोवर्द्धन गोपके सखा है॥८२॥

(२) विशाखा

विशाखात्र द्वितीया स्यादेकाचारगुणव्रता।
प्रियसख्या जनिर्यत्र तत्रैषाभ्युदिता क्षणे॥८३॥

भावानुवाद—वरिष्ठ सखियोंमें दूसरी विशाखा हैं। ये आचरण, गुण तथा व्रतमें श्रीराधाके समान हैं। जिस समय श्रीराधिकाका जन्म हुआ, ठीक उसी समय विशाखाका भी जन्म हुआ था॥८३॥

---

[१] मान उदय करानेमें व्यस्त, मानकी शिथिलता होनेपर क्रोध करनेवाली, नायक द्वारा अवशीभूता तथा कठोर भाषिणी।

[२] प्रगल्भ वचनों वाली नायिका—जो बातों ही बातोंमें अपना दुःख और क्रोध प्रकट करती हैं।

तारावलिदुकूलेयं　　विद्युन्निभतनुद्युतिः।
पितुः पावनतो जाता मुखरायाः स्वसुः सुतात्॥८४॥

जटिलायाः स्वसुः पुत्र्यां दक्षिणायान्तु मातरि।
भवेद्विवाहकर्त्तास्याः वाहिको नाम बल्लवः॥८५॥

भावानुवाद—विशाखाके वस्त्र तारोंसे घिरे हुए आकाशमण्डलके समान अर्थात् सफेद बूटेदार नीलाम्बरी हैं तथा अङ्गकान्ति सौदामिनीके समान हैं।

श्रीविशाखाके पिताका नाम पावन है, ये पावन मुखराकी बहनके पुत्र हैं। विशाखाकी माताका नाम दक्षिणा है, वह जटिलाकी बहनकी कन्या है, विशाखाके पतिका नाम वाहिक गोप है॥८४-८५॥

(३) चम्पकलता

तृतीया चम्पकलता फुल्लचम्पकदीधितिः।
ऐकनाह्वा कनिष्ठेयं चाष-पक्षनिभाम्बरा॥८६॥

भावानुवाद—वरिष्ठ सखियोंमें तीसरी चम्पकलता हैं। इनकी अङ्गकान्ति खिले हुए चम्पक पुष्पके समान है। ये श्रीराधिकासे एक दिन छोटी हैं तथा इनके वस्त्र चाष (नीलकण्ठ) नामक पक्षीके वर्ण जैसे हैं॥८६॥

पितुरारामतो जाता वाटिकायान्तु मातरि।
वोढ़ा चण्डाक्षनामास्या विशाखा सदृशी गुणैः॥८७॥

भावानुवाद—श्रीचम्पकलताके पिताका नाम आराम तथा माताका नाम वाटिका है। इनके पतिका नाम चण्डाक्ष है। ये गुणोंमें प्रायः विशाखाके समान हैं॥८७॥

(४) चित्रा (सुचित्रा)

चित्रा चतुर्थी काश्मीरगौरी काचनिभाम्बरा।
षड्विंशत्या कनिष्ठाह्नां माधवामोदमेदुरा॥८८॥

भावानुवाद—वरिष्ठ सखियोंमें चौथी चित्रा हैं। इनकी अङ्गकान्ति काश्मीर अर्थात् कुंकुमके समान गौरवर्ण तथा वस्त्र काँचके रङ्ग जैसे

हैं। ये श्रीराधिकासे छब्बीस दिन छोटी हैं। ये श्रीकृष्णके आनन्दमें आनन्दित रहती हैं॥८८॥

चतुराख्यां पितुर्जाता सूर्यमित्रपितृव्यजा।
जनन्यां चर्चिकाख्यायां पतिरस्यास्तु पीठरः॥८९॥

भावानुवाद—श्रीचित्राके पिताका नाम चतुर है, जो सूर्यमित्र (वृषभानु महाराज) के चाचा लगते हैं। इनकी माताका नाम चर्चिका और पतिका नाम पीठर है॥८९॥

(५) तुङ्गविद्या

पञ्चमी तुङ्गविद्या स्याज्ज्यायसी पञ्चभिर्दिनैः।
चन्द्रचन्दनभूयिष्ठा कुङ्कुमद्युतिशालिनी॥९०॥

भावानुवाद—वरिष्ठ सखियोंमें पाँचवीं तुङ्गविद्या हैं। ये श्रीराधिकासे पाँच दिन बड़ी हैं। इनके श्रीअङ्गोंसे चन्द्र चन्दन अर्थात् कर्पूर मिश्रित चन्दनके समान सुगन्ध आती है। इनकी अङ्गकान्ति कुंकुमके समान है॥९०॥

पाण्डुमण्डलवस्त्रेयं दक्षिणप्रखरोदिता।
मेघायां पुष्कराज्जाता पतिरस्यास्तु बालिशः॥९१॥

भावानुवाद—श्रीतुङ्गविद्याके वस्त्र हल्के पीले रङ्गके हैं। ये दक्षिणा[१] और प्रखरा[२] नायिकाके गुणोंसे विभूषित हैं। इनकी माताका नाम मेघा और पिताका नाम पुष्कर तथा पतिका नाम बालिश है॥९१॥

(६) इन्दुलेखा

इन्दुलेखा भवेत् षष्ठी हरितालोज्ज्वलद्युतिः।
दाड़िम्बपुष्पवसना कनिष्ठा वासरैस्त्रिभिः॥९२॥

---

[१] मान सहन करनेमें असमर्थ, नायकके साथ युक्ति-युक्त बात करनेवाली तथा नायकके सान्तवनापूर्ण वाक्योंके वशीभूत होनेवाली।

[२] प्रगल्भ वचनोंवाली नायिका—जो बातों ही बातेंमें अपना दुःख और क्रोध प्रकट करती हैं।

भावानुवाद—वरिष्ठ सखियोंमें छठी इन्दुलेखा हैं। इनकी अङ्गकान्ति हरिताल अर्थात् पीतवर्णके समान उज्ज्वल है। इनके वस्त्र अनारके फूलोंके समान हैं। ये श्रीराधिकासे तीन दिन छोटी हैं॥९२॥

बेला-सागरसंज्ञाभ्यां पितृभ्यां जनिमीयुषी।
वामप्रखरतां याता पतिरस्यास्तु दुर्वलः॥९३॥

भावानुवाद—इन्दुलेखा माताका नाम बेला तथा पिताका नाम सागर है। ये वामा और प्रखरा नायिकाके गुणोंसे विभूषित हैं। इनके पतिका नाम दुर्वल है॥९३॥

(७) रङ्गदेवी

सप्तमी रङ्गदेवीयं पद्मकिञ्जल्ककान्तिभाक्।
जवारागिदुकूलेयं कनिष्ठा सप्तभिर्दिनैः॥९४॥

प्रायेण चम्पकलतासदृशी गुणतो मता।९५(क)

भावानुवाद—वरिष्ठ सखियोंमें सातवीं रङ्गदेवी हैं। इनकी अङ्गकान्ति कमल-केशरके समान तथा वस्त्र जवा पुष्पके समान कुछ लालिमा लिए हुए हैं। ये श्रीराधासे सात दिन छोटी हैं तथा गुणोंमें प्रायः चम्पकलताके समान हैं॥९४-९५(क)॥

करुणा-रङ्गसाराभ्यां पितृभ्यां जनिमीयुषी।
अस्या वक्रेक्षणो भर्त्ता कनीयान् भैरवस्य यः॥९५(ख)॥

भावानुवाद—श्रीरङ्गदेवीके पिताका नाम रङ्गसार तथा माताका नाम करुणा है। इनके पतिका नाम वक्रेक्षण है। जो भैरवके कनिष्ट भ्राता हैं॥९५(ख)॥

(८) सुदेवी

सुदेवी रङ्गदेव्यास्तु यमजा मृदुरष्टमी।

रूपादिभिः स्वसुः साम्यात् तद्भ्रान्तिभरकारिणी।
भ्रात्रा वक्रेक्षणस्येयं परिणीता कनीयसा॥९६॥

भावानुवाद—वरिष्ठ सखियोंमें आठवीं सुदेवी हैं। ये रङ्गदेवीकी यमज अर्थात् जुड़वा बहन और मृदु[१] स्वभावकी हैं। रूप, गुण और स्वभाव आदिमें अपनी बहन रङ्गदेवी जैसी होनेके कारण इन्हें देखकर रङ्गदेवीका भ्रम होता है। रङ्गदेवीके पति वक्रेक्षणके छोटे भाईके साथ इनका विवाह हुआ है॥९६॥

(ख) वरः

एतदष्टक–कल्पाभिरष्टाभिः कथितो वरः।
एता द्वादशवर्षीयाश्चलद्बाल्याः कलावती॥९७॥

शुभाङ्गदा हिरण्याङ्गी रत्नलेखा शिखावती।
कन्दर्पमञ्जरी फुल्लकलिकानङ्गमञ्जरी॥९८॥

भावानुवाद—उपरोक्त आठ वरिष्ठ सखियोंके अतिरिक्त अन्य आठ श्रेष्ठ सखियाँ वर नामसे जानी जाती हैं। ये सब द्वादश वर्षीया हैं और इनकी बाल्यावस्था प्रायः अतीत हो चुकी है। इनके नाम कलावती, शुभाङ्गदा, हिरण्याङ्गी, रत्नलेखा, शिखावती, कन्दर्पमञ्जरी, फुल्लकलिका और अनङ्गमञ्जरी है॥९७–९८॥

(१) कलावती

मातुलो योऽर्कमित्रस्य गोपो नाम्ना कलाङ्कुरः।
कलावती सुता तस्य सिन्धुमत्या मजायत॥९९॥

हरिचन्दनवर्णेयं कीरद्युति–पटावृता।
कपोतः पतिरेतस्य वाहिकस्यानुजस्तु यः॥१००॥

भावानुवाद—इनमेंसे कलावती अर्कमित्रके मामा कलांकुर नामक गोपकी कन्या हैं। इनकी माताका नाम सिन्धुमती है। ये हरिचन्दन जैसी अङ्गकान्तिसे युक्त तथा शुकपक्षीकी अङ्गप्रभाके समान वस्त्र धारण करनेवाली हैं। (विशाखाके पति) वाहिकका अनुज कपोत इनका पति है॥९९–१००॥

---

[१] मधुर वाणी बोलनेवाली नायिका

(२) शुभाङ्गदा

शुभाङ्गदा तड़िद्वर्णा विशाखायाः कनीयसी।
पीठरस्यानुजेनेयं परिणीता पतत्रिणा ॥१०१॥

भावानुवाद—शुभाङ्गदा मङ्गलमय स्वर्णके समान उज्ज्वल अङ्गकान्ति वाली तथा विशाखाकी छोटी बहन हैं। इनका विवाह (चित्राके पति) पीठरके अनुज पतत्रिके साथ हुआ है॥१०१॥

(३) हिरण्याङ्गी

हिरण्याङ्गी हिरण्याभा हरिणीगर्भसम्भवा।
सर्वसौन्दर्यसन्दोह-मन्दिरीभूतविग्रहा ॥१०२॥

भावानुवाद—हिरण्याङ्गी स्वर्ण कान्तिवाली हैं। इनका जन्म हरिणीके गर्भसे हुआ है। (जिसका वर्णन निम्नलिखित श्लोकोंमें किया गया है।) इनके विग्रह (शरीर) की सुन्दरताको देखकर ऐसा लगता है मानो सब प्रकारके सौन्दर्योंका मन्दिर स्वरूप हो॥१०२॥

यज्वा यशस्वी धर्मात्मा गोपो नाम्ना महावसुः।
स मित्रं रविमित्रस्य विचित्रगुणभूषितः ॥१०३॥

भावानुवाद—(हिरण्याक्षीके पिता) महावसु नामक गोप यजनशील (यज्ञ करनेमें रत रहनेवाले) यशस्वी, धर्मात्मा तथा विचित्र गुणोंसे विभूषित तथा रविमित्र (वृषभानु महाराज) के बन्धु हैं॥१०३॥

अभिलष्यन् सुतं वीरं कन्याञ्चातिमनोरमाम्।
इष्टं भागुरिणारेभे नियतात्मा पुरोधसा ॥१०४॥

भावानुवाद—इन्हीं महावसु नामक गोपने एक वीर पुत्र तथा एक सुन्दर कन्याकी अभिलाषासे संयतात्मा पुरोहित भागुरिके द्वारा एक यज्ञ आरम्भ करवाया॥१०४॥

ततः सुधामयः कोऽपि सुचारुश्चरुरुत्थितः।
नन्दितस्तं सुचन्द्रायै सधर्मिण्यै च दत्तवान् ॥१०५॥

भावानुवाद—तदुपरान्त उस यज्ञसे एक अमृतमय सुन्दर चरु (यज्ञीय भक्ष्य द्रव्य विशेष व हवयान्न) प्रकट हुआ। महावसुने आनन्दित होकर उस चरुको अपनी सहधर्मिणी सुचन्द्राको प्रदान किया॥१०५॥

तमश्नन्त्यां चरुं तस्यामलिन्दे सम्भ्रमोज्झितः।
सुरङ्ग्याख्या व्रजचरी कुरङ्गी रङ्गिणी–प्रसूः॥१०६॥

आगत्य तरसा तस्यालोकात् किञ्चिदभक्षयत्।
पशुपाली–हरिण्युभे ततो गर्भमवापतुः॥१०७॥

भावानुवाद—सुचन्द्राने जब इस चरुका भोजन किया, तब शीघ्रताके कारण उसमेंसे थोड़ा-सा हवयान्न आङ्गनमें गिर पड़ा। रङ्गिणीकी माता सुरङ्गी नामक एक हिरणी व्रजमें भ्रमण करती थी, उसने उस अमृतमय चरुको देखा तथा हठात् उसे उठाकर भक्षण कर लिया। चरुका भक्षण करनेसे सुचन्द्रा नामक गोपी तथा सुरङ्गी नामक हिरणी दोनों ही गर्भवती हो गईं॥१०६-१०७॥

सुचन्द्रा सुषुवे पुत्रं स्तोककृष्णं ब्रुवन्ति यम्।
असोष्ट गोष्ठमध्ये सा हिरण्याङ्गीं कुरङ्गिका॥१०८॥

भावानुवाद—इसके उपरान्त यथोचित समयपर सुचन्द्राने जिस पुत्रको जन्म दिया, वह 'स्तोककृष्ण' के नामसे प्रसिद्ध हुआ तथा सुरङ्गी नामक हिरणीने गोष्ठमें जिस कन्याको जन्म दिया, उसका नाम हिरण्याङ्गी है॥१०८॥

या सखी प्रियगान्धर्वा गान्धर्वायाः प्रिया सदा।
फुल्लापराजिता–श्रेणीविराजिपटमण्डिता ॥१०९॥

भावानुवाद—गान्धर्वा श्रीराधा इनकी अत्यन्त प्रिय सखी हैं और ये भी गान्धर्वा श्रीराधाको सर्वदा प्रिय है। ये खिले हुए अपराजित पुष्पोंके समान वस्त्रोंको धारण करती हैं॥१०९॥

एतां दारतयोदारां ददौ वृद्धाय गोदुहे।
जरद्गवाय गर्गस्य गिरां गौरवतः पिता॥११०॥

भावानुवाद—हिरण्याङ्गीके उदार मतिवाले पिताने गर्गमुनिके वचनोंके प्रति सम्मान हेतु जरदगव नामक एक वृद्ध गोपके साथ इनका विवाह करवाया॥११०॥

(४) रत्नलेखा

सुतो मातृष्वसुः सूर्यसाह्वयस्य पयोनिधिः।
तस्य पुत्रवतः पत्नी मित्रा कन्याभिलाषिणी॥१११॥

श्रद्धयाराधयाञ्चक्रे भास्करं सुतवस्करा।
प्रसादेन द्युरत्नस्य रत्नलेखामसूत सा॥११२॥

भावानुवाद—सूर्यसाह्वय अर्थात् वृषभानु महाराजकी मौसीके पुत्रका नाम पयोनिधि है। पुत्रवती होनेपर भी इनकी पत्नी मित्राने कन्या प्राप्तिकी अभिलाषासे श्रद्धापूर्वक सूर्यदेवकी आराधना की। अन्तमें सूर्यदेवकी कृपासे उन्होंने जिस कन्याको प्राप्त किया, उसीका नाम ही रत्नलेखा है॥१११-११२॥

मनःशिलारुचिरसौ रोलम्बरुचिराम्बरा।
वृषभानुसुताप्रेष्ठा भानुशुश्रूषणे रता॥११३॥

व्यूढ़ा बाल्ये कड़ारेण माता यस्य कुठारिका।
घूर्णयन्ती दृशौ घोरे माधवं प्रेक्ष्य तर्ज्जति॥११४॥

भावानुवाद—रत्नलेखाकी अङ्गकान्ति मनःशिला अर्थात् लाल रङ्गके एक खनिज द्रव्यके वर्णके समान तथा वस्त्र भ्रमरके रङ्ग जैसे हैं। ये वृषभानु नन्दिनी श्रीराधाको अत्यन्त प्रिय है तथा एकाग्रचित्तसे सूर्यदेवकी आराधना करती है। कुठारिकाके पुत्र कड़ारके साथ बाल्यकालमें ही इनका विवाह हुआ। ये जब भी माधवको देखती है, तभी अपने नेत्रोंको भयानक रूपसे घुमाते हुए उनकी तर्जना किया करती है॥११३-११४॥

(५) शिखावती

धन्यधन्यादभूत् कन्या सुशिखायां शिखावती।
कर्णिकारद्युतिः कुन्दलतिकायाः कनीयसी॥११५॥

जरत्तित्तिरकिर्मीरपटा मूर्त्तेव माधुरी।
उदूढ़ा गरुडेनेयं गर्जराख्येन गोदुहा ॥११६॥

भावानुवाद—शिखावतीने धन्यधन्य और सुशिखाकी कन्याके रूपमें जन्म ग्रहण किया। इनकी अङ्गकान्ति कर्णिकार (स्वर्णचम्पा) के समान है। ये कुन्दलताकी छोटी बहन हैं तथा वृद्ध तीतर पक्षीके रङ्ग जैसे अनेक रङ्ग-बिरङ्गे वस्त्रोंको धारण करती है। देखनेमें तो ये मधुरताकी साक्षात् मूर्त्ति ही लगती है। इनका विवाह गर्जर नामक गोपसे हुआ जो, गरुड़ नामसे भी जाने जाते हैं॥११५-११६॥

(६) कन्दर्पमञ्जरी

कन्दर्पमञ्जरी नाम जाता पुष्पाकराद् पितुः।
जनन्यां कुरुविन्दायां यस्याः पित्रा हरिं वरम् ॥११७॥

हृदि कृत्य न कुत्रापि विवाहोऽन्यत्र कार्यते।
किङ्किरातोज्ज्वलरुचिर्विचित्रसिचयावृता ॥११८॥

भावानुवाद—कन्दर्पमञ्जरीके पिता पुष्पाकर तथा माता कुरुविन्दा हैं। इनके पिताने अपने हृदयमें श्रीहरिको ही अपना जमाता स्थिरकर अपनी पुत्री कन्दर्पमञ्जरीका विवाह अन्यत्र कहीं नहीं करवाया। ये किङ्किरात (शुक) पक्षीके समान उज्ज्वल कान्तिवाली तथा अनेक रङ्ग-बिरङ्गे बेल-बूटेदार वस्त्रोंको धारण करती हैं॥११७-११८॥

(७) फुल्लकलिका

श्रीमल्लात् फुल्लकलिका कमलिन्यामभूत् पितुः।
सेयमिन्दीवरश्यामा शक्र-चापनिभाम्बरा ॥११९॥

सहजेनान्विता पीततिलकेनालिकस्थले।
विदुरोऽस्याः पतिर्दूरान्महिषीराह्वयत्यसौ ॥१२०॥

भावानुवाद—फुल्लकलिकाके पिताका नाम श्रीमल्ल तथा माताका नाम कमलिनी है। ये नीलकमलके समान श्यामा तथा इन्द्रधनुषके समान मनोहर वस्त्र धारण करनेवाली है। इनके उज्ज्वल ललाटपर स्वाभाविक रूपसे बना हुआ पीले रङ्गका तिलक शोभा पाता है।

इनके पतिका नाम विदुर है, जो दूरसे ही अपनी भैसोंका आह्वान करते हैं॥११९-१२०॥

(८) अनङ्गमञ्जरी

वसन्त-केतकीकान्तिर्मञ्जुलानङ्गमञ्जरी ।
यथार्थाक्षरनामेयमिन्दीवरनिभाम्बरा ॥१२१॥

दुर्मदो मदवानस्याः पतिर्यो देवरः स्वसुः।
प्रियासौ ललितादेव्या विशाखाया विशेषतः॥१२२॥

भावानुवाद—अनङ्गमञ्जरी वसन्तकालीन केतकीकी तरह मनोहर कान्तिवाली तथा नीलकमलके समान वस्त्र धारण करती हैं। जैसा इनका नाम है वैसे ही ये रूप-माधुर्यमें अनङ्ग अर्थात् कामदेवकी भी स्पृहणीया है, अतएव इनका अनङ्गमञ्जरी नाम यथार्थ ही है। इनका पति मदोन्मत दुर्मद नामसे प्रसिद्ध है। जो इनकी बहन श्रीराधाका देवर भी है। अनङ्गमञ्जरी ललितादेवी और विशेष रूपसे विशाखाको अति प्रिय है॥१२१-१२२॥

वयस्यानां सामान्यकर्माणि लिख्यन्ते

(वयस्याओंकी सामान्य क्रियाओंका वर्णन)

वेशः प्रियवयस्याया गुरुपत्यादि-वञ्चनम्।
हरिणा प्रेम-कलहे तस्या एवानुयायिता॥१२३॥

भावानुवाद—प्रिय सखियाँ श्रीराधिकाकी वेश-भूषा अर्थात् वस्त्र और अलङ्कार आदिको तैयार करने तथा पति, सास और ससुर आदि सम्माननीय व्यक्तियोंकी वञ्चना करनेमें बहुत निपुण है। जब कभी श्रीहरि और श्रीराधामें प्रेम-कलह होता है, ये श्रीराधिकाका पक्ष लेती हैं॥१२३॥

अभिसारे सहायत्वमन्नादि-परिवेशनम्।
आस्वादनं सह-क्रीडा रहस्य-परिगोपनम्॥१२४॥

भावानुवाद—ये अभिसार अर्थात् सङ्केत स्थानपर ले जानेमें सहायता करती है। ये श्रीराधा-कृष्णको अन्न आदि भोज्य द्रव्योंका

परिवेशन करती है। ये सभी राधा-कृष्णकी लीलाओंका आस्वादन करती हैं तथा रहस्यपूर्ण विषयोंको गुप्त रखती है॥१२४॥

पवित्रचित्तचातुर्यं परिचर्या यथोचितम्।
उत्कर्षम्लानिकारित्वं स्वपक्षप्रतिपक्षयोः ॥१२५॥

भावानुवाद—अपने पवित्र चित्तकी चतुरता द्वारा युगल-किशोरकी यथोचित्त अर्थात् जिस समय जिस सेवाकी आवश्यकता है, उसी सेवाको करती है। सभी विषयोंमें अपने पक्षका उत्कर्ष और प्रतिपक्षका अपकर्ष प्रदर्शित करती है॥१२५॥

तौर्यत्रिक-कलोल्लासे उभयोः परितोषणम्।
अवकाशोचिताचार-सेवाप्रार्थन-भाषणम् ॥१२६॥

भावानुवाद—नृत्य, गीत और वाद्य यन्त्रोंके द्वारा श्रीराधा-कृष्णको आनन्दित करती है। परिस्थितिके अनुसार उचित व्यवहार, सेवा-प्रार्थना और कथोपकथन करना भलीभाँति जानती है॥१२६॥

इत्यादि सुष्ठु भूयिष्ठं ज्ञेयमासां विचक्षणैः।
सर्वा एवाखिलं कर्म जानन्ति कुर्वतेऽपि च॥१२७॥

भावानुवाद—विचक्षण व्यक्ति स्वयं ही इनके माधुर्य-परिपूर्ण क्रिया-कलापोंको भलीभाँति समझ जायेंगे, अतएव और अधिक कुछ कहनेकी आवश्यकता नहीं है। तब भी, यह कहना अयौक्तिक नहीं होगा कि प्रायः वे सबकुछ जानती है, तथा जिस समय जो करना चाहिये, उसे करती भी है॥१२७॥

तत्र काश्चिन्नियुक्ताः स्युरनियुक्ताश्च काश्चन।
नियुक्ताः सुष्ठु या यत्र लिख्यन्ते ताः क्रमादिमाः॥१२८॥

भावानुवाद—जो सखियाँ उपरोक्त अन्तरङ्ग सेवाओंको साक्षात् रूपमें करती हैं, वे नियुक्ता हैं तथा जो दूरसे उन अन्तरङ्ग सेवाओंकी पुष्टि करती हैं, वे अनियुक्ता हैं। नियुक्तामेंसे जो भलीभाँति जिस-जिस अन्तरङ्ग सेवाको करती हैं, उसे क्रमसे लिखा जा रहा है॥१२८॥

अष्ट सखी चरितम्

(सखियोंके चरित्रका वर्णन)

(यद्यपि इस ग्रन्थमें पहले भी अष्ट सखियोंका वर्णन आया है, तथापि यहाँ यह जान लेना अनिवार्य है कि पहले उनके रूप और कुल इत्यादिका वर्णन किया गया है, किन्तु यहाँपर उनके एवं उनके आनुगत्यमें रहनेवाली सखियोंके द्वारा की जानेवाली सेवाओंका उल्लेख किया जा रहा है।)

(१) ललिता

तथापि परमप्रेष्ठसख्यः श्रेष्ठतयोदिताः।
सर्वत्र ललितादेवी परमाध्यक्षतां गता॥१२९॥

भावानुवाद—तथापि सभी नियुक्ता सखियोंमेंसे परमप्रेष्ठ सखियोंको ही श्रेष्ठ माना जाता है। श्रीललितादेवी इन सभी परमप्रेष्ठ सखियोंकी भी अध्यक्ष हैं॥१२९॥

स्वीकृताखिलभावेयं सन्धिविग्रहिणी मता।
अपराध्यति राधायै माधवे क्वापि दैवतः॥१३०॥

भावानुवाद—श्रीललिता श्रीराधाकृष्णके सभी भावोंको पूर्ण रूपसे जानती हैं। ये मिलन तथा विग्रह अर्थात् प्रेम-कलह कराती है। ये श्रीराधाकी पक्षपाती होनेके कारण कभी दैववशतः माधवके प्रति अपराध भी कर बैठती है॥१३०॥

चण्डिम्ना कुञ्चितमुखी सखीद्युतिभिरावृता।
विग्रहे प्रौढ़िवादे च प्रतिवाक्योपपत्तिषु॥१३१॥

भावानुवाद—विग्रह (प्रेम-कलह), प्रौढ़िवाद (गर्वपूर्ण वचन), प्रत्युत्तर तथा युक्तिके समय ये कभी तो चण्डिम्ना अर्थात् अत्यधिक क्रोधित हो जाती है और कभी श्रीराधाके भावोंमें ही अपने भावोंको मिलानेके कारण कुञ्चितमुखी अर्थात् मुख नीचे कर लेती है तथा सखीद्युतिभिरावृता अर्थात् गोरोचना होनेपर भी अपनी सखी श्रीराधाकी तप्त काञ्चन जैसी द्युतिसे आवृत्त हो जाती है॥१३१॥

प्रतिभामुपलब्धाभिर्धत्ते विग्रहमाग्रहात्।
आयाति सन्धिसमये तटस्थेव स्थिता स्वयम्॥१३२॥

भगवत्यादिभिर्द्वारैर्युक्ता सन्धिं करोत्यसौ।१३३(क)

भावानुवाद—कभी विग्रह (प्रेम-कलह) के समय नवनवोन्मेषशलिनी, प्रत्युत्पन्न मति रूप प्रतिभा प्रदान करके आग्रहपूर्वक श्रीराधाका मान उदित कराती है तथा कभी भगवती पौर्णमासी आदिसे मिलकर पहले तो स्वयं ही कृष्णसे मिलन कराती है और मिलनका समय आनेपर तटस्थ हो जाती है॥१३२-१३३(क)॥

पौष्पाणां मण्डनं छत्रं शयनोत्थानवेश्मनाम्॥१३३ (ख)॥

निर्मिताविन्द्रजाले च प्रहेल्याञ्चातिकोविदा।१३४(क)

भावानुवाद—श्रीललिताजी पुष्पोंके अलङ्कार, छत्र, शय्या और एकान्तमें परस्पर वार्त्तालाप करने हेतु बैठनेयोग्य कक्षका निर्माण करने, इन्द्रजाल (जादूगरी) और प्रेहेलिका आदि बनानेमें बहुत कुशल है॥१३३(ख)-१३४(क)॥

ताम्बूलेऽधिकृता याः स्युरस्यास्तु दासिकाश्च याः॥१३४(ख)॥

मदनोन्मादिनी वाट्यां या किन्नरकिशोरिकाः।
प्रसून-वल्ली-ताम्बूल-वल्ली-पूगद्रुमेषु च॥१३५॥

सख्यश्च वनदेव्यश्च वरा मान्योपजीविनाम्।
याः कन्यकाः स्युः सर्वासु तास्वेवाध्यक्षतां गता॥१३६॥

भावानुवाद—श्रीललिताजी ताम्बुल सेवामें अधिकार प्राप्त करनेवाली दासियों, मदनोन्मादिनी वाटिकामें नियुक्त किन्नर-किशोरियों[१], पुष्प और ताम्बुलकी लताओं तथा सुपारीके वृक्षोंकी रक्षा करनेवाली दासियों, वनदेवियों और माननीय गणोंकी भी मान्य कन्यकाओंकी अध्यक्ष हैं॥१३४(ख)-१३६॥

---

[१] किन्नर क्रीड़ा काम शास्त्रोक्त एक प्रकारकी रति क्रीड़ा है। मनुष्यके जैसे आकार तथा घोड़ेके जैसे मुखवाली देव योनिको किन्नर तथा उनकी युवतियोंको किन्नर किशोरी कहते हैं।

रत्नलेखादयोऽष्टौ याः प्रियसख्योऽनुकीर्त्तिताः।
सर्वत्र ललितादेव्या ज्ञेयाः प्रत्यन्तराः सदा॥१३७॥

भावानुवाद—रत्नलेखा आदि जिन वर नामक आठ प्रियसखियोंके विषयमें पहले वर्णन किया गया है, वे सदा सब प्रकारसे श्रीललितादेवीके अनुकूल आचरण करनेवाली हैं॥१३७॥

रत्नप्रभा–रतिकले तत्राप्यष्टासु विश्रुते।
गुणसौन्दर्यवैदग्धी–माधुरीभिरुपागते ॥१३८॥

भावानुवाद—श्रीललिताके आनुगत्यमें सेवा करनेवाली आठ सखियोंमेंसे रत्नप्रभा और रतिकला बहुत विख्यात है तथा गुण, सौन्दर्य, वैदग्धी (निपुणता) एवं माधुर्य आदिसे युक्त हैं॥१३८॥

पुष्पेषु मण्डनम्

(श्रीललिताकी सेवाके अन्तर्गत पुष्पोंसे बने आभूषणोंका वर्णन)

किरीटं बालपाश्या च कर्णपूरो ललाटिका।
ग्रैवेयकाङ्गदे काञ्चीकटके मणिबन्धनी॥१३९॥

हंसकः कञ्चुलीत्यादि विविधं पुष्पमण्डनम्।
मणिस्वर्णादिक्लृप्तस्य मण्डनस्यात्र यादृशः।
आकारश्च प्रकारश्च कौसुमस्य च तादृशः॥१४०॥

भावानुवाद—किरीट, बालपाश्या, कर्णपूर, ललाटिका, ग्रैवेयक, अङ्गद, काञ्ची, कटक, मणिबन्धनी, हंसक और कञ्चुली इत्यादि पुष्पोंसे बने अनेक प्रकारके आभूषण होते हैं। पुष्पोंसे बने आभूषण आकार-प्रकार आदिमें, मणि और स्वर्ण आदि धातुओंसे बने आभूषणोंसे किसी भी तरह कम नहीं होते॥१३९-१४०॥

(१) किरीटम्

(मुकुट)

रङ्गिणी–हेमयूथीभिर्नवमाली–सुमालिभिः ।
धृति–माणिक्यगोमेदमुक्तेन्दुमणिकान्तिभिः ।
विन्यस्ताभिर्यथाशोभमाभिः सुष्ठु विनिर्मितम्॥१४१॥

भावानुवाद—माणिक्य, गोमेद (लहसनिया), मुक्ता और चन्द्रकान्त मणियोंके समान वर्णवाले रङ्गिनी (नील), स्वर्णयूथी (सोन जूही), नवमालिका (चमेली) और सुमालिका (दुपहरिया) आदि पुष्पोंको निपुणतापूर्वक संयोजित करके इतने सुन्दर ढङ्गसे किरीट बनाया जाता है कि वह देखनेमें उक्त मणियोंकी शोभा जैसी उज्ज्वलताको ही प्रकाशित करता है॥१४१॥

कृतसप्तशिखं हेमकेतकीकोरकच्छदैः।
चित्रकैर्धातुभिश्चित्रैश्चित्तहारि हरेरिदम्॥१४२॥

किरीटं पुष्पपाराख्यं रत्नपारादपि प्रियम्।
गान्धर्वातः कृतिं यस्य ललिता समशिक्षत॥१४३॥

तत्तु पञ्चशिखं पुष्पैः पञ्चवर्णैर्विनिर्मितम्।
कोरकैरपि गान्धर्वाभूषणं मुकुटं भवेत्॥१४४॥

भावानुवाद—यह किरीट सुवर्ण केतकी पुष्पके कोरक (कली), पत्र तथा रङ्ग-बिरङ्गे गैरिक आदि धातुओंसे विरचित, सप्तशिखा विशिष्ट होता है। यह किरीट मस्तकका भूषण है तथा श्रीकृष्णको अत्यधिक प्रिय है। अधिक क्या कहूँ, यह भूषण पुष्प-भूषणोंमें सर्वश्रेष्ठ होनेके कारण पुष्पपार नामसे भी प्रसिद्ध है। यह सर्वश्रेष्ठ रत्नोंसे भी अधिक प्रिय है। इसकी रचना श्रीललिता सखीने गान्धर्वा श्रीमती राधासे भलीभाँति सीखी है। श्रीललितादेवी श्रीमती राधाके लिए भी पाँच रङ्गके पुष्प और कोरकों (कलियों) द्वारा पाँच चूडेवाला किरीट बनाती है॥१४२-१४४॥

(२) बालपाश्या

(बालोंकी चोटीमें धारणकी जानेवाली फूलोंकी लड़ी)

केशबन्धनडोरी च विचित्रैः कोरकादिभिः।
आवलि गुम्फिता गाढं बालपाश्येति कीर्त्तिता॥१४५॥

भावानुवाद—बालपाश अर्थात् केशोंकी शोभा बढ़ानेवाला होनेके कारण इसका नाम बालपाश्या है। बालपाश्या भी मालाकी ही तरह

रङ्ग-बिरङ्गी कलियोंको एकसाथ गूँथकर बनाया जाता है, इसे केश बाँधनेवाली डोरी भी कहते हैं॥१४५॥

(३) कर्णपूरः

(कर्ण-भूषण)

ताटङ्कं कुण्डलं पुष्पी कर्णिका कर्णवेष्टनम्।
इति पञ्चविधः प्रोक्तः कर्णपूरोऽत्र शिल्पिभिः॥१४६॥

भावानुवाद—शिल्पी लोग कर्णपूर (कानके भूषण) को पाँच भागोंमें विभक्त करते हैं। यथा—ताटङ्क, कुण्डल, पुष्पी, कर्णिका और कर्णवेष्टन॥१४६॥

(क) ताटङ्कम्

तालपत्राकृतिर्भूषा ताटङ्कः स द्विधोदितः।
चित्रपुष्पकृतः स्वर्णकेतकीदलजस्तथा॥१४७॥

भावानुवाद—तालपत्रके समान दिखायी देनेवाला आभूषण ताटङ्क दो प्रकारका होता है—(१) रङ्ग-बिरङ्गे पुष्पों द्वारा रचित तथा (२) स्वर्णवर्णके केतकी पुष्पोंकी पंखुड़ियों द्वारा रचित॥१४७॥

(ख) कुण्डलम्

मयूरमकराम्भोज-शशाङ्कार्द्धादिसन्निभम्।
स्वानुरूपैः कृतं पुष्पैः कुण्डलं बहुधोदितम्॥१४८॥

भावानुवाद—मयूर, मगरमच्छ, कमल तथा अर्धचन्द्र आदिके समान दिखायी देनेवाले पुष्पोंसे निर्मित आभूषणोंको कुण्डल कहते हैं। ये बहुत प्रकारके होते हैं॥१४८॥

(ग) पुष्पी

चतुर्वर्णैः क्रमात् पुष्पैश्चक्रवालतया कृतः।
मध्ये पर्याप्तगुञ्जोऽयं स्तवकैः पुष्पिकोच्यते॥१४९॥

भावानुवाद—चार प्रकारके भिन्न-भिन्न रङ्गोवाले पुष्पोंको क्रमपूर्वक चक्रवाल अर्थात् गोलाकारमें गूँथनेसे पुष्पी बनती है। इस कर्ण-भूषणके

मध्यमें यथोचित परिमाणमें गुञ्जा द्वारा बनाया गया स्तवक अर्थात् गुञ्जाका गुच्छा भी लटकता रहता है॥१४९॥

(घ) कर्णिका

राजीवकर्णिकायाश्च पीतपुष्पैर्विनिर्मिता।
भृङ्गिकादाडिमीपुष्पप्रोतमध्यात्र कर्णिका॥१५०॥

भावानुवाद—कमल पुष्पकी कर्णिकाके चारों ओर पीले रङ्गके पुष्पोंको गूँथकर कर्णिका बनायी जाती है। इसके मध्यमें भृङ्गी पुष्प और अनारका पुष्प गूँथा जाता है॥१५०॥

(ङ) कर्णवेष्टनम्

यत्तु कर्णं वेष्टयति वृत्तं तत् कर्णवेष्टनं॥१५१॥

भावानुवाद—जो गोलाकार कुण्डल कानोंको सब ओरसे घेरे रहता है, उसे कर्णवेष्टन कहते हैं॥१५१॥

(४) ललाटिका

(सीमान्त देश अर्थात् माँगसे होते हुए मस्तकपर लटकनेवाला आभूषण)

द्विवर्णपुष्परचिता द्विपार्श्वा शोणमध्यमा।
अलकावलिमूलस्था पुष्पपाटी ललाटिका॥१५२॥

भावानुवाद—ललाटिका दो रङ्गवाले फूलों द्वारा बनती है। इसके दो पार्श्व होते हैं तथा इसका मध्य भाग लाल रङ्गका होता है। यह अलकावलीके अर्थात् ललाटके एकदम ऊपर स्थित केशोंके मूलदेशमें अवस्थित तथा पुष्पोंकी परिपाटीसे युक्त होता है॥१५२॥

(५) ग्रैवेयकम्

(कण्ठभूषण)

वर्त्तुलाश्च चतुर्ग्रीवा कौसुम्यो यत्र कोष्ठिकाः।
तद्वर्णपुष्पकैर्मध्यं ज्ञेयं ग्रैवेयकस्तु तत्॥१५३॥

भावानुवाद—एक ही प्रकारके पुष्पोंसे बने, मध्यमें लता-पताओंसे सुशोभित, गलेमें गोलाकार चार मालाओंकी भाँति दिखायी देनेवाले आभूषणको ग्रैवेयक कहते हैं॥१५३॥

(६) अङ्गदम्

(कोहनीके ऊपर भुजामें पहने जानेवाला बाजुबन्द नामक आभूषण)

क्लृप्तपुष्पलतातन्तु-प्रोतैर्मण्डलतां गतैः।
त्रिवर्णोपर्युपर्युप्तत्रिपुष्पाननमङ्गदम् ॥१५४॥

भावानुवाद—तीन भिन्न-भिन्न रङ्गके पुष्पोंको एकके बाद एक करके, गोलाकार लताके आकारमें गूँथकर जो आभूषण बनाया जाता है, उसे अङ्गद कहते हैं॥१५४॥

(७) काञ्ची

(कटिभूषण)

क्षुद्रझल्लरिसंवीता चित्रगुम्फ-करम्बिता।
पञ्चवर्णैर्विरचिता कुसुमैः काञ्चिरुच्यते॥१५५॥

भावानुवाद—छोटी-छोटी झालरोंसे सुसज्जित, पाँच तरहके रङ्ग-बिरङ्गे पुष्पोंको मिला-जुलाकर बनाये गये अति अद्भुत आभूषणको काञ्ची कहते हैं॥१५५॥

(८) कटकः

(नूपुर व पायल)

कुड्यवृन्तैर्लतातन्तौ प्रोतैरेकैकशस्तु यः।
कल्पितो विविधैः पुष्पैः कटका बहुधोदिताः॥१५६॥

भावानुवाद—अनेक प्रकारके पुष्पोंकी कलियों और वृन्तों (किसी फल या पत्तेके डंठल) को लतासूतोंमें एक-एक करके गूँथनेसे कटक बनता है। कटक बहुत प्रकारके बनाये जा सकते हैं॥१५६॥

(९) मणिबन्धनी

(हाथका कंगन)

चतुर्वर्णप्रसूनाङ्ग गुच्छलम्बित्रिधारिका।
करडोरी कुसुमजा कीर्त्तिता मणिबन्धनी॥१५७॥

भावानुवाद—मणिबन्धनी चार भिन्न-भिन्न रङ्गोंवाले पुष्पोंसे बनायी जाती है, इसमें पुष्पोंसे बनी तीन लड़िया लटकती रहती है। इसको हाथकी डोरी (विवाह सूत्र) भी कहते हैं॥१५७॥

(१०) हंसकः

(चरणोंका आभूषण)

पृथुला च चतुःशृङ्गी पुष्पशृङ्गाट-लम्बिका।
पार्श्वे सौमनसा गुम्फाः स्फुरन्ति हंसको भवेत्॥१५८॥

भावानुवाद—चरणोंके ऊपरी तथा चारों ओरके भागको अच्छी तरहसे ढक लेनेवाला सुन्दर रूपसे गूँथा गया वह आभूषण, जिसमें प्रधान-प्रधान पुष्पोंकी छोटी-छोटी लड़िया लटकती रहती हैं, हंसक कहलाता है॥१५८॥

(११) कञ्चुली

(काँचोली व चोली)

षड्वर्णपुष्पविन्यास-सौष्ठवेनातिचित्रिता ।
कस्तूरीवासिता कण्ठलम्बिगुच्छात्र कञ्चुली॥१५९॥

भावानुवाद—अत्यधिक कौशलके साथ छह रङ्गोके पुष्पोंसे बने हुए, परम अद्भुत शोभासे युक्त, कस्तूरीकी गन्धसे सुवासित तथा पुष्पोंके द्वारा बनायी गयी लड़ियोंसे गलेमें लटकनेवाले पुष्प-निर्मित शृङ्गारको कञ्चुली कहते हैं॥१५९॥

(१२) छत्रम्

(छत्र)

शुक्लैः सूक्ष्मशलाकालिपर्युप्तैः कुसुमैः कृतम्।
स्वर्णयूथीचितच्छत्रदण्डं छत्रमुदीर्यते॥१६०॥

भावानुवाद—लकड़ीकी बनी पतली-पतली सीखोंको सफेद रङ्गके पुष्पोंकी लड़ियों तथा लकड़ीसे बने डण्डे (मुठ) को स्वर्णजूही नामक पुष्पोंसे सजाकर छत्र तैयार किया जाता है॥१६०॥

(१३) शयनम्

(शय्या)

चम्पकाशोक–पर्याप्त मल्लीगुम्फितगेण्डुका।
नवमालीकृता तूली विस्तीर्णा शयनं भवेत्॥१६१॥

भावानुवाद—चम्पक, अशोक और अधिक मात्रामें मल्लिका (चमेली) के पुष्पोंको गूँथकर तकिया तथा नवमल्लिका (कोमल-कोमल चमेली) के पुष्पोंकी लड़ियों द्वारा दीर्घाकार गद्दा बनाया जाता है॥१६१॥

(१४) उल्लोचः

(तिरपाल)

सूचीवापसदृक् चित्रपुष्पविन्यासनिर्मितः।
खण्डितैः केतकीपत्रैः पर्णवान् मल्लिलम्बिभिः॥१६२॥

भावानुवाद—निर्मल जलकी भाँति स्वच्छ और विचित्र मल्लिकाके पुष्पोंकी लड़िया बनाकर उन्हें खण्ड-खण्ड केतकीकी पँखुड़ियोंमें झुलाकर उल्लोच प्रस्तुत किया जाता है। इसकी शोभा बढ़ानेके लिए इसपर और भी अनेक प्रकारके रङ्ग-बिरङ्गे पुष्पों द्वारा सजावटकी जाती है॥१६२॥

(१५) चन्द्रातपः

(चाँदोया)

पार्श्वे च सुफलन्मुक्तासिन्धुवारकलापकम्।
मध्यलम्बिनवाम्भोजश्चन्द्रातप इतीर्यते॥१६३॥

भावानुवाद—जिसके चारों ओर मुक्ताके समान दिखायी देनेवाले सिन्धुवार पुष्पसमूहकी लड़ियाँ दीप्तिमान होती है तथा जिसके मध्यमें नये-नये खिले हुए कमलके पुष्पोंकी लड़ियाँ नीचेकी ओर लटकती रहती हैं, उसे चन्द्रातप कहते हैं॥१६३॥

(१६) वेश्म

(गृह)

शरकाण्डैः कृतस्तम्भं चित्रपुष्पादिसंवृतैः।
पुष्पैः कृतचतुःखण्डि विविधैर्वेश्म भण्यते॥१६४॥

भावानुवाद—विचित्र पुष्पोंसे सुसज्जित शरकण्डेके दण्डसे चार स्तम्भ बनाकर चार कोनोंमें लगानेके उपरान्त अनेक प्रकारके वेश्म तैयार किये जाते हैं, जिन्हें चारों ओरसे विविध प्रकारके पुष्पोंसे सजाया जाता है॥१६४॥

(२) विशाखा

विशाखा नवतो भद्रा प्रियनर्मसखी मता।
अखण्डाऽक्षीणमन्त्रेयं गोविन्दे नर्मकर्मका॥१६५॥

परिज्ञातार्थहृदया बुद्धिदूत्यैककोविदा।
साम्नि कान्दर्पिकोपाये दाने भेदे च पेशला॥१६६॥

भावानुवाद—श्रीविशाखा नवीना (खिले-खिले अङ्गोंवाली), सबसे अधिक मङ्गलस्वरूपिणी, प्रिय नर्मसखी तथा परिपूर्ण स्वभावा (सबकुछ करनेमें समर्थ) हैं। ये अखण्ड एवं अव्यर्थ परामर्श देनेवाली हैं। श्रीगोविन्दके समक्ष परिहासपूर्ण वचनोंको बोलनेमें अत्यधिक समर्थ हैं। श्रीराधाकृष्णके हृदयके भावोंको समझनेमें विशेष सक्षम तथा बुद्धिपूर्वक दूतीका कार्य करनेमें अत्यधिक कुशल हैं। कन्दर्प सम्बन्धी सभी उपायों अर्थात् नायकको किस प्रकार नायिकाके निकट लेकर आना है, इस विषयमें पालनकी जानेवाली सभी नीतियों अर्थात् साम (समझौता-वार्त्ता), दान (नायकको विभिन्न प्रलोभन देना) तथा भेद (फूट डलवाने) आदिको भलीभाँति जानती हैं॥१६५-१६६॥

पत्रभङ्गादिरचने माल्यापीडादिगुम्फने।
विचित्रसर्वतोभद्रमण्डलादि विनिर्मितौ ॥१६७॥

नानाविचित्रसूत्रेण सुचिरप्रक्रियासु च।
सूर्याराधनसामग्रीसाधने च विचक्षणाः॥१६८॥

विचित्रदेशीयगीते सुदक्षा ध्रुपदादिषु।१६९(क)

भावानुवाद—श्रीविशाखा पत्रभङ्ग अर्थात् गैरिक आदि धातुओंसे सौन्दर्य वृद्धिके लिए विभिन्न अङ्गोंपर बेल-बूँटे आदिके आकारकी मनमोहक चित्रकारी करने, माला और आपीड़ (चूड़ेमें लगायी जानेवाली मालाएँ) आदि गूँथने, 'सर्वतोभद्रमण्डल' अर्थात् चित्र-विचित्र

रङ्गों द्वारा द्वार आदि पर बनाये जानेवाले मङ्गलमय मण्डल (रङ्गोली) आदिके निर्माण करने अथवा काव्य-शास्त्रके चित्रकाव्य-प्रकरणमें वर्णित 'सर्वतोभद्रमण्डल' नामक विचित्र काव्य-रचना शैली द्वारा बड़ी बुद्धिमानीपूर्वक विचित्र सूत्रोंके माध्यमसे क्षण-क्षणमें अद्भुत कुशलता प्रदर्शित करते हुए दो अर्थवाली कविताओंके निर्माण करने, शब्दोंके जालमें फसाने आदि जैसे कार्य करने, सूर्य पूजाकी विविध सामग्रियोंको प्रस्तुत करने, विभिन्न देशोंकी भाषाओंके गीत और ध्रुपद आदि गान तथा कविताएँ लिखनेमें सुदक्ष हैं॥१६७-१६९(क)॥

रङ्गावलि प्रभृतयो याः सख्यश्चित्रकोविदाः॥१६९(ख)॥

माधवी-मालती-चन्द्ररेखाद्या आलयस्तथा।
याश्च वस्त्राधिकारिण्यः सख्यो दास्यश्च सम्मताः॥१७०॥

या वन्यदेव्यधिकृताः सर्वानन्दचमत्कृतौ।
याश्च प्रसूनवृक्षेषु सख्योऽधिकृतिमाश्रिताः।
मालिकाद्याश्च यास्तासु सर्वास्वध्यक्षतां गताः॥१७१॥

भावानुवाद—श्रीविशाखा देवी चित्र-विचित्र कथोपकथनमें परम दक्ष रङ्गवलि आदि आठ सखियों, माधवी, मालती और चन्द्ररेखा आदि सखियों, वस्त्र-सेवा अधिकारिणी सखियों और दासियों, सभी प्राणियोंको आनन्द प्रदान करने और आश्चर्यान्वित करनेवाली वनदेवियों, पुष्पोंवाले वृक्षोंमें अधिकार प्राप्त मालिका आदि सखियोंकी अध्यक्ष हैं॥१६९(ख)-१७१॥

(३) चम्पकलता

अभिज्ञा चम्पकलता दूत्यतन्त्र-प्रघट्टके।
निगूढ़ारम्भसम्भारा वाचोयुक्तिविशारदा॥१७२॥

उपायेन पटिम्ना च प्रतिपक्षापकर्षकृत्।१७३(क)

भावानुवाद—चम्पकलता दौत्य-मन्त्रणामें अभिज्ञ हैं। ये अपने द्वारा किये जानेवाले कार्यके उद्देश्यको सदा गोपन रखती हैं तथा युक्तिपूर्ण वचन कहनेमें परम चतुर हैं। कार्यको सिद्ध करने तथा

पटुताके विषयमें प्रतिपक्षवालोंका अपकर्ष दिखलाकर अपने पक्षके उत्कर्षको साधित करनेवाली हैं॥१७२-१७३(क)॥

फल-प्रसून-कन्दानां सन्धानप्रक्रियाविधौ॥१७३ (ख)॥

हस्त-चातुर्यमात्रेण नानामृण्मय-निर्मितौ।
षड्रसानां परीक्षायां सूदशास्त्रे च कोविदा॥१७४॥

सितोत्पलकृतिपटुर्मिष्टहस्तेति विश्रुता।१७५(क)

भावानुवाद—चम्पकलता फल, फूल और कन्द-मूलको इकट्ठा करने तथा उनके व्यवहारके विषयमें विशेष पटु हैं। हाथोंके चातुर्यमात्रसे नाना प्रकारकी मृन्मय (मिट्टी द्वारा बनायी जानेवाली) वस्तुओंकी रचना करनेमें इन्हें सिद्धहस्तता प्राप्त है। ये कड़वा, कषाय, तीखा, खट्टा, मीठा और नमकीन—इन छह प्रकारके रसोंकी परीक्षा करने तथा सूदशास्त्र अर्थात् भोजन बनानेकी विधियोंकी सम्पूर्ण रूपसे जानकारी देनेवाले शास्त्रोंमें पण्डिता हैं तथा मिश्री द्वारा विचित्र आकारके मिष्ठान प्रस्तुत करनेमें इतनी पटु हैं कि ये इसी कारणसे मिष्टहस्ता नामसे जानी जाती है॥१७३(क)-१७५(क)॥

पौरगव्यश्च पचने याः सख्यो दासिकाश्च याः॥१७५(ख)॥

कुरङ्गाक्षीप्रभृतयः सख्यो या अष्टसंख्यकाः।
सकलेषु द्रुमलतागुल्मेष्वधिकृताश्च याः।
सखीप्रभृतयः सर्वाः सम्प्राप्ताध्यक्षतामसौ॥१७६॥

भावानुवाद—श्रीचम्पकलता दूधसे बनी सामग्रियोंको प्रस्तुत करनेवाली सखियों और दासियों, कुरङ्गाक्षी आदि आठ सखियों, व्रजके वृक्ष, लता और गुल्म आदिकी देखभाल करनेवाली गोपियोंकी अध्यक्ष हैं॥१७५(ख)-१७६॥

(४) चित्रा

चित्रा विचित्रचातुर्या सर्वत्रासौ प्रवेशिनी।
यानेऽभिसरणाभिख्ये षड्गुणस्य तृतीयके॥१७७॥

लेखेऽपीङ्गितविज्ञाने नानादेशीयभाषिते।
दृष्टिमात्रात् परिचये मधुक्षीरादिवस्तुनः॥१७८॥

काचभाजननिर्माणे तन्मध्योर्मिविनिर्मितौ।
ज्योतिःशास्त्रे पशुव्रात-विद्यायां कार्मणेऽपि च॥१७९॥

वृक्षोपचार शास्त्रे च विशेषात् पाटवं गता।
रसानां पानकादीनां सुष्ठु-निर्माणकर्मणि॥१८०॥

भावानुवाद—चित्रा अपनी अद्भुत चतुरतासे सभी कार्योंको करनेमें दक्ष हैं। अभिसरणके छह गुणोंमेंसे[1] तीसरे गुण यानमें, लेखन-कार्यमें, इङ्गित विज्ञान अर्थात् सङ्केतके द्वारा अपने मनके भावोंको व्यक्त करनेमें, भिन्न-भिन्न देशोंकी भाषा बोलनेमें, शहद और दूध आदिसे बने पकवानोंके गुणोंको एक ही दृष्टिमें पहचाननेमें, काँचके बर्तन बनानेमें, उनमें जलतरङ्ग जैसे स्वरोंको उत्पन्न करने अर्थात् काँचसे बने हुए सात बर्तनोंमें भिन्न-भिन्न स्तरों तक जल भरकर सा-रे-गा-मा आदि स्वर लहरियोंको उत्पन्न करनेमें, ज्योतिष-शास्त्रमें, पशुओंकी देखभाल अथवा रक्षासे सम्बन्धित विद्यामें, वृक्षोंकी रक्षा और उनकी देखभाल करने सम्बन्धी शास्त्रोंमें परम दक्ष तथा पानक अर्थात् पाना या शरबत आदि पानीय द्रव्योंको प्रस्तुत करनेमें विशेष पटु हैं॥१७७-१८०॥

---

[1] (नायक और नायिकाके प्रेमको नवनवायमान बनाये रखनेके लिए सखियों द्वारा व्यवहार किये जानेवाले नीतिके छह गुण)

सन्धिर्वा विग्रहो यानमासनं द्वैधम्वाश्रयः॥

(१) सन्धि (नायक और नायिकाका मिलन कराना), (२) विग्रह (कारण-अकारण नायक और नायिकामें प्रेम-कलह कराना), (३) यान (नायिकाका पक्ष लेकर नायक अथवा विपक्षपर आक्रमण करना), (४) आसन (दोनों पक्षों अर्थात् नायक और विपक्षकी सखियोंके क्रिया-कलापपर पैंनी दृष्टि रखते समय निश्चेष्ट होकर अवस्थान करना), (५) द्वैध (प्रबल पक्षके समक्ष दुर्बल पक्षवालोंका समर्पण), (६) आश्रय (शत्रु द्वारा उत्पीड़ित होनेपर बलवान् पक्षका आश्रय ग्रहण करना)।

किसी-किसी स्थानपर इन्हें साम, दान, दण्ड, भेद आदिके रूपमें भी वर्णन किया जाता है।

अष्टौ रसालिकाद्याः स्युः याः सख्यः परिकीर्त्तिताः।
याश्च पेयाधिकारिण्यः सख्यो दास्यश्च सम्मताः॥१८१॥

दिव्यौषधीनां प्रायेण हीनानां कुसुमादिभिः।
तथा वनस्थलीनाञ्च विरुधाञ्चाधिकारिताम्।
लब्धाः सख्यादयो याश्च तत्रैषाध्यक्षतां गता॥१८२॥

भावानुवाद—श्रीचित्रा सखी रसालिका आदि नामसे प्रसिद्ध आठ सखियों, पेय-द्रव्य आदि प्रस्तुत करनेवाली सखियों और दासियों, सब समय दिव्य औषधि आदि एकत्रित करनेवाली, पुष्प-रहित वृक्षोंकी रक्षा करनेवाली, वनस्थली तथा विभिन्न लताओंका ध्यान रखनेवाली सखियोंकी अध्यक्ष हैं॥१८१-१८२॥

(५) तुङ्गविद्या

तुङ्गविद्या तु विद्यानामष्टादशतयांशिता।
सन्धावतीव कुशला कृष्णविश्रम्भशालिनी॥१८३॥

भावानुवाद—तुङ्गविद्या अष्टादश विद्याओंमें[1] पारङ्गत है। ये युगल किशोरका मिलन करानेमें विशेष कुशल तथा श्रीकृष्णकी विश्वास पात्री है॥१८३॥

रसशास्त्रे नये नाट्ये नाटकाख्यायिकादिषु।
सर्वगान्धर्वविद्यायामाचार्यकमुपागता ॥१८४॥

विशेषान्मार्गगीतादौ वीणायन्त्रादिपण्डिता।१८५(क)

भावानुवाद—गान्धर्वविद्या (सङ्गीत कला) की आचार्य पदवीपर आरूढ़ तुङ्गविद्या रसशास्त्र, नीतिशास्त्र, नाट्यशास्त्र (नृत्य कला), नाटक और आख्यायिका अर्थात् सुसङ्गत कहानी सुनाने अथवा शिक्षा

---

[1] अष्टादश विद्याएँ—(१) ऋग्वेद, (२) सामवेद, (३) यजुर्वेद, (४) अथर्ववेद, (५) शिक्षा, (६) कल्प, (७) व्याकरण, (८) निरुक्त, (९) ज्योतिष, (१०) धातुगण, (११) वेदान्तदर्शन, (१२) मीमांसादर्शन, (१३) न्यायदर्शन, (१४) वैशेषिकदर्शन, (१५) सांख्यदर्शन, (१६) पातञ्जलदर्शन, (१७) पुराण और (१८) धर्मशास्त्र।

देनेवाली कल्पित कथा कहने और विशेषकर सङ्गीतकी राग-रागिनियोंके गान और वीणायन्त्र आदि बजानेमें परम पण्डिता हैं॥१८४-१८५(क)॥

मञ्जुमेधादयः सख्यो या अष्टौ परिकीर्त्तिताः॥१८५(ख)॥

या दूत्यः कुशलाः सन्धौ षड्‌गुणस्यादिमे गुणे।
सङ्गीतरङ्गशालायां याः सख्योऽधिकृतिं गताः॥१८६॥

मार्दङ्गिक्यः कलावत्यो नर्त्तकी-प्रमुखाश्च याः।
वृन्दावनान्तरस्थेषु जलेष्वधिकृताश्च याः।
सख्यश्च जलदेव्यश्च तत्रैषाध्यक्षतां गता॥१८७॥

भावानुवाद—श्रीतुङ्गविद्यादेवी मञ्जुमेधा आदि आठ प्रसिद्ध सखियों, षड्‌गुणके[१] प्रथम गुण सन्धि करानेवाली सुपटु दूतियों, सङ्गीत और रङ्गशालामें अधिकार प्राप्त करनेवाली गोपियों, मृदङ्गवाद्य, चौसठ कलाओंके प्रदर्शन और नृत्य करनेवाली दक्ष गोपियों तथा वृन्दावनकी विभिन्न धाराओं, झरनों आदिसे जल एकत्रित करनेवाली सखियोंकी अध्यक्ष हैं॥१८५(ख)-१८७॥

(६) इन्दुलेखा

इन्दुलेखा भवेन्मल्ला नागतन्त्रोक्तमन्त्रके।
विज्ञानस्य च मन्त्रेऽपि सामुद्रक-विशेषवित्॥१८८॥

भावानुवाद—इन्दुलेखा नागतन्त्रोक्त सभी मन्त्रोंको भलीभाँति जानती है। केवल यही नहीं, उन मन्त्रोंको व्यवहार करनेमें भी परम निपुण तथा विशेष करके सामुद्रिक शास्त्र (हस्तरेखाओंको देखकर शुभाशुभ फल कहनेकी विद्या) को सम्पूर्ण रूपसे जाननेवाली है॥१८८॥

हारादिगुम्फने चित्रे दन्तरञ्जनकर्मणि।
सर्वरत्नपरीक्षायां पट्टडोरादिगुम्फने॥१८९॥

लेखे सौभाग्यमन्त्रस्य कौशलं यद्भुजे धृतम्।
अन्योन्यरागमुत्पाद्य सौभाग्यं जनयेद्वरम्॥१९०॥

---

[१] श्लोक संख्या १७७ द्रष्टव्य

भावानुवाद—इन्दुलेखा विचित्र हार आदि बनाती है, दन्त रञ्जन कार्य करती है। सब प्रकारके रत्नोंकी परीक्षा करने, पट्ट डोर आदि गूँथने तथा सौभाग्य उदित करानेवाले मन्त्रोंके यन्त्र (जंतर अथवा गंडा) बनानेकी कुशलता भी इनके करतलगत है। ये श्रीराधा और श्रीकृष्णमें एक-दूसरेके प्रति अनुराग उत्पन्न कराकर परमोत्कृष्ट सौभाग्यका विस्तार कराती है॥१८९-१९०॥

तुङ्गभद्रादयस्त्वस्याः सख्यः स्युः प्रत्यनन्तराः।
यास्तु साधारणा दूत्यो द्वयोः पालिन्धिकादयः॥१९१॥

तासां रहस्यवार्त्तानामियं भाजनतां गता।
अलङ्कारेषु वेशेषु कोषरक्षाविधौ च या॥१९२॥

सख्यो दास्येऽप्यधिकृता याश्च वृन्दावनान्तरे।
स्थलेष्वधिकृता याश्च तास्वध्यक्षतया स्थिता॥१९३॥

भावानुवाद—इन्दुलेखा तुङ्गभद्रा आदि अनुगत सखियों, संदेशको लाने-ले जानेवाली श्रीराधाकृष्णकी पालिन्धिका आदि कुछेक साधारण दूतियों, रहस्यपूर्ण वार्त्ताओंको जाननेवाली गोपियों, अलङ्कार, वेशरचना और कोषरक्षामें नियुक्त सखियों तथा वृन्दावनके विभिन्न रमणीय स्थानोंका अधिकार प्राप्त करनेवाली सखियोंकी अध्यक्ष हैं॥१९१-१९३॥

(७) रङ्गदेवी

रङ्गदेवी सदोत्तुङ्गा हावेङ्गित-तरङ्गिणी।
कृष्णाग्रेऽपि प्रियसखी-नर्मकौतूहलोत्सुका॥१९४॥

भावानुवाद—रङ्गदेवी सदैव उत्तुङ्गा अर्थात् गौरवमें उन्मत्त होकर हाव, भाव और इङ्गितकी तरङ्गिणी रूपिणी है। ये सङ्केत वाक्योंके नाना रूपों (तरङ्गों) को छलपूर्वक प्रस्तुत करनेवाली हैं। अधिक क्या, ये श्रीकृष्णके समक्ष ही श्रीराधाके साथ हास-परिहास तथा नर्म-कौतूहल करनेमें उत्सुकता प्रकाशित करती हैं॥१९४॥

षाड्गुण्यस्य गुणे तुर्ये युक्तिवैशिष्ट्यमाश्रिता।
कृष्णस्याकर्षणं मन्त्रं तपसा पूर्वमीयूषी॥१९५॥

भावानुवाद—छह गुणोंमेंसे[१] चतुर्थ गुण आसनमें तथा वैशिष्ट्यपूर्ण युक्तियोंको व्यक्त करनेवाली हैं। इन्होंने अपनी तपस्या द्वारा श्रीकृष्णको आकर्षित करनेवाला मन्त्र प्राप्त किया है॥१९५॥

विचित्रेष्वङ्गरागेषु गन्धयुक्तविधौ च याः।
कलकण्ठी-प्रभृतयः सख्योऽष्टौ याः प्रकीर्त्तिताः॥१९६॥

सख्यो दास्येऽप्यधिकृता याश्च धूपन-कर्मणि।
शिशिरेऽङ्गारधारिण्यस्तपर्त्तावपि वीजने॥१९७॥

आरण्यकेषु पशुषु केशरिषु मृगादिषु।
सखी-प्रभृतयो याश्च तत्रैषाध्यक्षतां गता॥१९८॥

भावानुवाद—रङ्गदेवी बेल-बूँटेदार अङ्गराग तथा गन्धयुक्त वस्तुओंको लगाने जैसे दायित्वपूर्ण सेवाको प्राप्त करनेवाली कलकण्ठी आदि अष्ट सखियों, धूपदान, शीतकालमें अग्नि प्रज्वलन, ग्रीष्मकालमें चामर व्यजन तथा जङ्गलमें विचरण करनेवाले सिंह और मृग आदि पशुओंपर नजर रखने जैसे सेवा-कार्योंमें व्यस्त सखियों और दासियोंकी अध्यक्ष हैं॥१९६-१९८॥

(८) सुदेवी

सुदेवी केशसंस्कारं प्रियसख्यास्तथाञ्जनम्।
अङ्गसम्वाहनं चास्याः कुर्वती पार्श्वगा सदा॥१९९॥

भावानुवाद—सुदेवी सखी निरन्तर अपनी प्रिय सखी श्रीराधाके निकट रहती हैं तथा उनके (राधाके) केश संस्कार, नेत्रोंमें अञ्जन प्रदान तथा अङ्ग-संवाहन आदि जैसी सेवाएँ करती हैं॥१९९॥

शारिका-शुकशिक्षायां नौका कुक्कुटखेलने।
भूरि-शाकुनशास्त्रे च पक्ष्यादिरुतबोधने॥२००॥

चन्द्रोदयार्द्रपुष्पादि वन्हिविद्याविधावपि।
उद्वर्त्तनविशेषे च सुष्ठु कौशलमागता॥२०१॥

---

[१] श्लोक संख्या १७७ द्रष्टव्य

भावानुवाद—सुदेवी सखी शुक-सारी (तोता-मैना) को श्रीराधाकृष्णके गुणोंका गान करनेकी शिक्षा प्रदान करने, नौकाके खेल अर्थात् नौकाको गहरे पानीमें ले जानेमें सुदक्ष व्यक्तियों अथवा तेजीसे नौका चलानेवाले व्यक्तियोंके साथ प्रतिस्पर्धा इत्यादि करने, मुर्गोंके खेलकी व्यवस्था करने, शकुन शास्त्र अर्थात् ज्योतिष शास्त्रके अर्न्तगत शुभ और अशुभ चिह्नोंकी पद्धतिको जानने, पशु और पक्षियोंकी भाषा समझने, चन्द्रोदयके समय खिलनेवाले पुष्पोंको पहचानने, अग्निविद्या अर्थात् सभी अवस्थाओंमें अग्निको प्रज्जवलित रखने, आतिशबाजी तथा रोशनी इत्यादिकी व्यवस्था तथा तेल-मर्द्दन (मालिश) करनेमें बहुत कुशल हैं॥२००-२०१॥

गण्डूषक्षेपपात्रेषु गेण्डुके शयनेऽपि च।
याः कावेरीमुखाः सख्यस्ता अस्याः प्रत्यनन्तराः॥२०२॥

भावानुवाद—सुदेवी अपनी अनुगत कावेरीमुखा आदि सखियोंको गण्डूष अर्थात् कुल्ला आदि करनेके लिए पत्तों द्वारा बनाये जानेवाले पीकदान और पुष्पों द्वारा बनाये जानेवाले तकिये तथा गद्दोंको प्रस्तुत करनेकी शिक्षा प्रदान करती हैं॥२०२॥

आसनस्याधिकारे याः सख्यो दास्यश्च सम्मताः।
प्रतिपक्षादिभावानां या ज्ञानाय चरन्ति च॥२०३॥

धूर्ताः प्रनिधिरुपेण नानावेशधराः स्त्रियः।
याश्च पक्षिषु वन्येषु छेकेष्वधिकृतास्तथा।
सख्यश्च वनदेव्यश्च तत्रैषाध्यक्षतां गता॥२०४॥

भावानुवाद—सुदेवी राधाकृष्णके बैठनेके लिए सिंहासन आदि प्रस्तुत करनेके लिए नियुक्त की गयी, विपक्षकी गोपियोंके भावोंको जाननेके लिए विचरण करनेवाली, आवश्यकता अनुसार धूर्त्तता और अनेक प्रकारके वेश धारण करनेवाली, वन्यपक्षियों (शुक, कोकिल आदि) की रक्षा करनेवाली तथा 'छेक' नामक अनुप्रास काव्यमें नियुक्त रहनेवाली सखियों, दासियों और वनदेवियोंकी अध्यक्ष हैं॥२०३-२०४॥

सखीनां विभिन्नभावाः

(सखियोंके विभिन्न भाव)

अथ शिल्प-नियोगादेर्विवृतिः क्रियतेऽधुना।२०५(क)

भावानुवाद—अब सखियोंकी शिल्प कला आदि जैसी विभिन्न योग्यताओंका विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है॥२०५(क)॥

विग्रहे ग्रहिलाः सख्यः पिण्डके निर्वितण्डिका॥२०५(ख)॥

पुण्डरीका सिताखण्डी चारुचण्डी सुदन्तिका।
अकुण्ठिता कलाकण्ठी रामची मेचिकादयः॥२०६॥

भावानुवाद—पिण्डका, निर्वितण्डिका, पुण्डरीका, सिताखण्डी, चारुचण्डी, सुदन्तिका, अकुण्ठिता, कलाकण्ठी, रामची और मेचिका आदि सखियाँ विग्रह (प्रेम-कलह) करानेमें हठ करनेवाली हैं॥२०५(ख)-२०६॥

पिण्डका

ताम्रांशुकापि कान्तभा पिण्डके निश्चितागमम्।
श्लिष्टैर्वचनशौटीर्यैर्विलज्जयति माधवम्॥२०७॥

भावानुवाद—इन सभी सखियोंमें मनोहर अङ्गकान्तिवाली पिण्डका ताम्र वर्णके वस्त्र धारण करती हैं तथा निश्चिन्त हृदयसे श्लिष्ट (दो अर्थवाले) वचनोंके द्वारा माधवको लज्जित करती हैं॥२०७॥

वितण्डिका

हरिद्राभा हरिच्चेला हरिमित्राणि या गिरा।
वितण्डिका वितण्डाभिर्निग्रहैः स्थानमानयेत्॥२०८॥

भावानुवाद—वितण्डिकाकी अङ्गकान्ति हरियाली लिये पीले (अङ्कूर अथवा तोते जैसे) रङ्गकी है तथा वे उसी रङ्गके ही वस्त्रोंको धारण करती है। ये वाणीसे हरिमित्रा अर्थात् वचनोंसे श्रीकृष्णके निकट मित्र जैसा आचरण करती है तथा श्रीकृष्णके प्रतिपक्षवाली सखियोंको वितण्डा (अपने पक्षकी स्थापनायुक्त) वचनोंसे रोककर श्रीराधा और उनकी सखियोंको श्रीकृष्णके निकट लाती हैं॥२०८॥

पुण्डरीका

पुण्डरीका पटं धृत्वा पुण्डरीकाजिनच्छविः।
पुण्डरीकाङ्गभा तर्ज्जेत् पुण्डरीकाक्षमागसि॥२०९॥

भावानुवाद—पुण्डरीका सखीके वस्त्र तथा अङ्गकान्ति पुण्डरीक अर्थात् श्वेत-पद्मके समान शुभ्र हैं। पुण्डरीका अपराधकारी पुण्डरीकाक्ष श्रीहरिका पटाञ्चल धारणकर तर्जन-गर्जन करती हैं॥२०९॥

सिताखण्डी

शिखण्डिनीत्विषा गौरीनाम्ना सिताम्बरा सदा।
वक्ति काठिन्यमाधुर्यात् सिताखण्डीति या हरेः॥२१०॥

भावानुवाद—गौरी नामक सखीकी अङ्गकान्ति मोरनीके समान है। ये सदा सफेद वस्त्र धारण करती हैं। ये काठिन्य माधुर्यात् अर्थात् ऊपरसे कठोर किन्तु मधुरभावयुक्त वचन व्यवहार करती हैं। इसलिए श्रीकृष्ण इन्हें सिताखण्डी कहकर पुकारते हैं।

सिता शब्दसे मिश्रीका बोध होता है, वह स्वतः ही कठोर और तीक्ष्ण होती है। कहनेका तात्पर्य यह है कि मिश्री जिस प्रकार आपाततः मुखमें कठोर बोध होनेपर भी गलस्थ और उदरस्थ होकर, माधुर्य और पित्त-नाश आदि गुणोंको प्रकाशित करती है, उसी प्रकार यह गौरी नामक सखी भी बाहरसे कठोर वचन बोलनेवाली प्रतीत होनेपर भी हृदयसे मधुर होनेके कारण सिताखण्डी नामसे विख्यात है॥२१०॥

चारुचण्डी

चारुचण्डी भगिन्यस्याः भृङ्गश्यामा तड़ित्पटा।
चारुचण्डतया वाचां चारुचण्डीति भण्यते॥२११॥

भावानुवाद—सिताखण्डीकी बहनका नाम चारुचण्डी है। इनकी अङ्गकान्ति भ्रमरके समान श्याम तथा वस्त्र विद्युतके समान सुनहरी हैं। ये चारुचण्डतया अर्थात् ऊपरसे मनको मोह लेनेवाले किन्तु वास्तवमें असहनीय वचनोंका व्यवहार करनेके कारण चारुचण्डी नामसे विख्यात हैं॥२११॥

सुदण्डिका

सुदण्डिका शिरीषाभा कुरुण्टकनिभाम्बरा।
करोत्युज्ज्वलमप्येषा पाटवैरसमुज्जवलम् ॥२१२ ॥

भावानुवाद—सुदण्डिका सखीकी अङ्गकान्ति शिरीष (सिरिस वृक्षके) पुष्पके समान तथा वस्त्र कुरण्टक पुष्पकी भाँति पीतवर्णके हैं। ये अपने तीक्ष्ण वचनोंके द्वारा उज्ज्वल रसकी मधुरताका विस्तार करती हैं॥२१२॥

अकुण्ठिता

अकुण्ठिताब्जकाण्डाभा विषकाण्डसिताम्बरा।
आगः कृष्णस्य या वष्टि स्वसमाज–समृद्धये ॥२१३ ॥

भावानुवाद—अकुण्ठिता सखीकी अङ्गकान्ति पद्मनाल अर्थात् कमलकी डंडी जैसी तथा वस्त्र कमलकी तन्तुमय जड़ जैसे सफेद हैं। ये स्वपक्षकी समृद्धि अर्थात् अपने पक्षकी गोपियोंके आनन्दको वर्धित करनेके लिए श्रीकृष्णके अपराधको व्यक्त करती हैं॥२१३॥

कलाकण्ठी

कलाकण्ठी कुलीपुष्पवर्णक्षीरोदकाम्बरा।
वष्टि गान्धर्विकामानं या हरेश्चाटुकाङ्क्षया ॥२१४ ॥

भावानुवाद—कलाकण्ठी सखीकी अङ्गकान्ति कुलीपुष्पके समान है। इनके वस्त्र दूध और जलके मिश्रणसे बने हुए रङ्गके समान श्वेतवर्णके हैं। ये श्रीहरिके समक्ष श्रीराधाके मानको प्रकाशित करती हैं तथा उन्हें परामर्श देती हैं कि वे श्रीराधाके निकट जाकर क्षमा–प्रार्थना करें॥२१४॥

रामची

रामची ललिता–धात्र्याः पुत्री गौरशुकांशुका।
यया हरिर्दुर्वचोभिरुद्धवे परिहस्यते ॥२१५ ॥

भावानुवाद—रामची श्रीललिताकी धात्रीकी पुत्री हैं। इनकी अङ्गकान्ति गौर वर्णकी है। ये शुककान्तिवाले वस्त्र धारण करती है। ये अपने

परिहासमय दुर्वाक्यों द्वारा श्रीकृष्णका अपमान करके परम आनन्दित होती है॥२१५॥

मेचका

पिण्डपुष्परुचिः पाण्डुदुकूला मेचका सदा।
कृष्णस्य कुरुते व्यक्तमागस्तस्येव या गिरा॥२१६॥

भावानुवाद—मेचका पिण्डपुष्प जैसी अङ्गकान्तिवाली है तथा सदैव पीले वस्त्र धारण करती है। यह श्रीकृष्णका उनके ही वचनोंसे अपराध व्यक्त कराती है॥२१६॥

दूत्यः

(दूती अर्थात् संवाद पहुँचानेवाली)

वृन्दा वृन्दारिका मेला मुरल्याद्यास्तु दूतिकाः।
कुञ्जादिसंस्कृताभिज्ञा वृक्षायुर्वेदकोविदाः॥२१७॥

वशीकृतस्थानवरा द्वयोः स्नेहेन निर्भराः।
गौराङ्ग्यश्चित्रवसना वृन्दा तासु वरीयसी॥२१८॥

भावानुवाद—वृन्दा, वृन्दारिका, मेला तथा मुरली आदि गोपियाँ दूती कहलाती हैं। ये सभी राधाकृष्णका मिलन कराने हेतु सुन्दर रूपमें बनाये गये कुञ्ज आदिको सजानेमें परम अभिज्ञा तथा जड़ी-बूटीको पहचाननेवाली आयुर्वेदकी परम पण्डिता हैं।

दूतियाँ सभी श्रेष्ठ स्थानोंको अपने अधिकारमें रखती हैं। ये सभी श्रीराधागोविन्दके स्नेहसे परिपूर्ण, गौरकान्ति तथा रङ्ग-बिरङ्गे वस्त्र धारण करनेवाली हैं, इन सबमें वृन्दा ही सर्वश्रेष्ठ है॥२१७-२१८॥

अथ विग्रह दूत्यः

(श्रीराधाकृष्णमें प्रेम-कलह करानेवाली दूतियाँ)

साग्रहा विग्रहादौ स्युर्दूत्यः स्खलितयौवनाः।
पेटरी वारुडी चारी कोटरा कालटिप्पनी॥२१९॥

मरुण्डा मोरटा चूड़ा चुण्डरी गोण्डिकादयः।
पिण्डकेलि-पुरोगाना एताः स्युर्वनगाः सदा॥२२०॥

भावानुवाद—पेटरी, वारुड़ी, चारी, कोटरा, कालटिप्पनी, मरुण्डा, मोरटा, चूड़ा, चुण्डरी, गोण्डिका, पिण्डकेलि आदि दूतियाँ विग्रह (प्रेम-कलह) आदि कार्योंमें आग्रह रखनेवाली हैं। इन सबका यौवन स्खलित अर्थात् गतप्राय हो चुका है तथा ये सब समय अपनी प्रधान सखियोंके अनुगत होकर वनमें विचरण करती हैं॥२१९-२२०॥

पेटरी

विषकाण्डोपमजटा पेटरी वृद्धगुर्जरी।

वारुड़ि

वारुड़िर्गारुड़ी वेणीसदृक् चिकुरवेणिका॥२२१॥

भावानुवाद—पेटरी वृद्ध गूजरी है। इनकी जटा कमलकी तन्तुमय जड़के समान सफेद रङ्गकी है। वारुड़िकी अङ्गकान्ति मरकत मणि (पन्ने) के समान है। इनके वेणीबद्ध केश नदी जलके प्रवाहके समान प्रतीत होते हैं॥२२१॥

चारी

कुचारीभगिनी चारी तपःकात्यायनी स्मृता।

कोटरी

आभीरी कोटरी जात्या तिलतण्डुलकेशभाक्॥२२२॥

भावानुवाद—चारी कुचारीकी बहन है। इनको तपःकात्यायनी भी कहते हैं। कोटरी जातिसे आभीर है तथा इनके केश तिलतण्डुलके समान हैं अर्थात् कुछ बाल तो पके हुए (सफेद) तथा कुछ अपक्व (काले) हैं॥२२२॥

कलिटिप्पनी

पलिता पाण्डुचिकुरा रजकी कालटिप्पनी।

मरुण्डा

मरुण्डा मुण्डितशिराः पाण्डुरभ्रूकुलालिका ॥२२३॥

भावानुवाद—कलिटिप्पनी जातिसे रजकी अर्थात् धोबिन है। इनके केश बुढ़ापेके कारण सफेद और पीले हैं। मरुण्डाके सिरपर केश नहीं हैं, तथा दोनों भ्रूओंके लोम पीले रङ्गके हैं॥२२३॥

मोरटा

जवना मोरटा काशकुसुमोपममूर्द्धजा।

चूड़ा

चूड़ावलिदिग्धमुखा ललाटे पलितोज्ज्वला ॥२२४॥

भावानुवाद—मोरटा जवना अर्थात् बड़ी तेजीसे चलने-फिरनेमें समर्थ हैं। इनके केश काश नामक घासके पुष्पके समान उज्ज्वल हैं। चूड़ावलि (चूड़ा नामक दूती) का मुख बुढ़ापेकी झुरियोंके कारण सिकड़े हुए चर्मसे आवृत्त है। इनका ललाट सफेद केशों द्वारा उज्ज्वल है॥२२४॥

चुण्डरी

चुण्डरी पुण्डरीकाक्षतताार्द्धजरती द्विजा।

गोण्डिका

गोण्डिकेयं जरद्गोण्डी मुण्डपाण्डुशिखोज्ज्वला ॥२२५॥

भावानुवाद—चुण्डरी अर्द्धवृद्धा ब्राह्मणी हैं, पुण्डरीकाक्ष श्रीकृष्ण इनका गुणगान करते हैं। गोण्डिका निम्न जातिकी अधिक आयुवाली बूढ़ी है तथा इनका मस्तक पीले रङ्गके केशोंसे उज्ज्वल है॥२२५॥

सन्धिदूत्यः

(मिलन करानेवाली दूतियाँ)

चातुर्यसन्धिकुशलाः शिवदा सौम्यदर्शना।
सुप्रसादा सदाशान्ता शान्तिदा कान्तिदादयः ॥२२६॥

सर्वथा ललितादेवी जीविताद्वस्तुतस्त्वमाः।
माधवस्य परीवारे तस्याप्ता इति मन्यते॥२२७॥

भावानुवाद—शिवदा, सौम्यदर्शना, सुप्रसादा, सदाशान्ता, शान्तिदा तथा कान्तिदा आदि मिलन करानेवाली दूतियाँ हैं। ये सभी चतुरता पूर्वक सन्धि करानेमें बहुत कुशल तथा श्रीललितादेवीके प्राणस्वरूप होनेके कारण माधवके परिवारमें इनकी गिनती विशेष विश्वास-पात्रके रूपमें की जाती हैं॥२२६-२२७॥

गान्धर्वायां प्रपन्नायां कलहान्तरितां दशाम्।
ललितेङ्गितमासाद्य हरेर्गणतया स्थिता॥२२८॥

भावानुवाद—श्रीराधा जिस समय कलहान्तरिता[१] दशामें रहती हैं, उस समय श्रीललिताके इङ्गितसे सन्धि-दूतियाँ श्रीकृष्णके गणमें अवस्थान करने लगती हैं।॥२२८॥

स्वीयेति धिया तेन निसृष्टाः पृथुयत्नतः।
कृतितुष्टा निजाभीष्टं सन्धिमेव सुमन्त्रिताः॥२२९॥

भावानुवाद—अपनी बुद्धिसे दूतीकार्य रूपी दायित्वको बहुत यत्नपूर्वक करती हैं। अपने सुन्दर परामर्श द्वारा श्रीकृष्णको प्रसन्न करके अपने अभीष्ट अर्थात् युगल-किशोरका मिलन करवाती हैं॥२२९॥

विधाय सुष्ठु गोविन्दाद्विन्दन्त्यः पारितोषिकम्।
यान्तिवृन्दावनेश्वर्याः प्रसादभरपात्रताम्॥२३०॥

भावानुवाद—इस प्रकार सुष्ठु मिलन कराके श्रीकृष्णसे पारितोषिक प्राप्त करती हैं तथा वृन्दावनेश्वरी श्रीराधाकी पूर्ण कृपा प्राप्त करनेयोग्य बन जाती है॥२३०॥

राघवी शिवदा सौम्यदर्शना सोमवंशजा।
पौरवी सुप्रसादेयं सदाशान्ता तपस्विनी॥२३१॥

---

[१] सखियोंके सामने अपने पैरोंपर पड़ते हुए प्राणवल्लभको देखकर भी जो नायिका उन्हें बुरा-भला कहती हैं तथा निषेध करती हैं, उसे कलहान्तरिता नायिका कहते हैं।

शान्तिदाकान्तिदे चेति भूमिदेव–कुलोद्भवे।
प्रसादादेव देवर्षेरेता वासं व्रजे ययुः॥२३२॥

भावानुवाद—उल्लिखित दूतियोंमें शिवदा दूती राघवी अर्थात् रघुवंशमें उत्पन्न तथा सौम्यदर्शना दूती चन्द्रवंशकी हैं। सुप्रसादा पुरुवंशमें उत्पन्न तथा सदाशान्ता तापस कन्या अर्थात् तपस्विनी है। शान्तिदा एवं कान्तिदा ब्राह्मणकुलमें उत्पन्न हैं। इन सभीको देवर्षि श्रीनारदकी कृपासे श्रीवृन्दावनमें वासस्थान प्राप्त हुआ है॥२३१–२३२॥

द्वितीयमण्डलम्

(कुलके अन्तर्गत आनेवाली सखियोंके द्वितीय प्रकार मण्डलका वर्णन)

द्वितीयोऽस्मान्मनाङ्न्यूनप्रेमा स्यान्मण्डलात् पुरः।
समासम–प्रेमतया द्विवर्गोऽयं निगद्यते॥२३३॥

भावानुवाद—कुलके अन्तर्गत (श्लोक संख्या ७५ द्रष्टव्य) आनेवाले सखियोंके द्वितीय प्रकार रूप मण्डलकी सखियोंका प्रेम पहले प्रकार अर्थात् समाजकी सखियोंके प्रेमकी तुलनामें कुछ न्यून है। इस मण्डलमें सखियोंके प्रेमके अनुरूप दो वर्ग हैं—सम और असम॥२३३॥

वर्गः प्रियसखीनां यः समप्रेमेत्यसौ मतः।
स द्विधा स्यान्नित्यसिद्धो भक्तिसिद्धस्तथा भवेत्॥२३४॥

भावानुवाद—प्रिय सखियाँ समप्रेम वर्गके अन्तर्गत हैं। वे भी पुनः दो प्रकारकी हैं—नित्यसिद्ध और भक्तिसिद्धि॥२३४॥

नित्यप्रियाणां तत्रापि दशकोटिमितो गणः।
समवायो नियुतानां लक्षैरष्टाभिरेव च॥२३५॥

भावानुवाद—इनमें नित्यसिद्ध प्रिय सखियोंके दस करोड़ गण और अठारह लाख समवाय हैं॥२३५॥

यदष्टकं परप्रेष्ठसखीरष्टानुगच्छति।
बहवः सञ्चयास्तत्र सहस्रैः कोऽपि पञ्चषैः॥२३६॥

भावानुवाद—जिन आठ परमप्रेष्ठ सखियोंका वर्णन किया गया है, उनके आनुगत्यमें भी आठ-आठ सखियाँ सेवा करती हैं। इनमें भी बहुत प्रकारके सञ्चय अर्थात् दल भेद हैं। उसमेंसे कोई दल पाँच हजार गोपियों और कोई छह हजार गोपियोंका है॥२३६॥

भवेत् कश्चिच्चतुःपञ्च कश्चित्त्रिचतुरैरपि।
कुतश्चिदिह साधर्म्यात् प्रायः स्यात् सञ्चयैकता॥२३७॥

भावानुवाद—पुनः कोई दल चार-पाँच हजार गोपियों वाला तथा कोई तीन-चार हजार गोपियों वाला है। कहीं-कहीं इन सञ्चयोंमें साधर्म्यवशतः प्रायः एकता है॥२३७॥

समाजः सञ्चयोऽनेकैरेषाप्येकसमाजता।
भवेत् स्नेहविशेषेण कश्चित् षोडशभागिह॥२३८॥

भावानुवाद—सञ्चयके अन्तर्गत अनेक समाज होनेपर भी वह समाज एक ही है। वह समाज स्नेहकी विशेषताके कारण कहीं-कहीं सोलह भागोंमें विभक्त है॥२३८॥

विंशत्यापि तथा पञ्चविंशता त्रिंशता तथा।
चत्वारिंशद्यूथः कश्चिदेवं पञ्चशता भवेत्॥२३९॥

भावानुवाद—कोई समाज बीस, कोई पच्चीस, कोई तीस, कोई चालीस तथा कोई पचास भागों (यूथों) में विभक्त होता है॥२३९॥

षष्ट्या कश्चित् समाजः स्याच्चतुःषष्ट्यादिभिस्तथा।
चतुःषष्ट्यादिभिस्तत्र समाजोऽयं प्रपञ्च्यते॥२४०॥

भावानुवाद—कोई समाज साठ तथा कोई चौसठ भागोंमें विभक्त होता है। अब चौसठ भागोंमें विभक्त समाजका विस्तृत रूपसे वर्णन किया जा रहा है॥२४०॥

द्वाभ्यां द्वित्रैस्त्रिचतुरादिभिश्चालीजनैर्भवेत्।
सर्वभावेण साधर्म्ये समाजोऽपि समन्वयः॥२४१॥

भावानुवाद—इन चौसठ भागोंमें किसीमें दो, किसीमें दो-तीन, किसीमें चार सखियाँ होती हैं। समस्त प्रकारके समान धर्म रहनेके कारण समाजको समन्वय भी कहा जाता है॥२४१॥

(१) ललितायाः सख्यः

रत्नप्रभा रतिकला सुभद्रा रतिका तथा।
सुमुखी च धनिष्ठा च कलहंसी कलापिनी॥२४२॥

भावानुवाद—श्रीललिता सखीके आनुगत्यमें सेवा करनेवाली आठ प्रमुख सखियोंके नाम—(१) रत्नप्रभा, (२) रतिकला, (३) सुभद्रा, (४) रतिका, (५) सुमुखी, (६) धनिष्ठा, (७) कलहंसी, (८) कलापिनी॥२४२॥

(२) विशाखायाः सख्यः

माधवी मालती चन्द्ररेखिका कुञ्जरी तथा।
हरिणी चपलानाम्नी सुरभिश्च शुभानना॥२४३॥

भावानुवाद—श्रीविशाखा सखीके आनुगत्यमें सेवा करनेवाली आठ प्रमुख सखियोंके नाम—(१) माधवी, (२) मालती, (३) चन्द्ररेखिका, (४) कुञ्जरी, (५) हरिणी, (६) चपला, (७) सुरभि, (८) शुभानना॥२४३॥

(३) चम्पकलतायाः सख्यः

कुरङ्गाक्षी सुचरिता मण्डली मणिकुण्डला।
चन्द्रिका चन्द्रलतिका पङ्कजाक्षी सुमन्दिरा॥२४४॥

भावानुवाद—श्रीचम्पकलता सखीके आनुगत्यमें सेवा करनेवाली आठ प्रमुख सखियोंके नाम—(१) कुरङ्गाक्षी, (२) सुचरिता, (३) मण्डली, (४) मणिकुण्डला, (५) चन्द्रिका, (६) चन्द्रलतिका, (७) पङ्कजाक्षी, (८) सुमन्दिरा॥२४४॥

(४) चित्रायाः सख्यः

रसालिका तिलकिनी शौरसेनी सुगन्धिका।
रामिणी कामनगरी नागरी नागवेणिका॥२४५॥

भावानुवाद—श्रीचित्रा सखीके आनुगत्यमें सेवा करनेवाली आठ प्रमुख सखियोंके नाम—(१) रसालिका, (२) तिलकिनी, (३) शौरसेनी, (४) सुगन्धिका, (५) रामिणी, (६) कामनगरी, (७) नागरी, (८) नागवेणिका॥२४५॥

(५) तुङ्गविद्यायाः सख्यः

मञ्जुमेधा सुमधुरा सुमध्या मधुरेक्षणा।
तनुमध्या मधुस्पन्दा गुणचूड़ा वराङ्गदा॥२४६॥

भावानुवाद—श्रीतुङ्गविद्या सखीके आनुगत्यमें सेवा करनेवाली आठ प्रमुख सखियोंके नाम—(१) मञ्जुमेधा, (२) सुमधुरा, (३) सुमध्या, (४) मधुरेक्षणा, (५) तनुमध्या, (६) मधुस्पन्दा, (७) गुणचूड़ा, (८) वराङ्गदा॥२४६॥

(६) इन्दुलेखायाः सख्यः

तुङ्गभद्रा रसोत्तुङ्गा रङ्गवाटी सुसङ्गता।
चित्ररेखा विचित्राङ्गी मोदनी मदनालसा॥२४७॥

भावानुवाद—श्रीइन्दुलेखा सखीके आनुगत्यमें सेवा करनेवाली आठ प्रमुख सखियोंके नाम—(१) तुङ्गभद्रा, (२) रसोत्तुङ्गा, (३) रङ्गवाटी, (४) सुसङ्गता, (५) चित्ररेखा, (६) विचित्राङ्गी, (७) मोदनी, (८) मदनालसा॥२४७॥

(७) रङ्गदेव्या सख्यः

कलकण्ठी शशिकला कमला मधुरेन्दिरा।
कन्दर्पसुन्दरी कामलतिका प्रेममञ्जरी॥२४८॥

भावानुवाद—श्रीरङ्गदेवी सखीके आनुगत्यमें सेवा करनेवाली आठ प्रमुख सखियोंके नाम—(१) कलकण्ठी, (२) शशिकला, (३) कमला, (४) मधुरा, (५) इन्दिरा, (६) कन्दर्पसुन्दरी, (७) कामलतिका, (८) प्रेममञ्जरी॥२४८॥

(८) सुदेव्या सख्यः

कावेरी चारुकवरा सुकेशी मञ्जुकेशिका।
हारहीरा महाहीरा हारकण्ठी मनोहरा॥२४९॥

भावानुवाद—श्रीसुदेवी सखीके आनुगत्यमें सेवा करनेवाली आठ प्रमुख सखियोंके नाम—(१) कावेरी, (२) चारुकवरा, (३) सुकेशी, (४) मञ्जुकेशिका, (५) हारहीरा, (६) महाहीरा, (७) हारकण्ठी, (८) मनोहरा॥२४९॥

श्रीराधाया अष्टसख्यः (सम्मोहनतन्त्रे)

(सम्मोहनतन्त्रके मतानुसार श्रीराधाकी अष्ट सखियोंके नाम)

लीलावती साधिका च चन्द्रिका माधवी तथा।
ललिता विजया गौरी तथा नन्दा प्रकीर्तिता॥२५०॥

भावानुवाद—लीलावती, साधिका, चन्द्रिका, माधवी, ललिता, विजया, गौरी और नन्दा॥२५०॥

अन्याश्चाष्टौ

(उसी सम्मोहनतन्त्रके किसी अन्य स्थानपर वर्णित अष्ट सखियोंके नाम)

कलावती रसवती श्रीमती च सुधामुखी।
विशाखा कौमुदी माधवी शारदा चाष्टमी स्मृता॥२५१॥

भावानुवाद—कलावती, रसवती, श्रीमती, सुधामुखी, विशाखा, कौमुदी, माधवी तथा शारदा॥२५१॥

रत्नभवाः

एता नोपेक्षिता उक्ता नित्यानामवधारणे।
इत्येतत्परिवाराणां श्रीवृन्दावननाथयोः।
असंख्यानां गणयितुं दिङ्मात्रमिह दर्शितम्॥२५२॥

भावानुवाद—सम्मोहनतन्त्रमें उक्त 'रत्नभवा' नामकी कोई भी सखी इस ग्रन्थमें उपेक्षित नहीं हुई है, बल्कि वे नित्य सखियोंके रूपमें ही गिनी गयी हैं।

वृन्दावननाथ श्रीराधाकृष्णका परिवार असंख्य है, तब भी गणना केवल दिग्दर्शनमात्रके लिए की गयी है॥२५२॥

तल्पान्नपानताम्बूल–हिल्लोलस्थासकादयः ।
अन्येऽपि ये विशेषाः स्युः स्वयमूह्यास्तु ते बुधैः ॥२५३॥

भावानुवाद—शय्या, पकवान, रसाला और ताम्बुल प्रस्तुत करने, झूला झुलाने तथा तिलक रचना आदि जैसी अनेकानेक सेवाओंमें नियुक्त उन असंख्य गोपियोंके नाम जिनका इस ग्रन्थमें वर्णन नहीं हुआ है, वह शुद्ध रसिक भक्तोंके लिए विवेचनीय हैं अर्थात् वे स्वयं ही विभिन्न शास्त्रोंमें उल्लिखित अन्यान्य परिकरोंके नाम जान जायेंगे॥२५३॥

लुप्ततमासीत् कृपया ज्योतिर्घटयेव भानुमत्यासौ।
रूपविषयापि दृष्टिः सरसान् शब्दानवैक्षिष्ट॥२५४॥

भावानुवाद—अन्धकार उपस्थित होनेपर जिस प्रकार रूप आदि विषयोंको ग्रहण करनेवाली दृष्टिशक्ति विलुप्त हो जाती है, किन्तु पुनः चन्द्र, सूर्य आदिके उदित होनेपर वही दृष्टि सभी पदार्थोंको देखनेमें समर्थ हो जाती है। उसी प्रकार कालरूप अन्धकारसे श्रीश्रीराधाकृष्णके परिकरोंके नाम, रूप आदिका विषय एक प्रकारसे विलुप्त हो रहा था, किन्तु भगवत्–कृपारूपी ज्योतिपुञ्जने नेत्रोंके महोत्सवरूपी श्रीश्रीराधाकृष्णके परिकरोंके नाम, रूप आदिको शब्दोंके रूपमें पुनः प्रकाशित कर दिया है॥२५४॥

शाके दृगश्वशक्रे, नभसि नभोमणिदिने षष्ट्याम्।
व्रजपतिसद्मनि राधाकृष्णगणोद्देशदीपिकादीपि॥२५५॥

श्रीश्रीराधाकृष्णगणोद्देश–दीपिकायां बृहद्भागः सम्पूर्णः॥

भावानुवाद—दृक २, अश्व ७, शक्र (इन्द्र) १४,—"अंकस्य वामा गतिः" अर्थात् अङ्कोंकी गति वाम दिशामें है—इस नियमके अनुसार १४७२ शकाब्द। नभससे श्रावण मास, नभोमणिसे सूर्य तथा दिन शब्दसे वार अर्थ ग्रहण करनेपर यह ज्ञात होता है कि 'श्रीश्रीराधाकृष्णगणोद्देश–दीपिका' नामक ग्रन्थ १४७२ शकाब्दके श्रावण मासकी षष्ठी तिथि, रविवारको श्रीनन्द महाराजके शोभायमान गृह नन्दगाँवमें सम्पूर्ण हुआ॥२५५॥

श्रीश्रीराधाकृष्णगणोद्देश–दीपिकाके बृहद्भागका अनुवाद सम्पूर्ण॥

श्रीश्रीराधाकृष्णगणोद्देश-दीपिका

(लघुभाग)

श्रीकृष्णस्य रूपादिकम्

(श्रीकृष्णके रूप, गुण और माधुर्य आदिका वर्णन)

सुधालावण्य-माधुर्य-दलिताञ्जन-चिक्कणः ।
इन्द्रनीलमणिः किंवा नीलोत्पलरुचिप्रभा ॥१॥

भावानुवाद—श्रीकृष्ण अमृतके समान लावण्य और माधुर्यसे परिपूर्ण तथा नेत्रोंपर लगाये जानेवाले अञ्जनके समान स्निग्ध हैं। उनकी अङ्गकान्ति इन्द्रनीलमणिके समान उज्ज्वल अथवा नीलकमलकी कान्तिके सदृश श्यामल है॥१॥

किंवा नव्यतमालोऽपि मेघपुञ्ज-मनोहरः।
प्रभा मारकती कान्तिः सुधालावण्यवारिधिः॥२॥

भावानुवाद—अथवा श्रीकृष्ण नवीन तमालके समान सुन्दर तथा मेघ पुञ्जके समान मनोहर हैं। उनकी अङ्गकान्ति मरकत मणिकी कान्तिसे भी उज्ज्वल है। उनका सौन्दर्य अमृतमय लावण्यका समुद्र स्वरूप है॥२॥

पीतवस्त्र-परिधानो वनमाला-विभूषितः।
नानारत्न-भूषिताङ्गो नानाकेलि-रसाकरः॥३॥

भावानुवाद—श्रीकृष्ण पीताम्बर धारण करनेवाले, वनमालासे विभूषित, विविध प्रकारके रत्नोंसे सुसज्जित तथा अनेक प्रकारके लीलारसके सागर स्वरूप हैं॥३॥

दीर्घकुञ्चितकेशोऽपि बहुगन्धसुगन्धितः।
नानापुष्पमालया च चूड़ादीप्तिर्मनोहरा॥४॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके केश लम्बे, घुँघराले तथा विविध प्रकारकी सुगन्धसे सुवासित हैं। बहुविध पुष्प मालाओंसे सुसज्जित चूड़ेकी शोभा मनका हरण करनेवाली है॥४॥

श्रीमँल्ललाटपाटीरस्तिलकालक-शोभितः ।
नीलोन्नतभ्रूविलास-कामिनीचित्तमोहनः ॥५॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णका ललाट चन्दनके तिलक एवं अलकावली द्वारा शोभायमान है। उनका नीलवर्णवाला उन्नत भ्रूयुगल विलास अर्थात् नर्तन द्वारा कामिनियोंके चित्तको मोहित कर रहा है॥५॥

घूर्णमानं सुनयनं रक्तनीलोत्पलप्रभम्।
खगेन्द्र-चञ्चुलावण्य-सुनासाग्रजसुन्दरः ॥६॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके सुन्दर नयनयुगल चञ्चल तथा रक्त-नील कमलकी प्रभासे युक्त हैं। उनकी लावण्यपूर्ण नासिकाका अग्रभाग खगपति गरुड़की चोंचके समान अतीव सुन्दर है॥६॥

मनोहारि कर्णयुग्मं मणिकुण्डलशोभितम्।
नानामणि-कुण्डलाढ्य-गण्डस्थल-विराजितः ॥७॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके मनोहर कर्ण युगलमें मणिमय कुण्डल शोभा पा रहे हैं। इन कुण्डलोंमें लगे नानाविध मणि-माणिक्योंकी प्रभासे कपोलोंकी प्रभा उज्ज्वल हो रही है॥७॥

मुखपद्मं सुलावण्यं कोटिचन्द्रप्रभाकरम्।
नानाहास्य-सुमधुरश्चिबुको दीप्तिमान् भवेत्॥८॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णका मुखकमल सुन्दर लावण्ययुक्त एवं करोड़ों-करोड़ों चन्द्रमाओंकी प्रभाका आकरस्वरूप है। सुमधुर चिबुक (ठोड़ी) अनेक प्रकारके हास-परिहाससे दीप्तिमान हो रहा है॥८॥

कण्ठदेशः सुलावण्यो मुक्तामाला–विभूषितः।
त्रिभङ्गो ललितस्निग्धग्रीवस्त्रैलोक्यमोहनः ॥९॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णका सुन्दर लावण्यमय कण्ठ मुक्तामालाओंसे विभूषित है तथा उनकी त्रिभङ्ग ललित ग्रीवा (गर्दनका पिछला भाग) अपनी स्निग्धतासे त्रिलोकीको मुग्ध कर रही है॥९॥

वक्षःस्थलञ्च लावण्यैरमणीरमणोत्सुकम्।
मणिकौस्तुभविद्युद्भा–मुक्ताहार–विभूषितम् ॥१०॥

भावानुवाद—कौस्तुभ मणि और सौदामिनी जैसी आभावाले मुक्ताहारसे विभूषित श्रीकृष्णका वक्षःस्थल अपनी लावण्य राशि द्वारा रमणियोंके साथ रमण करनेके लिए उत्सुकता प्रकाशित कर रहा है॥१०॥

आजानुलम्बितभुजौ केयूर–वलयान्वितौ।
रक्तोत्पलहस्तपद्मौ नानाचिह्नसुशोभितौ॥११॥

गदा–शंख–यवच्छत्र–चन्द्रार्धाङ्कुश–शोभितौ।
ध्वज–पद्म–यूप–हल–घट–मीन विराजितौ॥१२॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णकी आजानुलम्बित भुजाएँ केयूर (बाजुबन्द) तथा वलय (कङ्गनों) और रक्त कमल जैसे दिखायी देनेवाले हस्तकमल गदा, शंख, जौ, छत्र, अर्द्धचन्द्र, अंकुश (नियंत्रण करनेवाली छड़ी), ध्वजा, पद्म, विजय स्तम्भ, हल, घट एवं मीन आदि नाना प्रकारके चिह्नोंसे सुशोभित हैं॥११-१२॥

उदरञ्च सुमधुरं लावण्यकेलिसुन्दरम्।
पृष्ठपार्श्वसुधारम्यं रमणीकेलिलालसम्॥१३॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णका सुन्दर सुमधुर उदर लावण्यताकी क्रीड़ाभूमि है। उनके उदरके पीछेका सुधामय पीठस्थल और पार्श्व अर्थात् पीठ और उदरके मध्य वाला भाग रमणियोंके साथ लीला करनेकी लालसासे युक्त है॥१३॥

कटिबिम्ब-सुधाम्भोजं कन्दर्पमोहनोत्सुकम्।
रामरम्भे इवोरू द्वौ नारीमोहनकारकौ ॥१४॥

भावानुवाद—अमृतमय कमलकी भाँति दिखायी देनेवाले श्रीकृष्णके गोलाकार नितम्ब कन्दर्पको मोहित करनेके लिए उत्सुक हैं तथा केलेके आन्तर भागके समान दिखायी देनेवाली विस्तृत जघाएँ नारियोंको मोहित करनेवाली हैं॥१४॥

जानू द्वौ च सुलावण्यौ मधुरौ परमोज्ज्वलौ।
पादपद्मौ सुमधुरौ रत्ननूपुरभूषितौ ॥१५॥

जवापुष्पसमरुची नानाचिह्न-सुशोभितौ।
चक्रार्द्धचन्द्राष्टकोण-त्रिकोण-यव-शोभितौ ॥१६॥

अम्बरच्छत्र-कलस-शंख-गोष्पद-स्वस्तिकौ ।
अङ्कुशाम्भोजधनुषा जाम्बवेन च शोभितौ ॥१७॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके दोनों घुटने लावण्ययुक्त, मधुर और अत्यन्त उज्ज्वल हैं। सुमधुर पादपद्म रत्नमय नूपुर द्वारा विभूषित, जवापुष्पकी भाँति कान्तियुक्त और चक्र, अर्धचन्द्र, अष्टकोण, त्रिकोण, जौ, आकाश, छत्र, कलश, शंख, गोष्पद (गायका खुर), स्वस्तिक, अंकुश, पद्म, धनुष, तथा जामुनके फल आदि जैसे अनेक चिह्नोंसे सुशोभित हैं॥१५-१७॥

अंगुल्योऽरुणभाः सम्यङ्नखचन्द्र-समन्विताः।
श्रीयुतौ चरणाम्भोजौ नानाप्रेम-सुखार्णवौ ॥१८॥

भावानुवाद—पूर्णतम नखचन्द्रोंसे समन्वित श्रीकृष्णके चरणोंकी अङ्गुलियाँ अरुण कान्तिसे परिपूर्ण तथा शोभायमान चरणकमल विविध प्रेम सुखके सागर हैं॥१८॥

एतेषां कृष्णरूपाणां तुलना न हि विद्यते।
किञ्चिदुद्दीपनार्थाय दिङ्मात्रमिह दर्शितम् ॥१९॥

भावानुवाद—यद्यपि उपरोक्त श्रीकृष्णकी रूप-माधुरीकी तुलना जगत्की किसी भी वस्तुसे नहीं की जा सकती, तब भी किञ्चित उद्दीपनाके लिए यहाँपर मात्र दिग्दर्शन कराया गया है॥१९॥

वयस्याः

(श्रीकृष्णके सखा)

अथ श्रीकृष्णचन्द्रस्य सखिवृन्दञ्च कथ्यते।
अग्रगामी वयस्यानां प्रलम्बारातिरग्रजः॥२०॥

भावानुवाद—अब श्रीकृष्णके सखाओंका वर्णन किया जा रहा है। श्रीबलदेव सखाओंमें अग्रगामी (सर्वोपरि) हैं। ये श्रीकृष्णके बड़े भाई तथा प्रलम्ब नामक प्रसिद्ध असुरके निहन्ता हैं॥२०॥

वयस्यभेदाः

(सखाओंके प्रकार)

सुहृत्–सखि–प्रियसखाः प्रियनर्मसखस्तथा।
वयस्याः कृष्णचन्द्रस्य स्फुटमत्र चतुर्विधाः॥२१॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णचन्द्रके सखा चार प्रकारके हैं—(१) सुहृत, (२) सखा, (३) प्रियसखा तथा (४) प्रियनर्मसखा॥२१॥

सुहृत्

(सुहृत सखा)

सुभद्रः कुण्डलो दण्डी मण्डलोऽमी पितृव्यजाः।
सुनन्दो नन्दिरानन्दी इत्याद्या यातरः स्मृताः॥२२॥

भावानुवाद—चचेरे भाई सुभद्र, कुण्डल, दण्डी और मण्डल तथा सुनन्द, नन्दी और आनन्दी आदि सुहृत श्रीकृष्णके वनगमनके सङ्गीके रूपमें प्रसिद्ध हैं॥२२॥

शुभदो मण्डलीभद्र–भद्रवर्द्धन–गोभटाः।
यक्षेन्द्र–भट–भद्राङ्ग–वीरभद्र–महागुणाः॥२३॥

कुलवीरो महाभीमो दिव्यशक्तिः सुरप्रभः।
रणस्थिरादयो ज्येष्ठकल्पाः संरक्षणाय ये॥२४॥

पितृभ्यामभितो भीतचित्ताभ्यां दुष्टकंसतः।
प्राणकोट्यधिकप्रेष्ठपुत्राभ्यां विनियोजिताः॥२५॥

भावानुवाद—शुभद, मण्डलीभद्र, भद्रवर्द्धन, गोभट, यक्षेन्द्र, भट, भद्राङ्ग, वीरभद्र, महागुण, कुलवीर, महाभीम, दिव्यशक्ति, सुरप्रभ तथा रणस्थिर आदि सुहृत श्रीकृष्णसे ज्येष्ठ हैं तथा उनकी रक्षामें नियुक्त हैं।

दुष्ट कंसके भयसे भयभीत होकर श्रीनन्द-यशोदाने कोटि-कोटि प्राणोंसे भी अधिक प्रिय अपने पुत्र श्रीकृष्ण-बलरामकी रक्षा हेतु उपरोक्त शुभद आदि सुहृतोंको नियुक्त कर रखा है॥२३-२५॥

अत्राध्यक्षोऽम्बिकासूनुर्विजयाक्षस्तपस्यया।
यः किलाम्बिकया लेभे धात्र्योपास्य सदाम्बिकाम्॥२६॥

भावानुवाद—अम्बिकापुत्र विजयाक्ष नामक बालक सभी सुहृतोंके अध्यक्ष हैं। श्रीकृष्णकी धात्री अम्बिकाने निरन्तरकी गयी अम्बिका (पार्वती) की उपासनाके फलस्वरूप इन्हें पुत्र रत्नके रूपमें प्राप्त किया है॥२६॥

सुभद्रः

सुचिक्कणो नीलवर्णः सुभद्रो दीप्तिमान् भवेत्।
पीतवस्त्रपरिधानो नानाभरणशोभितः॥२७॥

भावानुवाद—सुभद्र अपनी परम स्निग्ध अङ्गकान्ति और नीलवर्णके कारण दीप्तिमय है। ये पीतवर्णके वस्त्र धारण करते हैं तथा अनेक प्रकारके भूषणोंसे विभूषित रहते हैं॥२७॥

उपनन्दः पिता तस्य तुला माता पतिव्रता।
परमोज्ज्वलकैशोरः पत्नी कुन्दलता भवेत्॥२८॥

भावानुवाद—सुभद्रके पिताका नाम उपनन्द तथा माताका नाम तुला है, जो बड़ी पतिव्रता हैं। ये परम उज्ज्वल कैशोर अवस्थासे परिपूर्ण है। इनकी पत्नीका नाम कुन्दलता है॥२८॥

सखायः

(सखाओंका वर्णन)

विशाल–वृषभौजस्वि–देवप्रस्थ–वरूथपाः ।
मन्दारः कुसुमापीड़–मणिबन्धकरान्धमा ॥२९॥

मन्दरश्चन्दनः कुन्दः कलिन्दकुलिकादयः।
कनिष्ठकल्पाः सेवायां सखायो विपुलाग्रहाः ॥३०॥

भावानुवाद—विशाल, वृषभ, ओजस्वी, देवप्रस्थ, वरूथप, मन्दार, कुसुमापीड़, मणिबन्ध, करन्धम, मन्दर, चन्दन, कुन्द, कलिन्द और कुलिक आदि सखा श्रीकृष्णसे कनिष्ठ हैं। श्रीकृष्णकी सेवा करनेमें इन सखाओंका अत्यधिक आग्रह है॥२९–३०॥

प्रियसखाः

(प्रिय सखाओंका वर्णन)

श्रीदामा दामा सुदामा वसुदामा तथैव च।
किङ्किणि–भद्रसेनांशु–स्तोककृष्ण विलासिनः ॥३१॥

पुण्डरीक–विटङ्काक्ष–कलविङ्क–प्रियङ्कराः ।
श्रीदामाद्याः समास्तत्र श्रीदामा पीठमर्दकः ॥३२॥

भावानुवाद—श्रीदाम, दाम, सुदाम, वसुदाम, किङ्किणी, भद्रसेन, अंशुमान, स्तोककृष्ण, विलासि, पुण्डरीक, विटङ्काक्ष, कलविङ्क और प्रियङ्कर—ये सभी श्रीकृष्णके प्रिय सखा हैं। श्रीदाम आदि श्रीकृष्णके समवयस्क अर्थात् समान आयुवाले हैं। इनमेंसे श्रीदाम 'पीठमर्द'[१] नामसे भी प्रसिद्ध है॥३१–३२॥

समस्तमित्रसेनानां भद्रसेनश्चमुपतिः।
स्तोककृष्णो यथार्थाख्यः कृष्णस्य प्रत्यनन्तरः ॥३३॥

भावानुवाद—इन सभी प्रिय सखाओंमें भद्रसेन मित्रस्वरूपी सेनाके सेनापति है। स्तोककृष्ण नामक प्रिय सखाका यह नाम उचित ही है,

---

[१] नायक जैसा गुणवान होकर भी नायककी आज्ञाके अनुसार चलनेवालेको पीठमर्द कहते हैं। (जैवधर्म, बत्तीसवाँ अध्याय)

क्योंकि ये श्रीकृष्णके अनुगत होनेके कारण सचमुचमें स्तोक अर्थात् छोटे कृष्ण ही हैं॥३३॥

रमयन्ति प्रियसखाः केलिभिर्विविधैरमी।
नियुद्धदण्डयुद्धादिकौतुकैरपि केशवम्॥३४॥

भावानुवाद—प्रिय सखा विविध प्रकारकी क्रीड़ाओं तथा नियुद्ध (हाथा-पाई, कुश्ती) और दण्डयुद्ध (लाठी चलाना) आदि विविध कौतुकोंसे श्रीकृष्णको परमान्दित करते हैं॥३४॥

एते प्रियसखाः शान्ताः कृष्णप्राण-समा मताः॥३५॥

भावानुवाद—सभी प्रियसखा शान्त स्वभावसे युक्त तथा श्रीकृष्णके प्राण हैं॥३५॥

श्रीदामा

(श्रीदामका वर्णन)

श्रीदामा श्यामलरुचिरङ्गकान्तिर्मनोहरा।
पीतवस्त्रपरिधानो रत्नमालाविभूषितः॥३६॥

वयः षोडशवर्षञ्च किशोरः परमोज्ज्वलः।
श्रीकृष्णस्य प्रियतमो बहुकेलि-रसाकरः॥३७॥

भावानुवाद—श्रीदामकी अङ्गकान्ति मनोहर श्यामवर्णकी है। ये पीले रङ्गके वस्त्र धारण करते हैं तथा रत्नमालाओंसे विभूषित रहते हैं। ये सोलह वर्षीय कैशोर अवस्थासे परम उज्ज्वल हैं। ये श्रीकृष्णको बहुत अधिक प्रिय तथा अनेक प्रकारके लीलारसके आकरस्वरूप हैं॥३६-३७॥

वृषभानुः पिता तस्य माता च कीर्त्तिदा सती।
राधानङ्गमञ्जरी च कनिष्ठा भगिनी भवेत्॥३८॥

भावानुवाद—श्रीदामके पिता श्रीवृषभानु महाराज तथा माता कीर्त्तिदादेवी हैं, जो बड़ी पतिव्रता हैं। श्रीराधा और अनङ्गमञ्जरी इनकी छोटी बहनें हैं॥३८॥

सुदामा

ईषद्गौरः सुदामा च देहकान्तिर्मनोहरा।
नीलवस्त्रपरिधानो रत्नाभरणभूषितः ॥३९॥

भावानुवाद—सुदाम किञ्चित् गौर वर्णके हैं। इनकी अङ्गकान्ति परम मनोहर है। ये नीले रङ्गके वस्त्र धारण करते हैं तथा रत्नमय आभूषणोंसे विभूषित रहते हैं॥३९॥

पिता च मटुको नाम रोचना जननी भवेत्।
सुकिशोरवयो–वेशः नानाकेलिरसोत्करः ॥४०॥

भावानुवाद—सुदामके पिताका नाम मटुक तथा माताका नाम रोचना है। ये सुन्दर किशोर अवस्था और वेशसे सुशोभित है तथा विविध क्रीड़ा रसके आकर है॥४०॥

प्रियनर्मसखाः

(प्रियनर्म सखाओंका वर्णन)

सुबलार्जुन–गन्धर्व–वसन्तोज्ज्वल–कोकिलाः ।
सनन्दन–विदग्धाद्याः प्रियनर्मसखा मताः ॥४१॥

भावानुवाद—सुबल, अर्जुन, गन्धर्व, वसन्त, उज्ज्वल, कोकिल, सनन्दन तथा विदग्ध आदि सखा प्रियनर्म सखाके रूपमें विख्यात हैं॥४१॥

तद्रहस्यन्तु नास्त्येव यदमीषां न गोचरः।
मधुमङ्गल–पुष्पाङ्क–हासङ्काद्या विदूषकाः ॥४२॥

श्रीमान् सनन्दनस्तत्र सौहृदानन्दसुन्दरः।
मूर्त्तिमानेव रसराड़ुज्ज्वलश्च महोज्ज्वलः।
विलासिशेखरो यस्य विलासेन वशीकृतः ॥४३॥

भावानुवाद—ऐसा कोई रहस्य अर्थात् गोपनीयता नहीं है, जो इन प्रियनर्म सखाओंके अगोचर हो।

इन प्रियनर्म सखाओंमें मधुमङ्गल, पुष्पाङ्क एवं हासङ्क आदि श्रीकृष्णके विदूषक[१] हैं। श्रीमान् सनन्दन श्रीकृष्णके साथ अपनी परम सुहृदताके आनन्दमें निमग्न हैं। उज्ज्वल नामक प्रियनर्म सखा मूर्त्तिमान रसराजकी तरह महान् उज्ज्वल हैं। विलासशालियोंके मुकुटमणि श्रीकृष्ण भी इनके विलाससे वशीभूत हो जाते हैं॥४२–४३॥

सुबलः

सुबलस्य गौरकान्तिर्नीलवस्त्रमनोहरः।
नानारत्न–भूषिताङ्गो नानापुष्पविभूषितः॥४४॥

सार्द्धद्वादशवर्षीयः कैशोर–वयसोज्ज्वलः।
सखिभावं समाश्रित्य नानासेवा–परिप्लुतः॥४५॥

द्वयोर्मिलननैपुण्यो मधुरो भावभावितः।
नानागुण–सुखोपेतः कृष्ण–प्रियतमो भवेत्॥४६॥

भावानुवाद—सुबलकी अङ्गकान्ति गौरवर्णकी है। ये नीले रङ्गके वस्त्रोंको धारण करके परम मनोहर लगते हैं। इनके अङ्ग विविध प्रकारके रत्नों एवं नाना प्रकारके पुष्पोंसे अलंकृत रहते हैं। इनकी आयु साढ़े बारह वर्ष है, अतः कैशोरावस्थाके कारण परम दीप्तिमान है। ये सख्य भावका भलीभाँति अवलम्बन करके श्रीकृष्णकी नाना सेवाओंमें निमग्न रहते हैं। ये श्रीराधाकृष्णका मिलन करानेमें सुनिपुण, मधुर भावसे विभावित तथा श्रीकृष्णको सुख देनेवाले विविध गुणोंसे युक्त हैं।

उपरोक्त सभी कारणोंसे सुबल श्रीकृष्णको बहुत प्रिय हैं॥४४–४६॥

अर्जुनः

रक्तोत्पलनिभा कान्तिरर्जुनो दीप्तिमान् भवेत्।
वसने चन्द्रकान्तिश्च नानारत्नसुशोभितः॥४७॥

---

[१] भोजन प्रिय, कलह प्रिय, अङ्गभङ्गी और वाक्–चातुरी तथा वेष द्वारा हँसानेवालेको विदूषक कहते हैं। (जैवधर्म, बत्तीसवाँ अध्याय)

भावानुवाद—अर्जुनकी अङ्गकान्ति लाल कमलके समान परम दीप्तिमान हैं तथा वस्त्र चन्द्रकान्तिके समान हैं। ये नाना रत्नोंसे सुशोभित रहते हैं॥४७॥

पिता सुदक्षिणस्तस्य भद्रा च जननी भवेत्।
ज्येष्ठो भ्राता वसुदामा द्वयोः प्रेमपरिप्लुतः॥४८॥

भावानुवाद—अर्जुनके पिताका नाम सुदक्षिण और माताका नाम भद्रा तथा बड़े भाईका नाम वसुदाम है। ये श्रीराधाकृष्णके प्रेममें निमज्जित रहते हैं॥४८॥

सार्द्धश्चतुर्दश समा वयः कैशोरकोज्ज्वलः।
नानापुष्पभूषिताङ्गो वनमाला-विभूषितः॥४९॥

भावानुवाद—अर्जुन अपनी साढ़े चौदह वर्षवाली कैशोर अवस्थाके कारण परम उज्ज्वल दिखायी पड़ते हैं। ये नाना प्रकारके पुष्पोंसे बने आभूषणों और वनमालाओंसे विभूषित रहते हैं॥४९॥

गन्धर्वः

निशाकर-प्रभाकान्तिर्गन्धर्वो रूपवान् भवेत्।
रक्तवस्त्रपरिधानो नानाभरण-संयुतः॥५०॥

भावानुवाद—परम रूपवान गन्धर्वकी अङ्गकान्ति चन्द्रमाकी प्रभाके समान हैं। ये लाल रङ्गके वस्त्र धारण करते हैं। ये अनेक प्रकारके आभरणोंसे विभूषित हैं॥५०॥

वयो द्वादशवर्षञ्च किशोरवयसोज्ज्वलः।
नानापुष्पभूषिताङ्गो गन्धर्वश्च सुशोभितः॥५१॥

भावानुवाद—गन्धर्व अपनी द्वादश वर्षीय कैशोर अवस्थासे सुशोभित हैं। परम शोभायमान गन्धर्व अनेक प्रकारकी पुष्प-मालाओंसे विभूषित हैं॥५१॥

माता मित्रा सुसाध्वी च विनाको जनको महान्।
श्रीकृष्णस्य प्रियतमो नानाकेलि-कुतूहलः॥५२॥

भावानुवाद—गन्धर्वकी माता मित्रा बड़ी सुसाध्वी और पिता महात्मा विनाक हैं। गन्धर्व श्रीकृष्णको बहुत अधिक प्रिय हैं तथा अपनी अनेक प्रकारकी आश्चर्यजनक लीलाओंके लिए प्रसिद्ध हैं॥५२॥

वसन्तः

ईषद्गौराङ्गकान्तिश्च वस्त्रं चन्द्रसमोज्ज्वलम्।
नानामणिभूषिताङ्गो वसन्त उज्ज्वलो भवेत्॥५३॥

एकादशवर्षवया नानामाल्य-विभूषितः।
माता च शारदी साध्वी पिङ्गलो जनको महान्॥५४॥

भावानुवाद—वसन्तकी अङ्गकान्ति किञ्चित् गौरवर्णकी तथा वस्त्र चन्द्रमाके समान उज्ज्वल हैं। अनेक प्रकारकी मणियों और पुष्पमालाओंसे विभूषित होनेके कारण इनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग परम उज्ज्वल है। इनकी आयु ग्यारह वर्षकी है। इनकी माता शारदी बड़ी पतिव्रता है तथा पिता महात्मा पिङ्गल हैं॥५३-५४॥

उज्ज्वलः

रक्तवर्णप्रभा कान्तिरुज्ज्वलः परमोज्ज्वलः।
तारावली-समं वस्त्रं मुक्तापुष्प-विराजितः॥५५॥

भावानुवाद—उज्ज्वलकी अङ्गकान्ति रक्तवर्णकी प्रभाके समान परमोज्ज्वल है तथा इनके वस्त्र तारोंकी पंक्तिके समान है। ये मुक्ता पुष्पों द्वारा सुशोभित हैं॥५५॥

सागराख्यः पिता तस्य माता वेणी पतिव्रता।
त्रयोदशवर्षवयाः किशोरः परमोज्ज्वलः॥५६॥

भावानुवाद—उज्ज्वलके पिताका नाम सागर तथा माताका नाम वेणी है, जो बड़ी पतिव्रता हैं। ये अपनी तेरह वर्षीय किशोर अवस्थासे परम उज्ज्वल हैं॥५६॥

कोकिलः

शुभ्रकान्तिः सुलावण्यः कोकिलः परमोज्ज्वलः।
नीलवस्त्रपरिधानो नानारत्नविभूषितः॥५७॥

भावानुवाद—परम उज्ज्वल, लावण्यमय कोकिलकी अङ्गकान्ति शुभ्रवर्णकी है। ये नीले रङ्गके वस्त्र धारण करते हैं तथा नाना रत्नोंसे विभूषित रहते हैं॥५७॥

वर्षैकादशकं मासाश्चत्वारो यद्वयःक्रमः।
जनकः पुष्करो नाम मेधा माता यशस्विनी॥५८॥

भावानुवाद—कोकिलकी आयु ग्यारह वर्ष, चार मास है। इनके पिताका नाम पुष्कर तथा माताका नाम मेधा है, जो बड़ी यशस्विनी है॥५८॥

सनन्दनः

ईषद्गौरङ्गकान्तिश्च शोभितश्च सनन्दनः।
नीलवस्त्र–परिधानो नानाभरण–भूषितः॥५९॥

भावानुवाद—सनन्दन किञ्चित् गौर अङ्गकान्तिवाले तथा परम शोभाशील हैं। ये नीले रङ्गके वस्त्र धारण करते हैं तथा नाना प्रकारके आभूषणोंसे विभूषित रहते हैं॥५९॥

सार्द्धाश्चतुर्दश समा वयो माल्य–विराजितः।
अरुणाक्षः पिता तस्य माता च मल्लिका भवेत्॥६०॥

भावानुवाद—सनन्दनकी आयु साढ़े चौदह वर्षकी है। इनके गलेमें माला विराजमान रहती है। इनके पिताका नाम अरुणाक्ष तथा माताका नाम मल्लिका है॥६०॥

विदग्धः

रूपं चम्पकवर्णाढ्यं विदग्धो दीप्तिमान् भवेत्।
शिखिकण्ठवर्णवासा मुक्तामाला–विभूषितः॥६१॥

भावानुवाद—विदग्धकी अङ्गकान्ति चम्पक पुष्पके समान मनोहर और परम दीप्तिमान है। ये मयूरकण्ठकी तरह श्यामवस्त्र धारण करनेवाले हैं। इनके अङ्ग अनेक प्रकारकी मुक्तामालाओंसे विभूषित रहते हैं॥६१॥

चतुर्दशवर्षपूर्णः किशोरः परमोज्ज्वलः।
पिता च मटुको नाम जननी रोचना भवेत्॥६२॥

सुदामा चाग्रजभ्राता भगिनी सुशीलापि च।
श्रीकृष्णस्य प्रियतमो युग्मभावविभावितः॥६३॥

भावानुवाद—विदग्ध अपनी चौदह वर्षीय किशोरावस्थासे परम उज्ज्वल हैं। इनके पिताका नाम मटुक और माताका नाम रोचना है। पूर्वोक्त सुदाम इनके बड़े भाई हैं। इनकी बहनका नाम सुशीला है। ये श्रीकृष्णको बहुत प्रिय हैं तथा श्रीराधाकृष्णके भावमें विभोर रहते हैं॥६२-६३॥

श्रीमधुमङ्गलः

ईषच्छ्यामलवर्णोऽपि श्रीमधुमङ्गलो भवेत्।
वसनं गौरवर्णाढ्यं वनमालाविराजितः॥६४॥

भावानुवाद—श्रीमान् मधुमङ्गल किञ्चित् श्यामवर्णके हैं। इनके वस्त्र गौरवर्णके हैं तथा ये वनमालाओंसे सुशोभित हैं॥६४॥

पिता सान्दीपनिर्देवो माता च सुमुखी सती।
नान्दीमुखी च भगिनी पौर्णमासी पितामही।
विदूषकः कृष्णसखः श्रीमधुमङ्गलः सदा॥६५॥

भावानुवाद—मधुमङ्गलके पिताका नाम श्रीसान्दीपनि ऋषि तथा माताका नाम सुमुखी है, जो बड़ी पतिव्रता हैं। नान्दीमुखी इनकी बहन और पौर्णमासी पितामही (दादी) हैं। विदूषक[१] मधुमङ्गल सदैव श्रीकृष्णके साथ रहते हैं॥६५॥

श्रीबलरामः

शुभ्रः स्फटिकवर्णाढ्यो बलरामो महाबलः।
नीलवस्त्रपरिधानो वनमाला-विराजितः॥६६॥

भावानुवाद—श्रीबलरामकी अङ्गकान्ति स्फटिक अर्थात् कर्पूरके समान शुभ्रवर्णकी है। महाबलशाली होनेके कारण इनका नाम

---
[१] श्लोक संख्या ४२-४३ द्रष्टव्य

'बलराम' है। ये नीलाम्बरधारी तथा विविध वनमालाओंसे सुशोभित हैं॥६६॥

दीर्घकेशः सुलावण्यश्चूडा चारुर्मनोहरा।
रत्नकुण्डलयुग्मञ्च कर्णयुग्मे विराजितम्॥६७॥

भावानुवाद—श्रीबलरामके लम्बे-लम्बे सुन्दर केश बहुत ही लावण्यपूर्ण हैं तथा रमणीय चूड़ा मनको आकर्षित करनेवाला है। इनके कानोंमें रत्न कुण्डल विराजमान हैं॥६७॥

नानापुष्पमणेर्हारः कण्ठदेशे सुशोभितः।
केयूरवलयौ युग्मौ बाहुयुग्मे विराजितौ॥६८॥

भावानुवाद—श्रीबलरामके कण्ठदेशमें नानाविध पुष्पोंकी मालाएँ तथा मणिमय हार शोभायमान है। भुजाओंमें बाजुबन्द और कङ्गन सुशोभित हैं॥६८॥

रत्ननूपुरयुग्मञ्ज पादयुग्मे सुशोभितम्।
वसुदेवः पिता तस्य माता च रोहिणी भवेत्॥६९॥

भावानुवाद—श्रीबलरामके चरणोंमें रत्नमय नूपुर शोभायमान हैं। इनके पिता श्रीवसुदेव और माता श्रीरोहिणी हैं॥६९॥

नन्दो मित्रं पितुस्तस्य माता साध्वी यशोमती।
भ्राता कनीयान् श्रीकृष्णः सुभद्रा भगिनी च सा॥७०॥

भावानुवाद—श्रीबलरामके पिता वसुदेव व्रजराज नन्दजीके मित्र और माता रोहिणी परम सती तथा यशोदाकी सखी हैं। श्रीकृष्ण इनके कनिष्ठ भ्राता तथा सुभद्रा इनकी बहन हैं॥७०॥

वयः षोडशवर्षञ्च किशोरपरमोज्ज्वलः।
श्रीकृष्णस्य प्रियतमो नानाकेलिरसाकरः॥७१॥

भावानुवाद—श्रीबलराम अपनी सोलह वर्षीय किशोरावस्थासे परम उज्ज्वल हैं। ये श्रीकृष्णके अत्यधिक प्रिय तथा नानाविध लीलारसके आकरस्वरूप हैं॥७१॥

सेवकाः

विटाः

(विट नामक सेवक)

कड़ार–भारतीबन्ध–गन्धवेदादयो विटाः।
विविधाः सेवकास्तस्य सेवासौख्यपरायणाः॥७२॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके विविध प्रकारके सेवकगण हैं, जो सेवाके द्वारा उन्हें आनन्द प्रदान करनेमें अनुरक्त हैं। उनमेंसे कड़ार, भारतीबन्ध, गन्धवेद आदि सेवकोंको विट[१] कहते हैं॥७२॥

चेटाः

(चेट नामक सेवक)

चेटा भङ्गुरभृङ्गारसान्धिकग्रहिलादयः।
रक्तकः पत्रकः पत्री मधुकण्ठो मधुव्रतः।
शालिकस्तालिको माली मानमालाधरादयः॥७३॥

तद्वेणुश्रृङ्गमुरलीयष्ठि–पाशादिधारिणः ।
अमीषां घटकाश्चामी धातूनां चोपहारकाः॥७४॥

भावानुवाद—भङ्गुर, भृङ्गार, सान्धिक, ग्रहिल, रक्तक, पत्रक, पत्री, मधुकण्ठ, मधुव्रत, शालिक, तालिक, माली, मान और मालाधर आदि चेट[२] हैं। ये श्रीकृष्णके वेणु[३], श‍ृङ्ग (शिङ्गा), मुरली[४], लकुटी (लाठी), पाश (गोदोहन रज्जु) आदि द्रव्योंको धारण करते हैं। ये श्रीकृष्णको गैरिक आदि धातुएँ उपहार दिया करते हैं॥७३–७४॥

---

[१] वेष–रचना आदि कार्योंमें दक्ष, धूर्त्त, बातचीत करनेमें चतुर, वशीकरण आदि क्रियाओंमें निपुण सहायक विट कहलाता है। (जैवधर्म, बत्तीसवाँ अध्याय)

[२] किसी बातका पता लगानेमें चतुर, गूढ़ कर्मोंको करनेवाला तथा प्रगल्भबुद्धि युक्त सहायक चेट कहलाता है।

[३] बारह अङ्गुली लम्बी, अँगूठे जितनी मोटी और छः छिद्रोवाली वंशीको वेणु कहते हैं।

[४] दो हाथ लम्बी, मुख–छिद्र और चार स्वर–युक्त छिद्रोंवाली वंशीको मुरली कहते है।

ताम्बूलिकाः

(ताम्बूल प्रस्तुत करनेवाले सेवक)

पृथुकाः पार्श्वगाः केलिकलालापकलाङ्कुराः।
पल्लवो मङ्गलः फुल्लः कोमलः कपिलादयः॥७५॥

सुविलास–विलासाख्य–रसाल–रसशालिनः ।
जम्बुलाद्याश्च ताम्बूल–परिष्कार–विचक्षणाः॥७६॥

भावानुवाद—पल्लव, मङ्गल, फुल्ल, कोमल, कपिल, सुविलास, विलास, रसाल, रसशाली और जम्बुल आदि सेवक श्रीकृष्णकी ताम्बूल सेवामें नियुक्त हैं। ये परिष्कार, परिच्छन्न ताम्बूलकी निर्माण–परिपाटीमें विचक्षण हैं। ये सभी श्रीकृष्णसे कम आयुवाले हैं तथा सदैव श्रीकृष्णके निकट रहते हैं। ये लीलाकथा और गीत–वाद्य आदिकी कलामें प्रारम्भिक अवस्थावाले हैं॥७५–७६॥

जलसेवकाः

(जलकी व्यवस्था करनेवाले सेवक)

पयोद–वारिदाद्याश्च नीर–संस्कारकारिणः॥७७॥

भावानुवाद—पयोद तथा वारिद आदि दास श्रीकृष्णके व्यवहारके लिए जलसे परिपूर्ण पात्रोंको उठाकर ले जाते हैं॥७७॥

वस्त्रसेवकाः

(वस्त्रोंकी धुलाई करनेवाले सेवक)

वस्त्रोपचारनिपुणाः सारङ्ग–बकुलादयः॥७८॥

भावानुवाद—सारङ्ग और बकुल आदि सेवक श्रीकृष्णकी वस्त्र–सेवामें अर्थात् वस्त्रोंकी सफाई करने तथा वस्त्रोंको सजाकर रखनेमें कुशल हैं॥७८॥

वेशकारिणः

(शृङ्गार करनेवाले सेवक)

प्रेमकन्दो महागन्धः सैरिन्ध्र–मधुकन्दलाः।
मकरन्दादयश्चामी सदा शृङ्गारकारिणः॥७९॥

भावानुवाद—प्रेमकन्द, महागन्ध, सैरिन्ध्र, मधुकन्दल और मकरन्द आदि सेवक श्रीकृष्णका शृङ्गार करते हैं॥७९॥

गान्धिकाः

(सुगन्धित द्रव्य प्रस्तुत करनेवाले सेवक)

सुमनः–कुसुमोल्लास–पुष्पहास–हरादयः ।
गन्धाङ्गराग–माल्यादि–पुष्पालंकृतिकारिणः ॥८०॥

भावानुवाद—सुमन, कुसुमोल्लास, पुष्पहास और हर आदि सेवक श्रीकृष्णके श्रीअङ्गोंमें अगुरु, कुङ्कुम इत्यादि अङ्ग रागोंको रञ्जित करते हैं। ये श्रीकृष्णको मालाएँ पहनाते हैं तथा पुष्पोंके अलङ्कार भी बनाते हैं॥८०॥

नापिताः

(नाईका कार्य करनेवाले सेवक)

नापिताः केशसंस्कारे मर्दने दर्पणार्पणे।
दक्षाः सुबन्धकर्पूरसुगन्ध–कुसुमादयः ॥८१॥

भावानुवाद—सुबन्ध, कर्पूर, सुगन्ध और कुसुम आदि सेवक श्रीकृष्णके नापित हैं। ये केश–संस्कार, देह–मर्दन (मालिश) और दर्पण–अर्पण अर्थात् दर्पण दिखाने आदि जैसी सेवाओंको बड़ी निपुणतासे सम्पन्न करते हैं॥८१॥

अपराः

(अन्यान्य कार्योंमें नियुक्त सेवक)

कोषाधिकारिणः स्वच्छसुशीलप्रगुणादयः।
विमलः कोमलाद्याश्च स्थाली–पीठादिधारकाः ॥८२॥

भावानुवाद—स्वच्छ, सुशील और प्रगुण आदि सेवक कोषाधिकारी अर्थात् भण्डार आदि सेवाकार्योंमें नियुक्त तथा विमल, कोमल आदि सेवक श्रीकृष्णके भोजन करनेकी थाली, पीढ़ा आदिको सम्भालते हैं॥८२॥

परिचारिकाः

(दासियाँ)

धनिष्ठा–चन्दनकला–गुणमाला–रतिप्रभाः ।
तरुणीन्दुप्रभा शोभारम्भाद्याः परिचारिकाः।
गृहमार्जन–संस्कारालेप–क्षीरादिकोविदाः ॥८३॥

भावानुवाद—धनिष्ठा, चन्दनकला, गुणमाला, रतिप्रभा, तरुणी, इन्दुप्रभा, शोभा और रम्भा आदि श्रीकृष्णकी परिचारिकाएँ हैं। ये सभी गृह–संस्कार अर्थात् घरकी सजावट, मार्जन, लेपन कार्य तथा दूध लाने–ले जानेके कार्यमें विशेष दक्ष हैं॥८३॥

चेट्यः

(अनेकानेक सेवाओंमें नियुक्त दासियाँ)

चेट्यः कुरङ्गी भृङ्गारी सुलम्बा लम्बिकादयः॥८४॥

भावानुवाद—कुरङ्गी, भृङ्गारी, सुलम्बा तथा लम्बिका आदि श्रीकृष्णकी चेटी अर्थात् सेविकाएँ हैं॥८४॥

चराः

(गुप्तचर)

चतुरश्चारणो धीमान् पेशलाद्याश्चरोत्तमाः।
चरन्ति गोप–गोपीषु नानावेशेन ये सदा॥८५॥

भावानुवाद—चतुर, चारण, धीमान् तथा पेशल आदि सेवक श्रीकृष्णके श्रेष्ठ गुप्तचर हैं। ये सदा अनेक प्रकारके वेशधारण करके (गुप्त भावसे) श्रीकृष्णके कार्य–सिद्ध करनेके लिए गोप–गोपी आदिके पास आया–जाया करते हैं॥८५॥

दूताः

(दूत)

दूता विशारदो तुङ्गवावदूकमनोरमाः।
नीतिसारादयः केलौ कलौ गोपीकुलेषु च॥८६॥

भावानुवाद—तुङ्ग, वावदूक, मनोरम एवं नीतिसार आदि सेवक श्रीकृष्णके दूत हैं। ये सभी कार्योंमें विशारद हैं। श्रीकृष्णकी गोपियोंके साथ केलि अर्थात् लीला सम्पादन कराने तथा कलि अर्थात् प्रेम-कलहको शान्त करानेमें सुदक्ष तथा सार्थक नाम धारण करनेवाले हैं। तुङ्ग कार्य साधनमें उन्नत, वावदूक उचित अनुचित सभी बातें बोलनेमें अतिशय पटु, मनोरम सभीके मनको हरण करनेमें समर्थ एवं नीतिसार-सार वस्तुको जाननेवाला हैं॥८६॥

श्रीकृष्णस्य दूतीप्रकरणम्

(श्रीकृष्णकी दूतियोंका विवरण)

पौर्णमासी वीरा वृन्दा वंशी नान्दीमुखी तथा।
वृन्दारिका तथा मेला मुरलाद्याश्च दूतिकाः॥८७॥

नानासन्धानकुशला तयोर्मिलनकारिणी।
कुञ्जादिसंस्क्रियाभिज्ञा वृन्दा तासु वरीयसी॥८८॥

भावानुवाद—पौर्णमासी, वीरा, वृन्दा, वंशी, नान्दीमुखी, वृन्दारिका, मेला और मुरली आदि श्रीकृष्णके निजपक्षकी दूतियाँ हैं। ये सभी नाना प्रकारसे खोज-खबरोंमें कुशल, श्रीराधा और श्रीकृष्णका मिलन करानेमें सुपटु और कुञ्जादि मिलनके स्थानोंकी सजावट करनेमें पण्डिता हैं। इनमेंसे वृन्दा सभी विषयोंमें श्रेष्ठतम हैं॥८७-८८॥

पौर्णमासी

पौर्णमास्या अङ्गकान्तिस्तप्तकाञ्चनसन्निभा।
शुक्लवस्त्रपरिधाना बहुरत्नविभूषिता॥८९॥

भावानुवाद—पौर्णमासीकी अङ्गकान्ति तप्तकाञ्चनके समान उज्ज्वल है। ये सफेद रङ्गके वस्त्र धारण करती है तथा बहुत रत्नोंसे विभूषित रहती हैं॥८९॥

पिता सुरतदेवश्च माता चन्द्रकला सती।
प्रबलस्तु पतिस्तस्या महाविद्या यशस्करी॥९०॥

भ्रातापि देवप्रस्थश्च व्रजे सिद्धा–शिरोमणिः।
नानासन्धानकुशला द्वयोः सङ्गमकारिणी ॥९१॥

भावानुवाद—पौर्णमासीके पिताका नाम सुरतदेव तथा माताका नाम चन्द्रकला है, जो बड़ी पतिव्रता हैं। इनके पतिका नाम प्रबल तथा भाईका नाम देवप्रस्थ है। ये स्वयं परम पण्डिता, प्रसिद्धा तथा व्रजमण्डलमें सिद्धा अर्थात् योगिनियोंकी शिरोमणि हैं। पौर्णमासी नाना–सन्धान (खोज करनेके) कार्योंमें कुशल तथा श्रीराधाकृष्णका मिलन करानेवाली हैं॥९०–९१॥

वीरा

वीरा नाम वरा दूती ख्यातान्या पूजिता व्रजे।
वीरा प्रगल्भवचना वृन्दा चाटूक्तिपेशला॥९२॥

भावानुवाद—अन्य श्रेष्ठ दूतीका नाम वीरा है। ये व्रजमण्डलमें पूजनीय तथा प्रसिद्ध हैं। वीरा प्रगल्भवचना अर्थात् निडरतापूर्वक सबकुछ कह देनीवाली हैं। वृन्दा[१] चाटु वचन अर्थात् मधुर तथा प्रिय वचन कहनेमें बड़ी चतुर हैं॥९२॥

एषा श्यामलकान्तिश्च शुक्लाभवसनोज्ज्वला।
नानारत्नपुष्पमाला–भूषणैर्भूषितापि च॥९३॥

भावानुवाद—वीराकी अङ्गकान्ति श्यामल वर्णकी है परन्तु शुक्लवर्णके वस्त्रोंसे उज्ज्वल अङ्गोंवाली दिखायी देती हैं। ये नानाविध पुष्पमालाओं और रत्न भूषणोंसे विभूषित रहती हैं॥९३॥

कवलः पतिरेतस्या माता च मोहिनी सती।
तस्याः पिता विशालोऽपि भगिनी कवला भवेत्॥९४॥

भावानुवाद—वीराके पतिका नाम कवल है। इनकी माताका नाम मोहिनी है, जो बड़ी पतिव्रता है। इनके पिताका नाम विशाल तथा बहिनका नाम कवला है॥९४॥

---

[१] यद्यपि वृन्दादेवीका विशेष विवरण श्लोक संख्या ९६–९८ में दिया गया है, तथापि वीरादेवीके स्वभावके वर्णन–प्रसङ्गमें इनके भी स्वभावका उल्लेख किया गया है।

जटिलायाः प्रियतमा जावटाख्यपुरस्थिता।
नानासन्धाननिपुणा द्वयोर्मिलनचेष्टिता॥९५॥

भावानुवाद—वीरा जटिलाको बहुत प्रिय तथा जावट नामक गाँवकी रहनेवाली हैं। ये नाना सन्धान कार्योंमें निपुण तथा श्रीराधाकृष्णका मिलन करानेमें विशेष चेष्टापरायण रहती हैं॥९५॥

वृन्दाया विशेषः

तप्तकाञ्चनवर्णाभा वृन्दा कान्तिर्मनोहरा।
नीलवस्त्रपरिधाना मुक्ता-पुष्प-विराजिता॥९६॥

भावानुवाद—वृन्दाकी अङ्गकान्ति तप्तकाञ्चनके समान मनोहर है। ये नीले रङ्गके वस्त्रोंको धारण करनेवाली और मुक्ता तथा पुष्पोंसे विभूषित हैं॥९६॥

चन्द्रभानुः पिता तस्याः फुल्लरा जननी तथा।
पतिरस्या महीपालो मञ्जरी भगिनी च सा॥९७॥

भावानुवाद—वृन्दाके पिताका नाम चन्द्रभानु और माताका नाम फुल्लरा है। पतिका नाम महीपाल और बहनका नाम मञ्जरी है॥९७॥

वृन्दावन-सदावासा नानाकेलीरसोत्सुका।
उभयोर्मिलनाकाङ्क्षी तयोः प्रेमपरिप्लुता॥९८॥

भावानुवाद—वृन्दा सदैव वृन्दावनमें वास करती हैं। ये अनेक प्रकारके लीलारससे उत्कण्ठित तथा श्रीराधाकृष्णके मिलन करानेमें अतिशय लालसायुक्त तथा उन्हींके प्रेममें निमग्न रहती हैं॥९८॥

नान्दीमुखी

नान्दीमुखी गौरवर्णा पट्टवस्त्रविधारिणी।
सान्दीपनिः पिता तस्या माता च सुमुखी सती॥९९॥

भ्राता मधुमङ्गलोऽस्याः पौर्णमासी पितामही।
नानारत्नभूषिताङ्गी कैशोरवयसोज्ज्वला॥१००॥

भावानुवाद—नान्दीमुखीकी अङ्गकान्ति गौरवर्णकी हैं। ये पट्टाम्बर (रेशमी वस्त्र) धारण करती हैं। इनके पिता सान्दीपनिमुनि और माता सुमुखी है, जो बड़ी पतिव्रता हैं। इनके भाईका नाम मधुमङ्गल एवं पितामहीका नाम पौर्णमासी हैं। नान्दीमुखी नाना रत्नोंसे भूषित अङ्गोंवाली तथा कैशोर अवस्थाके कारण उज्ज्वल हैं॥९९-१००॥

नानासन्धानकुशला नानाशिल्पविधायिनी।
द्वयोर्मिलननैपुण्या सदा प्रेमयुता भवेत्॥१०१॥

भावानुवाद—नान्दीमुखी नाना विषयके सन्धान कार्यमें कुशल तथा अनेक प्रकारके शिल्प अर्थात् ललित कलाके प्रयोग करनेमें तत्पर और श्रीराधाकृष्णके मिलन करानेमें सुनिपुण तथा सदैव दोनोंके प्रेममें विभोर रहती हैं॥१०१॥

साधारणभृत्याः

(साधारण भृत्योंका वर्णन)

शोभनदीपनाद्याश्च दीपिकाधारिणो मताः।
सुधाकर सुधानाद सानन्दाद्या मृदङ्गिनः।
कलावन्तस्तु महती-वादिनो गुणशालिनः॥१०२॥

भावानुवाद—शोभन तथा दीपन आदि भृत्य श्रीकृष्णके लिए प्रदीप धारण करते हैं। सुधाकर, सुधानाद और सानन्द आदि भृत्य मृदङ्ग-बजाते हैं। ये सभी गीत-वाद्य आदि चौंसठ कलाओंमें निपुण, बहुत-से गुणोंसे विभूषित तथा 'महती' अर्थात् एक विशेष प्रकारकी वीणाको[१] बजानेमें समर्थ हैं॥१०२॥

विचित्रराव-मधुररावाद्यास्तस्य वन्दिनः।
नर्त्तकाश्चन्द्रहासेन्दुहास-चन्द्रमुखादयः ॥१०३॥

---

[१] वीणा अनेक प्रकारकी होती है, यथा—विश्वावसु नामक गन्धर्वकी वीणका नाम 'वृहती', तुम्बुरु नामक गन्धर्वकी वीणाका नाम 'कणावती', सरस्वतीकी वीणाका नाम 'कच्छपी' तथा नारदकी वीणाका नाम 'महती' है।

भावानुवाद—विचित्रराव और मधुरराव आदि भृत्य श्रीकृष्णके वन्दी अर्थात् स्तुति-पाठक तथा चन्द्रहास, इन्दुहास और चन्द्रमुख आदि नर्त्तक हैं॥१०३॥

कलकण्ठः सुकण्ठश्च सुधाकण्ठादयोऽप्यमी।
भारतः सारदो विद्याविलास-सरसादयः।
सर्वप्रबन्धनिपुणा रसज्ञास्तालधारिणः॥१०४॥

भावानुवाद—कलकण्ठ, सुकण्ठ, सुधाकण्ठ, भारत, सारद, विद्याविलास और सरस आदि श्रीकृष्णके भृत्य सभी विषयोंपर आधारित प्रबन्धोंकी रचना करनेमें निपुण, रसज्ञ और सङ्गीतकी ताल देनेवाले हैं॥१०४॥

कञ्चुकादि-विनिर्माता रौचिको नाम सौचिकः।
निर्णेजकास्तु सुमुखो दुर्लभो रञ्जनादयः।
पुण्यपुञ्जस्तथा भाग्यराशिरित्यस्य हड्डिपौ॥१०५॥

भावानुवाद—सिलाई करनेमें निपुण रौचिक नामक भृत्य श्रीकृष्णका कञ्चुक अर्थात् कुर्त्ता सिलाई करता है।

सुमुख, दुर्लभ और रञ्जन आदि दास वस्त्रोंको धोनेके कार्यमें आधिकारिक रूपसे नियुक्त हैं।

पुण्यपुञ्ज और भाग्यराशि नामक दोनों दास श्रीकृष्णके घर और घरके आस-पासकी सफाई करनेवाले मेहतर हैं॥१०५॥

स्वर्णकारावलङ्कारकारौ रङ्गन-टङ्कनौ।
कुलालौ मन्थनीपारीकारौ पवन-कर्मठौ॥१०६॥

भावानुवाद—रङ्गन तथा टङ्कन नामक सुनार श्रीकृष्णके लिए अलङ्कार बनाते हैं। पवन तथा कर्मठ नामक कुम्भकार मन्थन पात्र (मटके) तथा मिट्टीके बने कसोरे, कुल्हड़ आदि अन्यान्य पात्र प्रस्तुत करते हैं॥१०६॥

वर्द्धकी वर्द्धमानाख्यः खट्वाशकटकारकौ।
सुचित्रश्च विचित्रश्च ख्यातौ चित्रकरावुभौ॥१०७॥

भावानुवाद—वर्द्धकी और वर्द्धमान नामक दो भृत्य श्रीकृष्णके लिए पलङ्ग और बैलगाड़ी आदि बनानेवाले बढ़ई हैं। सुचित्र-विचित्र नामक चित्रकार श्रीकृष्णकी प्रसन्नताके लिए रङ्ग-बिरङ्गे चित्र बनानेका कार्य करते हैं॥१०७॥

दाममन्थानकुठारपेटी-शिक्यादिकारिणः ।
कारवः कुण्ड-कण्ठोल-करण्ड-कटुलादयः॥१०८॥

भावानुवाद—कुण्ड, कण्ठोल, करण्ड, कटुल आदि दास शिल्पकार हैं। ये श्रीकृष्णकी सेवाके लिए दाम (रस्सी), मथनिया, कुठार, पेटी और शिक्का (फल, सब्जी अन्यान्य वस्तुएँ रखनेके लिए पाटकी रस्सीसे बनी हुई टोकरी) आदि प्रस्तुत करते हैं॥१०८॥

मङ्गला पिङ्गला गङ्गा पिशङ्गी मणिकस्तनी।
हंसी वंशीप्रियेत्याद्या नैचिक्यस्तस्य सुप्रियाः॥१०९॥

भावानुवाद—मङ्गला, पिङ्गला, गङ्गा, पिशङ्गी, मणिकस्तनी, हंसी और वंशीप्रिया आदि गायें श्रीकृष्णको परमप्रिय हैं तथा नैचिकी अर्थात् उत्तम गायके रूपमें विख्यात हैं॥१०९॥

पद्मगन्ध-पिशङ्गाक्षौ बलीवर्दावतिप्रियौ।
सुरङ्गाख्यः कुरङ्गोऽस्य दधिलोभाभिधः कपिः॥११०॥

भावानुवाद—पद्मगन्ध और पिशङ्गाक्ष नामक बैल श्रीकृष्णको अतिप्रिय है। श्रीकृष्णके मृगका नाम सुरङ्ग तथा बन्दरका नाम दधिलोभ है॥११०॥

व्याघ्र-भ्रमरकौ श्वानौ राजहंसः कलस्वनः।
शिखी ताण्डविकाभिख्यः शुकौ दक्ष-विचक्षणौ॥१११॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके पास व्याघ्र और भ्रमर नामक दो पालतु कुत्ते, कलस्वन नामक राजहंस, ताण्डविक नामक मयूर तथा दक्ष और विचक्षण नामक दो शुकपक्षी भी हैं॥१११॥

स्थानविवरणम्

(लीला-स्थलियोंका विवरण)

वृन्दावनं महोद्यानं श्रेयो निःश्रेयसादपि।
क्रीडागिरिर्यथार्थाख्यः श्रीमान् गोवर्द्धनो मतः ॥११२॥

नीलमण्डपिका घट्टः कन्दरा मणिकन्दली ॥११३(क)॥

भावानुवाद—व्रजमण्डल स्थित अन्यान्य वनोंकी अपेक्षा सर्वतोभावेन प्रधान वन श्रीवृन्दावन सब प्रकारके मङ्गलोंमें श्रेष्ठ मङ्गलस्वरूप है। व्रजकी लीलास्थली श्रीमान् गिरिराज गोवर्द्धनने जल और कोमल-कोमल घास इत्यादि प्रस्तुत करके गैयाओं, फल-मूल-कन्द-पानीय और विश्राम स्थल आदि प्रस्तुत करके गोपों तथा स्वच्छन्द विहार हेतु निभृत कुञ्ज, गहवर आदि प्रस्तुत करके गोपियोंके आनन्दको वर्धित किया है। इसके द्वारा इन्होंने अपने गोवर्द्धन (अर्थात् गो, गोप, गोपीके आनन्दको वर्धित करनेवाला) नामको सार्थक बनानेके साथ-ही-साथ श्रीकृष्णकी लीलामें बहुत सहायताकी है, अतएव इन्हें क्रीड़ागिरि अर्थात् विहार भूमि श्रीगिरिराज गोवर्द्धन कहकर पुकारना उचित ही है।

श्रीगोवर्द्धनमें नीलमण्डपिका घाट और मणिकन्दली नामकी कन्दरा है॥११२-११३(क)॥

घट्टो मानसगङ्गायाः पारङ्गो नाम विश्रुतः ॥११३(ख)॥

सुविलासतरा नाम तरिर्यत्र विराजते ॥११४(क)॥

भावानुवाद—मानस-गङ्गाका घाट पारङ्ग घाट नामसे विख्यात है। वहाँपर 'सुविलासतरा' नामकी नौका विराजमान है॥११३(ख)-११४(क)॥

नाम्ना नन्दीश्वरः शैलो मन्दिरं स्फुरदिन्दिरम् ॥११४(ख)॥

आस्थानी-मण्डपः पाण्डुगण्डशैलासमोज्ज्वलः।
आमोदवर्द्धनो नाम परमामोदवासितः ॥११५॥

भावानुवाद—नन्दीश्वर नामक पर्वत श्रीकृष्णका मन्दिर अर्थात् निवास स्थान है, यह इतना शोभाशाली है कि मानो साक्षात् लक्ष्मीदेवी यहाँ वास कर रही हों। इसी नन्दीश्वर पर्वतपर स्थित हल्का पीलापन लिये सफेद-सी दिखायी देनेवाली बृहद् शिलाके ऊपर

उत्तम चिह्नोंसे सुशोभित, उज्ज्वल दिखायी देनेवाला भवन श्रीकृष्णका आवास स्थान है। सभी इसे 'आमोदवर्द्धन' कहकर पुकारते हैं, क्योंकि इस भवनमें व्रजके स्थावर-जङ्गम, कीट-पतङ्ग, पशु-पक्षी, नदी, पर्वत, गोप-गोपी आदि सभीके हृदयको उन्मादित करनेवाले श्रीकृष्ण श्रीनन्द, यशोदा, बलदेव और रोहिणी मैया आदिके साथ वास करते हैं॥११४(ख)-११५॥

पावनाख्यं सरः क्रीडाकुञ्जपुञ्जस्फुरत्तटम्।
कुञ्जं काम-महातीर्थं मन्दारो मणिकुट्टिमः॥११६॥

भावानुवाद—नन्दीश्वर पर्वतकी तलहटीमें स्थित पावन सरोवर ही श्रीकृष्णका अपना सरोवर है। इसका तट बहुत मनोरम लीला-कुञ्जों द्वारा शोभायमान है। श्रीकृष्णके कुञ्जका नाम काम-महातीर्थ तथा उसमें बनी मणिमय कोठरीका नाम मन्दार है॥११६॥

न्यग्रोधराजो भाण्डीरः कदम्बस्तु कदम्बराट्।
अनङ्गरङ्गभूर्नाम लीलापुलिनमुच्यते॥११७॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके लीलापयोगी न्यग्रोधराज अर्थात् प्रसिद्ध वट वृक्षका नाम भाण्डीर तथा कदम्ब वृक्षका नाम कदम्बराज है। लीला-कुञ्जोंसे सुशोभित यमुनापुलिन अनङ्गरङ्ग भूमिके नामसे प्रसिद्ध है॥११७॥

यमुनाया महातीर्थं खेलातीर्थं तदुच्यते।
परमप्रेष्ठया सार्द्धं सदा यत्र स खेलति॥११८॥

भावानुवाद—श्रीकृष्ण अपनी परम प्रेयसी श्रीमती राधाके साथ जिस कुञ्जमें सदैव लीला-विलास करते हैं, श्रीयमुनाके महातीर्थ स्वरूप उस कुञ्जको खेलातीर्थ कहते हैं॥११८॥

श्रीकृष्णस्य व्यवहार्यद्रव्याणि

(श्रीकृष्ण द्वारा व्यवहार किये जानेवाले द्रव्योंका वर्णन)

शरदिन्दुस्तु मुकुरो व्यजनं मधुमारुतम्।
लीलापद्मं सदास्मेरं गोण्डुकश्चित्रकोरकः॥११९॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके दर्पणका नाम शरदिन्दु, तालवृंत (पंखे) का नाम मधुमारुत, लीलाकमलका नाम सदास्मेर तथा गेंदका नाम चित्रकोरक है॥११९॥

शिञ्जिनी मञ्जुलशरः मणिबन्धाटनीयुगम्।
विलासकार्मणं नाम कार्मुकं स्वर्णचित्रितम्॥१२०॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके सोनेसे बने धनुषका नाम विलास-कार्मण हैं। इस धनुषकी डोरीका नाम मञ्जुलशर है, जिसके दोनों किनारे मणियोंसे बँधे हुए हैं॥१२०॥

दिव्यरत्नस्फुरन्मुष्टिस्तुष्टिदा नाम कर्त्तरी।
मन्द्रघोषो विषाणोऽस्य वंशी भुवनमोहिनी॥१२१॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णकी कटारी (कैंचीका) नाम तुष्टिदा है, इसकी मुट्ठी दिव्य रत्नोंसे आबद्ध होनेके कारण देखनेमें बहुत ही मनोरम है। विषाण अर्थात् बजानेवाले सींगेका नाम मन्द्रघोष तथा वंशीका नाम भुवनमोहिनी है॥१२१॥

राधाहृन्मीनबड़िशी महानन्दाभिधापि च।
षड्रन्ध्रबन्धुरा वेणुः ख्याता मदनझंकृतिः॥१२२॥

भावानुवाद—यह वंशी श्रीराधाके चित्तस्वरूप मत्स्यको अपनी ध्वनिरूपी बडिश (काँटे) द्वारा वशीभूत करके श्रीकृष्णके हृदयको परम आनन्दित कर देती है, इसलिए इसे महानन्दा भी कहते हैं। इस वेणुके छह छिद्र मदनझंकृतिके नामसे प्रसिद्ध हैं॥१२२॥

काकली-मूकितपिका मुरली सरलाभिधा।
गौडी च गुर्जरी चेति रागावत्यन्तवल्लभौ॥१२३॥

भावानुवाद—कोकिल जैसे मन्द-मधुर स्वरको अलापनेवाली श्रीकृष्णकी मुरलीका नाम सरला है। गौडी और गुर्जरी नामक दो राग श्रीकृष्णको अतिप्रिय हैं॥१२३॥

जप्यः साध्याङ्कितः प्रेष्ठाभिधानं मनुरद्भुतः॥१२४(क)॥

भावानुवाद—साध्य वस्तुको प्राप्त करनेके लिए श्रीकृष्ण द्वारा जपा जानेवाला अद्भुत मन्त्र उनकी प्रेयसी श्रीमती राधाजीका नाम है॥१२४(क)॥

दण्डस्तु मण्डनो नाम वीणा नाम तरङ्गिणी।
पाशौ पशुवशीकारौ दोहन्यमृतदोहनी॥१२४(ख)॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके दण्डका नाम मण्डन तथा वीणाका नाम तरङ्गिणी है। गाय दोहनेके लिए पशुवशीकार नामक दो रस्सियाँ हैं। दोहन पात्रका नाम अमृतदोहनी है॥१२४(ख)॥

भूषणानि

(श्रीकृष्णके आभूषणोंका वर्णन)

अम्बार्पिता महारक्षा नवरत्नाङ्किता भुजे॥१२५॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णकी दोनों भुजाओंपर, माता यशोदा द्वारा बाँधे गये नौ अमूल्य रत्नोंसे[१] जड़ित महारक्षा-कवच विराजित हैं॥१२५॥

अङ्गदे रङ्गदाभिख्ये चङ्कने नाम कङ्कणे।
मुद्रा रत्नमुखी पीतं वासो निगम-शोभनम्॥१२६॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके दोनों अङ्गदों अर्थात् बाजूबन्दोंका नाम रङ्गद, कङ्कणोंका नाम चङ्कन, नामाङ्कित मुद्रिका (अँगूठी) का नाम रत्नमुखी तथा पीताम्बर वस्त्रका नाम निगमशोभन अर्थात् श्रुतियोंकी शोभा बढ़ानेवाला है॥१२६॥

किङ्किणी कलझङ्कारा मञ्जीरौ हंसगञ्जनौ।
कुरङ्गनयना-चित्तकुरङ्गहर-शिञ्जितौ ॥१२७॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णकी किङ्किणी अर्थात् करधनीका नाम कलझङ्कारा है तथा नुपूरोंका नाम हंसगञ्जन है। जिनकी मधुर झँकार कुरङ्गनयना (हरिण जैसी आँखोंवाली) गोपियोंके कुरङ्गरूपी चञ्चल चित्तका हरण कर लेती है॥१२७॥

---

[१] मुक्ता, माणिक्य, वैदूर्य, गोमेद (लहसनिया) वज्र, विद्रुम, पद्मराग, मरकत और नील—नवरत्न कहलाते हैं।

हारस्तारावली नाम मणिमाला तडित्प्रभा।
रुद्धराधाप्रतिकृतिर्निष्को हृदयमोदनः ॥१२८॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके हारका नाम तारावली, मणियोंसे बनी हुई मालाका नाम तड़ित्प्रभा तथा वक्षःस्थल स्थित पदकका नाम हृदयमोहन है, जिसके अन्दर श्रीराधाकी छवि बनी हुई है॥१२८॥

कौस्तुभाख्यो मणिर्येन प्रविश्य हृदमौरगम्।
कालियप्रेयसीवृन्दहस्तैरात्मोपहारितः ॥१२९॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णकी मणिका नाम कौस्तुभ है। श्रीकृष्णने जिस समय कालियह्रदमें प्रवेश किया था, उस समय कालिय नागकी प्रेयसियोंने अपने हाथोंसे श्रीकृष्णको यह मणि उपहारमें दी थी॥१२९॥

कुण्डले मकराकारे रतिरागाधिदैवते।
किरीटं रत्नपाराख्यं चूडा चामरडामरी॥१३०॥

भावानुवाद—दोनों मकराकार कुण्डल रतिरागधिदैवता नामसे प्रसिद्ध है। किरीट (मुकुट) का नाम रत्नपार तथा चूड़ाका नाम चामरडामरी है॥१३०॥

नवरत्नविडम्बाख्यं शिखण्डं मुकुटं विदुः।
रागवल्ली तु गुञ्जाली तिलकं दृष्टिमोहनम्॥१३१॥

भावानुवाद—श्रीकृष्णके मस्तकपर स्थित शिखण्ड अर्थात् मयूरपुञ्छसे बने हुए मुकुटका नाम 'नवरत्नविडम्ब', गुञ्जामालाका नाम रागवल्ली तथा तिलकका नाम दृष्टिमोहन है॥१३१॥

पत्रपुष्पमयी माला वनमाला पदावधिः।
वैजयन्ती तु कुसुमैः पञ्चवर्णै र्विनिर्मिता॥१३२॥

भावानुवाद—अनेक प्रकारके पत्र और पुष्पोंसे बनी, चरणकमलों तक लटकनेवाली श्रीकृष्णकी मालाका नाम वनमाला तथा पाँच प्रकारके भिन्न-भिन्न रङ्गोंवाले पुष्पोंसे बनी हुई मालाका नाम वैजयन्ती माला है॥१३२॥

जन्मनालंकृता पुण्या कृष्णा भाद्राष्टमी निशा।
प्रेयस्या सह रोहिण्या शशी यस्यामुदेयिवान्॥१३३॥

भावानुवाद—भाद्रमासकी कृष्णपक्षीय अष्टमीकी रात्रि ही श्रीकृष्णकी जन्मतिथि है, यह तिथि श्रीकृष्णके जन्म द्वारा अलंकृत होकर संसारमें अपने गौरवको प्रकाशित कर रही है। इस तिथिमें चन्द्रमा अपनी प्रेयसी रोहिणी[१] नक्षत्रके साथ उदित होते हैं॥१३३॥

श्रीकृष्णस्य प्रेयस्यः

(श्रीकृष्णकी प्रेयसियाँ)

अथ तस्यानुकीर्त्यन्ते प्रेयस्यः परमाद्भुताः।
रमादिभ्योऽप्युरुप्रेमसौभाग्यभरभूषिताः ॥१३४॥

भावानुवाद—अब लक्ष्मी आदिसे भी अत्यधिक प्रेमरूपी सौभाग्यके अतिशयसे विभूषित परम अद्भुत श्रीकृष्णकी प्रेयसियोंका गुणगान किया जा रहा है—॥१३४॥

श्रीराधा

(श्रीमती राधारानीके रूप लावण्यका वर्णन)

आभीरसुभ्रुवां श्रेष्ठा राधा वृन्दावनेश्वरी।
अस्याः सख्यश्च ललिताविशाखाद्याः सुविश्रुताः॥१३५॥

भावानुवाद—व्रजकी गोपाङ्गनाओंमें वृन्दावनेश्वरी श्रीराधा सर्वश्रेष्ठ हैं। ललिता और विशाखा आदि सखियाँ श्रीराधाकी प्रधान सखीके रूपमें विख्यात हैं॥१३५॥

चन्द्रावली च पद्मा च श्यामा शैब्या च भद्रिका।
तारा विचित्रा गोपाली पालिका चन्द्रशालिका॥१३६॥

मङ्गला विमला लीला तरलाक्षी मनोरमा।
कन्दर्पमञ्जरी मञ्जुभाषिणी खञ्जनेक्षणा॥१३७॥

---

[१] यह रथके आकारका और पाँच तारोंसे बना माना जाता है। पुराणानुसार यह दक्षकी कन्या और चन्द्रमाकी पत्नी है।

कुमुदा कैरवी शारी शारदाक्षी विशारदा।
शङ्करी कुङ्कुमा कृष्णा शारङ्गीन्द्रावली शिवा॥१३८॥
तारावली गुणवती सुमुखी केलिमञ्जरी।
हारावली चकोराक्षी भारती कमलादयः॥१३९॥

भावानुवाद—चन्द्रावली, पद्मा, श्यामा, शैब्या, भद्रिका, तारा, विचित्रा, गोपाली, पालिका, चन्द्रशालिका, मङ्गला, विमला, लीला, तरलाक्षी, मनोरमा, कन्दर्पमञ्जरी, मञ्जुभाषिणी, खञ्जनेक्षणा, कुमुदा, कैरवी, शारी, शारदाक्षी, विशारदा, शङ्करी, कुङ्कुमा, कृष्णा, शारङ्गी, इन्द्रावली, शिवा, तारावली, गुणवती, सुमुखी, केलिमञ्जरी, हारावली, चकोराक्षी, भारती और कमला आदि गोपाङ्गनाएँ श्रीकृष्णकी प्रेयसियाँ हैं॥१३६-१३९॥

आसां यूथानि शतशः ख्यातान्याभीरसुभ्रुवाम्।
लक्षसंख्यास्तु कथिता यूथे यूथे वराङ्गनाः॥१४०॥

भावानुवाद—इन गोपाङ्गनाओंके सैकड़ों यूथ हैं। इन यूथोंमें विभक्त वराङ्गनाओंकी संख्या भी लाखोंमें है॥१४०॥

मुख्याः स्युस्तेषु यूथेषु कान्ताः सर्वगुणोत्तमाः।
राधा चन्द्रावली भद्रा श्यामला पालिकादयः॥१४१॥

भावानुवाद—उन सब यूथोंमेंसे राधा, चन्द्रावली, भद्रा, श्यामला और पालिका आदि अपने सर्वोत्तम गुणोंके कारण मुख्य कान्ताएँ कहलाती हैं॥१४१॥

तत्रापि सर्वथा श्रेष्ठे राधाचन्द्रावलीत्युभे।
यूथयोस्तु तयोः सन्ति कोटिसंख्या मृगीदृशः॥१४२॥

भावानुवाद—इनमेंसे पुनः श्रीराधा तथा श्रीचन्द्रावली—ये दो कान्ताएँ सर्वश्रेष्ठ हैं। इन दोनों कान्ताओंके अपने-अपने यूथमें करोड़ोंकी संख्यामें मृगनयना व्रजङ्गनाएँ वर्त्तमान हैं॥१४२॥

तयोरप्युभयोर्मध्ये सर्वमाधुर्यतोऽधिका।
राधिका विश्रुतिं याता यद्गान्धर्वाख्यया श्रुतौ॥१४३॥

भावानुवाद—इन दोनों कान्ताओंमें भी समस्त प्रकारके माधुर्यरूपी गुणोंकी पराकाष्ठाके कारण श्रीराधाजी ही प्रधान कान्ताके रूपमें प्रसिद्ध हैं, श्रुतियोंमें इन्हें 'गान्धर्वा' कहा गया है॥१४३॥

असमानोर्द्धमाधुर्यधुर्यो गोपेन्द्रनन्दनः।
यस्याः प्राणपरार्द्धानां परार्द्धादपि वल्लभः॥१४४॥

भावानुवाद—माधुर्यमें न तो कोई जिनके समान और न ही कोई जिनसे श्रेष्ठ हैं, ऐसे गोपन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण ही श्रीराधाजीके वल्लभ हैं। परार्द्ध[१] संख्याको परार्द्ध संख्यासे गुणा करनेपर जो संख्या होती है, श्रीमती राधाको श्रीकृष्ण अपने प्राणोंसे उतने गुना अधिक प्रिय हैं।

वैदिक गणनाके अनुसार गणितके सबसे छोटे अङ्कको एक, उसका दस गुना दस, दसका दस गुना शत (सौ), सौका दस गुना सहस्र (एक हजार), सहस्रका दस गुना अयुत (दस हजार), अयुतका दस गुना लक्ष (एक लाख), लक्षका दस गुना नियुत (दस लाख), नियुतका दस गुना कोटि (एक करोड़), कोटिका दस गुना अर्बुद (दस करोड़), अर्बुदका दस गुना वृन्द (एक अरब), वृन्दका दस गुना खर्व (दस अरब), खर्वका दस गुना निखर्व (एक खरब), निखर्वका दस गुना शंख (दस खरब), शंखका दस गुना पद्म (?), पद्मका दस गुना सागर, सागरका दस गुना अन्त्य, अन्त्यका दस गुना मध्य और मध्यका दस गुना परार्द्ध कहलाता है।

कहनेका तात्पर्य यह है कि अनन्त परार्द्धको अनन्त परार्द्धसे गुना करनेपर जो संख्या हम चिन्ता कर सहते हैं, उससे भी अनन्त गुना अधिक श्रीराधाजी श्रीकृष्णसे प्रीति करती हैं अर्थात् श्रीराधाजी कृष्णसे कितनी प्रीति करती हैं, उसकी कल्पना करना किसीके लिए भी सम्भवपर नहीं है॥१४४॥

श्रीराधारूपलावण्यं विशेषात् परिकीर्त्यते।
नानावैदग्धीनैपुण्या सुधार्णव–स्वरूपिणी॥१४५॥

भावानुवाद—अब श्रीराधाके रूप–लावण्यका विशेष रूपसे गुणगान किया जा रहा है।

श्रीराधा विविध प्रकारकी वैदग्धियों (कलाचातुर्य) में परम पण्डिता और अमृकी सागर स्वरूपिणी हैं॥१४५॥

नवगोरोचनाभातिर्द्रुतहेमसमप्रभा ।
किम्वा स्थिरा विद्युदिव रूपातिपरमोज्ज्वला॥१४६॥

भावानुवाद—श्रीराधा नवीन गोरोचना, तपाये हुए सुवर्ण अथवा स्थिर-विद्युतके समान परम उज्ज्वल गौर अङ्गोंवाली है॥१४६॥

विचित्रं नीलवसनं तस्याश्च परिशोभितम्।
नानामुक्ताभूषिताङ्गी नानापुष्पविराजिता॥१४७॥

भावानुवाद—श्रीराधा परम शोभायमान नीले रङ्गके वस्त्रोंको धारण करती है। ये नाना प्रकारकी मुक्ताओंसे भूषित अङ्गोंवाली तथा नाना पुष्पोंसे सुशोभित है॥१४७॥

दीर्घकेशी सुलावण्य-मुक्तामालासुशोभिता।
पुष्पमाला-सुविन्यासा सुवेणी परमोज्ज्वला॥१४८॥

भावानुवाद—श्रीराधाके अङ्ग लावण्यसे परिपूर्ण तथा मुक्ता मालाओंसे सुशोभित हैं। इनके केश बहुत लम्बे तथा अनूठी वेणी सुन्दर रूपसे गूँथी गयी पुष्पमालाओं द्वारा परम शोभायमान है॥१४८॥

सुभालः परमोद्दीप्तः सिन्दूर-परिभूषितः।
नानाचित्रालका भान्ति चित्रपत्रसुशोभिताः॥१४९॥

भावानुवाद—श्रीराधाका सुन्दर ललाट सिन्दूरके बिन्दुसे सुशोभित होनेके कारण अत्यन्त दीप्तिमान हो रहा है। उनके कपोलोंपर लटकती हुई विचित्र अलकावली विचित्र तिलक रचनाके साथ मिलकर शोभाकी सीमाको भी पार कर रही है॥१४९॥

बाहुयुग्मं सुलावण्यं नीलकङ्कणशोभितम्।
अनङ्गदण्डलावण्यमोहिनी परमा भवेत्॥१५०॥

भावानुवाद—श्रीराधाके नीले रङ्गकी मणियोंसे बने कङ्गनोंके द्वारा सुशोभित सुलावण्ययुक्त बाहुयुगल अनङ्गदण्डलावण्य अर्थात् लावण्यमय

भुजदण्डवाले कामदेवके मनको भी वशीभूतकर मोहित बना देनेवाले हैं॥१५०॥

नयनोत्पलयुग्मञ्च आकर्णपरिशोभितम्।
कज्ज्लोज्ज्वलदीप्तिश्च त्रैलोक्यजयिनी परा॥१५१॥

भावानुवाद—श्रीराधाके विस्तृत नयनकमल कानों तक शोभायमान हैं। इन नयनोत्पलोंमें काजलकी उज्ज्वल दीप्ति विराजमान है। ऐसा लग रहा है मानो श्रीराधाके नयनकमल अपनी परम शोभासे त्रिलोकीकी शोभापर विजय प्राप्त कर रहे हैं॥१५१॥

नासिका तिलपुष्पाभा मुक्तावेशरशोभिता।
नाना सुगन्धयुक्ता सा परा दीप्तिमती भवेत्॥१५२॥

भावानुवाद—श्रीराधिकाकी नासिका तिल पुष्पके समान सुन्दर तथा मुक्तायुक्त बेसर (नाकके आभूषण) द्वारा सुशोभित है। विविध प्रकारकी सुगन्धियोंसे सुवासित श्रीराधा परम सौदर्न्यवती हैं॥१५२॥

रत्नताडङ्कयुग्मञ्च नानाचित्र विनिर्मितम्।
ओष्ठाधरः सुधारम्यो रक्तोत्पलविनिर्जितः॥१५३॥

भावानुवाद—श्रीराधाके रत्नोंसे जड़े हुए ताडङ्क (कानके आभूषण) नाना प्रकारके चित्र-विचित्र शिल्प कार्यके द्वारा सुन्दर रूपसे निर्मित हैं। अधर सुधासे भी अधिक कमनीय तथा अपनी लालिमा द्वारा लाल कमलको भी तिरस्कृत (पराजित) कर रहे हैं॥१५३॥

मुक्तामाला दन्तपङ्क्ती रसनापरिशोभिता।
मुखपद्मं सुलावण्यं कोटिचन्द्रप्रभाकरम्।
बिम्बवच्च सुधारम्यप्रेमहास्ययुतं भवेत्॥१५४॥

भावानुवाद—श्रीराधाकी अति सुन्दर रसना (जिह्वा) द्वारा सुशोभित दन्तपंक्ति मुक्तामालाके समान उज्ज्वल है। सुन्दर लावण्यसे युक्त मुखकमल कोटि-कोटि चन्द्रमाओंकी शोभाका आकरस्वरूप तथा अमृतके समान रमणीय प्रेममयी मुस्कानसे युक्त है॥१५४॥

चिबुकस्य सुलावण्यं कन्दर्पमोहनं परम्।
मसिबिन्दुः सुलावण्यो हेमाब्जे भ्रमरी यथा॥१५५॥

भावानुवाद—श्रीराधाका चिबुक जिस सुन्दर लावण्यसे युक्त है, उसपर कन्दर्प भी विशेष रूपसे मुग्ध हो जाता है। उक्त चिबुकमें बने मसि (काजलके) बिन्दुको देखकर ऐसा लगता है मानो स्वर्ण कमलके बीचमें भ्रमरी बैठी हुई हो॥१५५॥

कण्ठदेशे चित्ररेखा मुक्तामालाविभूषिता।
पृष्ठग्रीवा सुरम्या च पार्श्वेऽपि मोहिनी भवेत्॥१५६॥

भावानुवाद—श्रीराधाका कण्ठ (सुन्दरतामें चार चाँद लगानेवाला) चित्ररेखाओंसे युक्त कण्ठ मुक्ता मालाओंसे विभूषित है। पीठ और ग्रीवा (गर्दनके पीछेका भाग) सुन्दर रमणीय है तथा दोनों पार्श्व (उदर और पीठके मध्य स्थित भाग) मनमोह लेनेवाले हैं॥१५६॥

वक्षःस्थलं सुलावण्यं हेमकुम्भसुशोभितम्।
कञ्चुल्याच्छादितं तस्या मुक्ताहार-विराजितम्॥१५७॥

भावानुवाद—श्रीराधाका सुलावण्ययुक्त वक्षःस्थल सुवर्णमय कुम्भ (स्तन-युगल) से सुशोभित, कञ्चुली द्वारा आच्छादित तथा मुक्ताहारसे सुशोभित है॥१५७॥

सुबाहुयुगलं तस्या लावण्यमोहकारि च।
रत्नाङ्गदे तयोर्मध्ये वलयापरिशोभिते॥१५८॥

भावानुवाद—श्रीराधाकी लावण्य मोहनकारी सुन्दर भुजाओंमें स्थित रत्नमय अङ्गदों (बाजूबन्दों) के मध्य भागमें वलय (लटकते हुए छल्ले) शोभा पा रहे हैं॥१५८॥

रत्नकङ्कणदीप्ते च रत्नगुच्छ-विराजिते।
रक्तोत्पलं हस्तयुग्मं नखचन्द्रसुदीप्तकम्॥१५९॥

भावानुवाद—श्रीराधाके हाथ रत्नजड़ित कङ्गनों द्वारा शोभायमान हैं तथा उनमें रत्नमय गुच्छ (मुक्ताओंसे बने बत्तीस लड़ियोंवाले

कङ्गन) भी विराजित हैं। लाल कमलकी भाँति दिखायी देनेवाले उनके हस्तकमल नखचन्द्रोंसे निकलनेवाली अनोखी छटा द्वारा झलमल-झलमल कर रहे हैं॥१५९॥

करचिह्नानि

(श्रीराधाकी हथेलियोंपर अङ्कित चिह्नोंका वर्णन)

भृङ्गाम्भोज-शशिकला कुण्डलच्छत्र-यूपकः।
शंखवृक्ष-कुसुमक-चामर-स्वस्तिकादयः ॥१६०॥

एते चिह्नाः शुभकरा नानाचित्रविराजिताः।
कराङ्गुल्यः सुदीप्ताश्च रत्नाङ्गुरीय-भूषिताः॥१६१॥

भावानुवाद—श्रीराधाके हस्तकमल भ्रमर, पद्म, चन्द्रकला, कुण्डल, छत्र, यूप (विजय-स्मारक), शंख, वृक्ष, कुसुम, चामर और स्वस्तिक आदि नाना प्रकारके मङ्गलजनक चित्रोंसे सुशोभित हैं। उनके हाथोंकी सुदीप्त अङ्गुलियाँ रत्नमय अँगूठियोंसे विभूषित हैं॥१६०-१६१॥

उदरं मधुलावण्यं निम्ननाभिसुशोभितम्।
सुधारस-प्रपूर्णञ्च त्रैलोक्य-मोहनं परम्॥१६२॥

भावानुवाद—श्रीराधाका उदर मधुसे भी अधिक लावण्यमय तथा गम्भीर नाभि द्वारा सुशोभित है। यह सुधारससे परिपूर्ण होनेके कारण त्रिलोकीको अत्यधिक मोहित करनेवाला है॥१६२॥

क्षीणमध्यं कटितटं लावण्यभरभङ्गुरम्।
वलित्रयीलताबद्धा किङ्किणीजालशोभिताम्॥१६३॥

भावानुवाद—मध्य भागसे क्षीण होते-होते श्रीराधाके नितम्ब उस लावण्यमय कमरको स्पर्श करते हैं, जो त्रिवलीरूप लताके द्वारा बद्ध और जालके आकार जैसी घुँघरुओंसे जड़ी करधनी द्वारा सुशोभित है॥१६३॥

ऊरु द्वौ रामरम्भेव मनोज-चित्तमोहनौ।
जानू द्वौ च सुलावण्यौ नानाकेलि-रसाकरौ॥१६४॥

भावानुवाद—श्रीराधाकी केलेके आन्तर भाग जैसी दिखायी देनेवाली मनोहर जघाएँ कन्दर्पके भी चित्तको मोहित करनेवाली हैं। सुन्दर लावण्ययुक्त घुटने विविध केलिरसके आकरस्वरूप हैं॥१६४॥

श्रीपादपद्मयुग्मञ्च मणिनूपुरभूषितम्।
वङ्कराजसुलावण्य-पदाङ्गुरीय-शोभितम् ॥१६५॥

भावानुवाद—मणियोंसे बने नुपूरों द्वारा विभूषित श्रीराधाके पादपद्मयुगल सुलावण्यसे परिपूर्ण वङ्कराज (तलवोंके नीचेवाले धुमावदार स्थान) द्वारा सुसज्जित तथा श्रीचरणोंकी अङ्गुलियाँ बिछियों द्वारा सुशोभित हैं॥१६५॥

चरणचिह्नानि

(श्रीराधाके चरणचिह्न)

शंखेन्दु-कुञ्जर-यवैरङ्कुशोषु-रथध्वजैः ।
तोमर-स्वस्ति-मत्स्यादि शुभचिह्नौ पादावपि॥१६६॥

भावानुवाद—श्रीराधाके पादपद्मोंमें शंख, चन्द्र, हाथी, यव (जौ), अंकुश, रथ, ध्वजा, डोमर (डमरु), स्वस्तिक और मत्स्य आदि शुभचिह्न विराजित हैं॥१६६॥

आपञ्चदशवर्षञ्च वयः कैशोरकोज्ज्वलम्॥१६७॥

भावानुवाद—श्रीराधाकी पन्द्रह वर्षीय कैशोर अवस्था उज्ज्वलतासे परिपूर्ण हैं॥१६७॥

मातृकोटेरपि स्निग्धा यत्र गोपेन्द्रगेहिनी॥१६८(क)॥

भावानुवाद—श्रीराधाके प्रति गोपेन्द्र गृहिणी श्रीमती यशोदादेवी करोड़ो-करोड़ो माताओंके वात्सल्य प्रेमसे भी अधिक स्नेह रखती हैं॥१६८(क)॥

वृषभानुः पिता तस्या वृषभानुरिवोज्ज्वलः॥१६८(ख)॥

रत्नगर्भाक्षितौ ख्याता कीर्त्तिदा जननी भवेत्॥१६९(क)॥

भावानुवाद—श्रीराधाके पिता वृषभानु महाराज वृष राशिमें स्थित भानु अर्थात् सूर्यके समान उज्ज्वल हैं। श्रीराधाकी माताका नाम श्रीकीर्त्तिदा सुन्दरी है। ये जगत्में रत्नगर्भाके नामसे विख्यात हैं॥१६८(ख)-१६९(क)॥

पितामहो महीभानुरिन्दुर्मातामहो मतः ॥१६९(ख)॥
मातामही-पितामह्यौ मुखरा-सुखदे उभे॥१७०(क)॥

भावानुवाद—श्रीराधाके पितामह (दादा) का नाम महीभानु तथा मातामह (नाना) का नाम इन्दु है। श्रीराधाकी पितामही (दादी) का नाम सुखदा तथा मातामही (नानी) का नाम मुखरा है॥१६९(ख)-१७०(क)॥

रत्नभानुः सुभानुश्च भानुश्च भ्रातरः पितुः ॥१७०(ख)॥

भावानुवाद—रत्नभानु, सुभानु और भानु—ये तीनों पिता श्रीवृषभानु महाराजके भाई अर्थात् श्रीराधाके चाचा हैं॥१७०(ख)॥

भद्रकीर्त्तिर्महाकीर्त्तिः कीर्त्तिचन्द्रश्च मातुलाः।
मातुल्यो मेनका षष्ठी गौरी धात्री च धातकी॥१७१॥

भावानुवाद—भद्रकीर्त्ति, महाकीर्त्ति, कीर्त्तिचन्द्र, ये तीनों श्रीराधाके मामा तथा मेनका, षष्ठी, गौरी, धात्री और धातकी, ये पाँचो मामियाँ हैं॥१७१॥

स्वसा कीर्त्तिमती मातुर्भानुमुद्रा पितृस्वसा।
पितृस्वसृपतिः काशो मातृस्वसृपतिः कुशः॥१७२॥

भावानुवाद—श्रीराधाकी माताकी बहन अर्थात् मौसीका नाम कीर्त्तिमती तथा पिताकी बहन अर्थात् बुआका नाम भानुमुद्रा है। फूफाका नाम काश तथा मौसाका नाम कुश है॥१७२॥

श्रीदामा पूर्वजो भ्राता कनिष्ठानङ्गमञ्जरी।१७३(क)॥

भावानुवाद—श्रीराधाके बड़े भाईका नाम श्रीदाम तथा छोटी बहनका नाम श्रीअनङ्गमञ्जरी है॥१७३(क)॥

श्वशुरो वृकगोपश्च देवरो दुर्मदाभिधः ॥१७३(ख)॥

श्वश्रूस्तु जटिला ख्याता पतिमन्योऽभिमन्युकः।
ननन्दा कुटिला-नाम्नी सदाच्छिद्रविधायिनी ॥१७४॥

भावानुवाद—श्रीराधाके ससुरका नाम वृकगोप और देवरका नाम दुर्मद है। श्रीराधाकी सासका नाम जटिला तथा पति अभिमन्यु पतिम्मन्य अर्थात् केवलमात्र पतिका अभिमान करनेवाला है। सब समय दोषोंका अनुसन्धान करनेमें तत्पर रहनीवाली नन्दका नाम कुटिला है॥१७३(क)-१७४॥

परमप्रेष्ठसख्यस्तु ललिता सविशाखिका।
सुचित्रा चम्पकलतारङ्गदेवीसुदेविका।
तुङ्गविद्येन्दुलेखे ते अष्टौ सर्वगणाग्रिमाः ॥१७५॥

भावानुवाद—ललिता, विशाखा, सुचित्रा, चम्पकलता, रङ्गदेवी, सुदेवी, तुङ्गविद्या और इन्दुलेखा नामक आठ परम प्रेष्ठ सखियाँ श्रीराधाकी सखियोंमें अग्रगण्य अर्थात् प्रमुख हैं॥१७५॥

प्रियसख्यः

(श्रीराधाकी प्रियसखियाँ)

प्रियसख्यः कुरङ्गाक्षी मण्डली मणिकुण्डला।
मालती चन्द्रलतिका माधवी मदनालसा ॥१७६॥

मञ्जुमेधा शशिकला सुमध्या मधुरेक्षणा।
कमला कामलतिका गुणचूड़ा वराङ्गदा ॥१७७॥

माधुरी चन्द्रिका प्रेममञ्जरी तनुमध्यमा।
कन्दर्पसुन्दरी मञ्जुकेशीत्याद्यास्तु कोटिशः ॥१७८॥

भावानुवाद—कुरङ्गाक्षी, मण्डली, मणिकुण्डला, मालती, चन्द्रलतिका, माधवी, मदनालसा, मञ्जुमेधा, शशिकला, सुमध्या, मधुरेक्षणा, कमला, कामलतिका, गुणचूड़ा, वराङ्गदा, माधुरी, चन्द्रिका, प्रेममञ्जरी, तनुमध्यमा, कन्दर्पसुन्दरी और मञ्जुकेशी आदि श्रीराधाकी करोड़ों-करोड़ों प्रिय सखियाँ हैं॥१७६-१७८॥

जीवितसख्यः

(जीवित सखियाँ अर्थात् प्राण सखियाँ)

उक्ता जीवितसख्यस्तु लासिका केलीकन्दली।
कादम्बरी शशिमुखी चन्द्ररेखा प्रियंवदा ॥१७९॥

मदोन्मदा मधुमती वासन्ती कलभाषिणी।
रत्नावली मणिमती कर्पूरलतिकादयः ॥१८०॥

भावानुवाद—लासिका, केलीकन्दली, कादम्बरी, शशिमुखी, चन्द्ररेखा, प्रियंवदा, मदोन्मदा, मधुमती, वासन्ती, कलभाषिणी, रत्नावली, मणिमती और कर्पूरलतिका आदि श्रीराधाकी जीवित सखियाँ हैं॥१७९-१८०॥

नित्यसख्यः

(नित्य सखियाँ)

नित्यसख्यस्तु कस्तूरी मनोज्ञा मणिमञ्जरी।
सिन्दूरा चन्दनवती कौमुदी मदिरादयः ॥१८१॥

भावानुवाद—कस्तूरी, मनोज्ञा, मणिमञ्जरी, सिन्दूरा, चन्दनवती, कौमुदी और मदिरा आदि श्रीराधाकी नित्यसखियाँ हैं॥१८१॥

श्रीराधाया मञ्जर्यः

(श्रीमती राधिकाकी मञ्जरियाँ)

श्रीरूपमञ्जरी रागमञ्जरी रतिमञ्जरी।
लवङ्गमञ्जरी गुणमञ्जरी रसमञ्जरी ॥१८२॥

विलासमञ्जरी प्रेममञ्जरी मणिमञ्जरी।
सुवर्णमञ्जरी काममञ्जरी रत्नमञ्जरी ॥१८३॥

कस्तूरीमञ्जरी गन्धमञ्जरी नेत्रमञ्जरी।
श्रीपद्ममञ्जरी लीलामञ्जरी हेममञ्जरी।
भानुमत्यन्यपर्याया सुप्रेमा रतिमञ्जरी ॥१८४॥

भावानुवाद—श्रीरूपमञ्जरी, रागमञ्जरी, रतिमञ्जरी, लवङ्गमञ्जरी, गुणमञ्जरी, रसमञ्जरी, विलासमञ्जरी, प्रेममञ्जरी, मणिमञ्जरी,

सुवर्णमञ्जरी, काममञ्जरी, रत्नमञ्जरी, कस्तूरीमञ्जरी, गन्धमञ्जरी, नेत्रमञ्जरी, श्रीपद्ममञ्जरी, लीलामञ्जरी और हेममञ्जरी आदि श्रीराधाकी मञ्जरियाँ हैं।

सुप्रेमा अर्थात् प्रेम मञ्जरी और रतिमञ्जरी नामक दोनों मञ्जरियाँ भानुमतीके नामसे भी जानी जाती हैं॥१८२-१८४॥

श्रीराधाया उपास्यः

(श्रीराधाके उपास्य)

उपास्यो जगतां चक्षुर्भगवान् पद्मबान्धवः।
जप्यः स्वाभीष्टसंसर्गी कृष्णनाम महामनुः।
पौर्णमासी भगवती सर्वसौभाग्यवर्द्धिनी॥१८५॥

भावानुवाद—जगत्वासियोंके नेत्रस्वरूप भगवान् पद्मबन्धु सूर्य श्रीराधाके उपास्यदेव तथा निज-अभीष्टको प्राप्त करानेवाला कृष्णनाम महामन्त्र ही उनका जप्य मन्त्र है। भगवती पौर्णमासी ही उनके समस्त सौभाग्योंको बढ़ानेवाली हैं॥१८५॥

सख्यादिविशेषाः

(सखियोंका विशेष विवरण)

ललिताद्या अष्टसख्यो मञ्जर्यस्तद्गणश्च यः।
सर्वा वृन्दावनेश्वर्याः प्रायः सारूप्यमागताः॥१८६॥

भावानुवाद—ललितादि आठ सखियाँ, मञ्जरियाँ तथा उनके समस्त गण वृन्दावनेश्वरी श्रीराधाके सारूप्य अर्थात् उनके जैसे सौन्दर्यसे शोभायमान हैं॥१८६॥

काननादिगताः सख्यो वृन्दा-कुन्दलतादयः।
धनिष्ठा गुणमालाद्या बल्लवेश्वर-गेहगाः॥१८७॥

भावानुवाद—वृन्दा और कुन्दलता आदि सखियाँ वन-उपवनमें आने-जानेवाली तथा वन-विलासमें सहायता करनेवाली हैं। धनिष्ठा

और गुणमाला आदि सखियाँ गोपराज नन्द महाराजके भवनमें ही रहनेवाली हैं॥१८७॥

कामदा नाम धात्रेयी सखीभावविशेषभाक्।
रागलेखा–कलाकेली–मञ्जुलाद्यास्तु दासिका:॥१८८॥

भावानुवाद—धात्री पुत्री कामदा विशेष करके श्रीराधाके सखीभावसे युक्त है। रागलेखा, कलाकेली तथा मञ्जुला आदि श्रीराधाकी दासियाँ हैं॥१८८॥

नान्दीमुखी बिन्दुवतीत्याद्याः सन्धिविधायिकाः।
सुहृत्पक्षतया ख्याताः श्यामला मङ्गलादयः॥१८९॥

भावानुवाद—नान्दीमुखी और बिन्दुमती आदि सखियाँ श्रीराधाकृष्णमें हुए परस्पर मानको दूरकर सन्धि-कार्य अर्थात् मिलन सम्पन्न कराती हैं। श्यामला और मङ्गला आदि सखियाँ सुहृत्पक्षके नामसे विख्यात हैं॥१८९॥

प्रतिपक्षतया ख्यातिं गताश्चन्द्रावलीमुखाः॥१९०॥

भावानुवाद—श्रीराधाके प्रतिपक्षके रूपमें मुख्य रूपसे चन्द्रावली विख्यात है॥१९०॥

कलावत्यो रसोल्लासा गुणतुङ्गा स्मरोद्धुराः।
गन्धर्वास्तु कलाकण्ठी सुकण्ठी पिककण्ठिका।
या विशाखाकृतगीतीर्गायन्त्यः सुखदा हरेः॥१९१॥

भावानुवाद—गीत वाद्य आदि कलाओंमें निपुण रसोल्लासा, गुणतुङ्गा, स्मरोद्धुरा, कलाकण्ठी, सुकण्ठी और पिककण्ठी—श्रीराधाकी गन्धर्व सखी अर्थात् गीत गानेवाली सखियाँ हैं। ये श्रीविशाखा द्वारा रचित गीतोंका गान करके श्रीकृष्णको विशेष रूपसे आनन्दित करती हैं॥१९१॥

वादयन्त्यश्च शुषिरं ततानद्ध–घनान्यपि।
माणिकी नर्मदा प्रेमवती कुसुमपेशलाः॥१९२॥

भावानुवाद—माणिकी, नर्मदा, प्रेमवती और कुसुमपेशला—वंशी आदि शुषिर वाद्य, वीणा आदि तत वाद्य, ढोल आदि आनद्ध वाद्य तथा करताल आदि घन वाद्यको बजाकर श्रीकृष्णको आनन्दित करती हैं॥१९२॥

सख्यश्च नित्यसख्यश्च प्राणसख्यश्च काश्चन।
प्रियसख्यश्च परमप्रेष्ठसख्यः प्रकीर्त्तिताः॥१९३॥

भावानुवाद—श्रीराधाकी सखियाँ—सखी, नित्यसखी, प्राणसखी, प्रियसखी और परमप्रेष्ठ सखी नामसे प्रख्यात हैं॥१९३॥

श्रीराधाभृत्याः

(श्रीराधाकी किङ्करियाँ)

दिवाकीर्त्तितनूजे तु सुगन्धा नलिनीत्युभे।
मञ्जिष्ठारङ्गरागाख्ये रजकस्य किशोरिके॥१९४॥

भावानुवाद—श्रीराधाकी दासियोंमें सुगन्धा और नलिनी—ये दोनों दिवाकीर्त्ति अर्थात् नापित (नाई) की कन्या तथा मञ्जिष्ठा और रङ्गरागा—ये दोनों धोबीकी कन्याएँ हैं॥१९४॥

पालिन्द्री नाम सैरिन्ध्री चित्रिणी चित्रकारिणी।
मान्त्रिकी तान्त्रिकी नाम्ना दैवज्ञा दैवतारिणी॥१९५॥

भावानुवाद—श्रीराधाकी सैरिन्ध्री अर्थात् उन्हें वेशभूषा धारण करानेवालीका नाम पालिन्द्री तथा चित्रकारिणी अर्थात् शृङ्गार करानेवालीका नाम चित्रिणी है। दैव-घटनासे सतर्क करानेवाले दो दैवज्ञाओं (ज्योतिष शास्त्र जाननेवाली दासियों) के नाम मान्त्रिकी और तान्त्रिकी है॥१९५॥

तथा कात्यायनीत्याद्या दूतिका वयसाधिकाः।
उभे भाग्यवती-पुञ्जपुण्ये हड्डिपकन्यके॥१९६॥

भावानुवाद—कात्यायनी आदि दूतियाँ आयुमें श्रीराधासे बड़ी हैं। भाग्यवती और पुञ्जपुण्या—ये दोनों दासियाँ मेहतरकी कन्याएँ हैं॥१९६॥

भृङ्गी मल्ली मतल्ली च पुलिन्दकुलकन्यकाः।
केचित् कृष्णगणाश्चास्याः परिवारतया मताः॥१९७॥

भावानुवाद—भृङ्गी, मल्ली और मतल्ली—ये पुलिन्द जातिकी कन्याएँ हैं। इनमेंसे कोई तो श्रीकृष्णके पक्षवाली और कोई श्रीराधाके पक्षवाली मानी जाती है॥१९७॥

गार्गी मुख्या महीपूज्या चेट्यो भृङ्गारिकादयः।
सुबलोज्ज्वल–गन्धर्व–मधुमङ्गल–रक्तकाः ।
विजयाद्या रसालाद्या पयोदाद्या विटादयः॥१९८॥

भावानुवाद—गार्गी आदि श्रेष्ठ ब्राह्मणीगण, भृङ्गारिका आदि चेटियाँ, सुबल, उज्ज्वल, गन्धर्व, मधुमङ्गल और रक्तक आदि सेवक तथा विजया आदि, रसाला आदि, पयोदा आदि, विटगण आदि श्रीराधाके दास हैं॥१९८॥

आसन्ना सर्वदा तुङ्गी पिशङ्गी कलकन्दला।
मञ्जुला बिन्दुला सन्धा मृदुलाद्यास्तु वाहिकाः॥१९९॥

भावानुवाद—तुङ्गी, पिशङ्गी, कलकन्दला, मञ्जुला, बिन्दुला, सन्धा और मृदुला नामकी किङ्करियाँ सदैव श्रीराधाके निकट रहती हैं तथा उनकी वस्तुओंको वहन करती हैं॥१९९॥

समांसमीनाः सुनदा यमुना बहुलादयः।
पीना वत्सतरी तुङ्गी कक्खटी वृद्धमर्कटी।
कुरङ्गी रङ्गिणी ख्याता चकोरी चारुचन्द्रिका॥२००॥

भावानुवाद—श्रीराधाकी गायोंके नाम सुनदा, यमुना और बहुला आदि हैं। ये समांसमीना अर्थात् प्रत्येक वर्ष प्रसव करती हैं और केवल बछड़ेको ही जन्म देती है। श्रीराधाकी प्रिय हृष्ट–पुष्ट बछियाका नाम तुङ्गी, वृद्ध वानरीका नाम कक्खटी, हरिणीका नाम रङ्गिनी तथा चकोरीका नाम चारुचन्द्रिका है॥२००॥

निजकुण्डचरी तुण्डीकेरी नाम मरालिका।
मयूरी तुण्डिका नाम्ना शारिके सूक्ष्मधी–शुभे॥२०१॥

भावानुवाद—श्रीराधाकी हंसिनीका नाम तुण्डीकेरी है। यह हंसिनी श्रीराधाके निज कुण्ड (श्रीराधाकुण्ड) में विचरण करती है। उनकी मयूरीका नाम तुण्ड़िका तथा सारिकाओं (मैना पक्षियों) के नाम सूक्ष्मधी (सूक्ष्म बुद्धिवाली) तथा शुभा हैं॥२०१॥

पद्यानिन्धानि ललितादेव्या ललितानि स्वनाथयोः।
पठन्त्यौ चित्रया वाचा ये चित्रीकुरुतः सखीः॥२०२॥

भावानुवाद—अपने नाथ श्रीराधा और श्रीकृष्णकी लीलाका अवलम्बन करके श्रीललितादेवी जिन मनोहर गीतोंकी रचना करती हैं, ये दोनों सारिकाएँ उन्हें सुमधुर स्वरसे विचित्र वाक्योंमें पाठ करते हुए सखियोंके मनमें अद्भुत रसका सञ्चार करती हैं॥२०२॥

भूषणानि

(श्रीराधाके भूषण)

तिलकं स्मरयन्त्राख्यं हारो हरिमनोहरः।
रोचनौ रत्नताड़ङ्कौ घ्राणमुक्ता प्रभाकरी॥२०३॥

भावानुवाद—श्रीराधाके तिलकका नाम स्मर-यन्त्र, हारका नाम हरिमनोहर, रत्नमय ताड़ङ्क (कानके आभूषण) का नाम रोचन तथा नासिकाकी मुक्ताका नाम प्रभाकरी है॥२०३॥

छन्नकृष्णप्रतिच्छायं पदकं मदनाभिधम्।
स्यमन्तकान्यपर्यायः शंखचूड़-शिरोमणिः॥२०४॥

भावानुवाद—वक्षःस्थलपर स्थित मदन नामक पदकके अन्दर गुप्त रूपसे श्रीकृष्णकी छवि विराजमान है। श्रीमतीजीके स्यमन्तक मणिका दूसरा नाम शंखचूड़-शिरोमणि है॥२०४॥

पुष्पवन्तौ क्षिपन् कान्त्या सौभाग्यमणिरुच्यते।
कटकाश्चटकारावाः केयूरे मणिकर्बुरे॥२०५॥

भावानुवाद—श्रीराधाकी सौभाग्यमणि अर्थात् वक्षःस्थलपर लटकती हुई मणि, अपनी प्रभा द्वारा पुष्पवन्तको[१] भी धिक्कारती है। चरणोंमें

---

(१) इसके लिए अगले पृष्ठपर देखें।

जो कटक (सोनेके कड़े) है, उनका नाम चटकाराव है, क्योंकि उनकी झंकार चटक-शब्दके समान है, केयूर अर्थात् अङ्गद मणिकर्बुर नामक रङ्गबिरङ्गी मणियों द्वारा सुशोभित है॥२०५॥

मुद्रा नामाङ्किता नाम्ना विपक्षमदमर्दिनी।
काञ्ची काञ्चनचित्राङ्गी नूपुरे रत्नगोपुरे।
मधुसूदनमारुन्धे ययोः शिञ्जित-मञ्जरी॥२०६॥

भावानुवाद—श्रीराधाकी नामाङ्कित मुद्रा अर्थात् अँगूठीका नाम 'विपक्षमदमर्दिनी', काञ्ची अर्थात् करधनीका नाम काञ्चनचित्राङ्गी तथा नूपुरका नाम रत्नगोपुर है इनकी झंकार श्रीमधुसूदनको भी जड़वत् बना देती है॥२०६॥

वासो मेघाम्बरं नाम कुरुविन्दनिभं तथा।
आद्यं स्वप्रियमभ्राभं रक्तमन्त्यं हरेः प्रियम्॥२०७॥

भावानुवाद—श्रीराधाजी मेघाम्बर और कुरुविन्दनिभ नामक दो प्रकारके वस्त्र धारण करती है। पहला तो उनका अपना प्रिय मेघके समान नीले रङ्गका और दूसरा श्रीकृष्णका प्रिय लाल रङ्गका है॥२०७॥

सुधांशुदर्पहरणो दर्पणो मणिबान्धवः॥२०८॥

भावानुवाद—चारों ओरसे मणियोंके द्वारा जड़े हुए दर्पणका नाम सुधांशु-दर्पहरण है अर्थात् जो दर्पण अपनी शोभासे सुधाकर अर्थात् चन्द्रके भी दर्पको चूर्ण-विचूर्ण कर देता है॥२०८॥

शलाका नर्मदा हैमी स्वस्तिदा रत्नकङ्कती।
कन्दर्पकुहली नाम वाटिका पुष्पभूषिता॥२०९॥

भावानुवाद—सुवर्ण शलाका (बालोंमें लगाये जानेवाले सोनेसे बने काँटे) का नाम नर्मदा, रत्नकङ्कती (रत्नोंसे जड़ी हुई कंघी) का नाम

---

[१] एक साथ चन्द्र और सूर्यके उदित होनेपर जो उज्ज्वलता प्रकाशित होती है, उसे पुष्पवन्त कहते हैं।

स्वस्तिदा और वाटिका अर्थात् पुष्प उद्यानका नाम कन्दर्प-कुहली है। यह उद्यान सदा-सर्वदा पुष्पोंसे विभूषित रहता है॥२०९॥

स्वर्णयूथी तडिद्वल्ली कुण्डं ख्यातं स्वनामतः।
नीपवेदीतटे यस्य रहस्यकथन-स्थली॥२१०॥

भावानुवाद—उद्यान स्थित स्वर्णयूथी पुष्पकी लताका नाम तडिद्वल्ली है, क्योंकि यह विद्युतकी शोभासे परिपूर्ण है। कुण्ड निज नाम अर्थात् 'श्रीराधाकुण्ड' के नामसे प्रसिद्ध है। इसी श्रीराधाकुण्डके तटपर स्थित नीपवेदी अर्थात् कदम्ब वृक्षके नीचे बनी हुई बेदी श्रीराधाकृष्णके बैठनेका वह स्थान है, जहाँ वे परस्पर नानाविध गुप्त कथोपकथन करते हैं॥२१०॥

मल्लारश्च धनाश्रीश्च रागौ हृदयमोदनौ।
छालिक्यं दयितं नृत्यं वल्लभा रुद्रवल्लकी॥२११॥

भावानुवाद—मल्लार और धनाश्री नामक दो राग हृदय-मोदन अर्थात् मनमोहनकारी हैं। छालिक्य नामक नृत्य ही प्रिय नृत्य है, रुद्रवल्लकी नाम की वीणा ही अन्यान्य यन्त्रोंकी अपेक्षा प्रिय वाद्य-यन्त्र है॥२११॥

जन्मना श्लाघ्यतां नीता शुक्ला भाद्रपदाष्टमी।
कान्ताषोडशभीरेमे यत्रालिनिलये शशी॥२१२॥

भावानुवाद—श्रीराधाकी जन्मतिथि भाद्रमासके शुक्लपक्षकी अष्टमी है। यह अष्टमी श्रीराधाके जन्म (श्रीराधाष्टमी) के नामसे जगत्में प्रसिद्ध है तथा इस तिथिमें चन्द्रदेव षोड़श कान्ताओं अर्थात् सोलह कलाओंके साथ रमण करते हैं। अष्टमीमें आठ कलाओंका प्रकाश स्वाभाविक होनेपर भी भगवान्की योगमायाशक्तिसे चन्द्रदेवने श्रीराधाष्टमीकी रातमें सोलह कलाओंमें पूर्णता प्राप्त की है॥२१२॥

इत्येतत् परिवाराणां श्रीवृन्दावननाथयोः।
असङ्ख्यानां गणयितुं दिङ्मात्रमिह दर्शितम्॥२१३॥

श्रीश्रीराधाकृष्णगणोद्देश-दीपिकायां लघुभागः सम्पूर्णः॥

भावानुवाद—यद्यपि वृन्दावन नाथ श्रीश्रीराधाकृष्णके असंख्य परिकर है, तथापि यहाँ उनका दिग्दर्शनमात्र प्रदर्शित किया गया है॥२१३॥

श्रीश्रीराधाकृष्णगणोद्देश-दीपिकाके लघुभागका अनुवाद सम्पूर्ण॥

पात्र–सूची

(ल अर्थात् लघु भागका श्लोक)

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
	अ	
अंशुमान	(ल ३१)	श्रीकृष्णका प्रियसखा।
अकुण्ठिता	(२०६, २१३)	श्रीकृष्णकी सखी।
अङ्गदा	(६१)	श्रीकृष्णकी माताके तुल्य।
अञ्जना	(६३)	श्रीकृष्णकी माताके तुल्य।
अतुल्या	(३८)	नन्दनकी पत्नी।
अनङ्गमञ्जरी	(९८, १२१–१२२, ल ३८, ल १७३)	श्रीराधिकाकी छोटी बहन।
अन्तकेल	(५३)	श्रीकृष्णके नानाके समान गोप।
अनुराधा	(८१)	श्रीललिताका दूसरा नाम।
अभिनन्द	(३३)	श्रीनन्दके ज्येष्ठ भ्राता।
अभिमन्यु(ख)	(ल १७३)	श्रीराधिकाके मायिक पति अर्थात् उनके पतिका अभिमान रखनेवाला।
अमृतदोहनी	(ल १२४(ख))	दूध दोहनका पात्र।
अम्बिका	(६४, ल २६)	श्रीकृष्णकी प्रधान धात्री।
अम्बिका	(ल २६)	शिवकी पत्नी (पार्वती)।
अरुणाक्ष	(ल ६०)	सनन्दनके पिता।
अर्कमित्र	(९९)	वृषभानु महाराजका दूसरा नाम।
अर्जुन	(ल ४१, ल ४७)	श्रीकृष्णके प्रियनर्म सखा।
	आ	
आनकदुन्दुभि	(२६)	वसुदेवका दूसरा नाम; वृषभानु महाराजके सुहृत्।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
आनन्दी	(ल २२)	श्रीकृष्णके सुहृत्।
आराम	(८७)	चम्पकलताके पिता।
आसन्ना	(ल १९९)	श्रीराधाकी वाहिका।

इ

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
इन्दिरा	(२४८)	रङ्गदेवीकी सखी।
इन्दु	(ल १६९)	श्रीराधाके नाना; पत्नी—मुखरा।
इन्दुप्रभा	(ल ८३)	श्रीकृष्णकी परिचारिका।
इन्दुलेखा,	(७९, ९२–९३, १८८–१९३, २४७, ल १७५)	श्रीराधाकी प्रधान आठ सखियोंमेंसे छठी परमप्रेष्ठ सखी।
इन्दुहास	(ल १०३)	श्रीकृष्णके नर्त्तक।
इन्द्रावली	(ल १३८)	चन्द्रावली पक्षीय श्रीकृष्णकी प्रेयसी।

उ

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
उज्ज्वल	(ल ४१, ल ५५–५६, ल १९८)	श्रीकृष्णके प्रियनर्म सखा।
उत्पल	(५८)	श्रीकृष्णके पितृ तुल्य गोप।
उपनन्द	(२५, ३३, ५९, ल २८)	नन्दके ज्येष्ठ भ्राता।

ऊ

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
ऊर्जन्य	(२२)	श्रीनन्दके चाचा।

ऐ

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
ऐन्दवी	(२९)	श्रीयशोदाकी प्राणप्रेष्ठ सखी।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
	ओ	
ओजस्वी	(ल २९)	श्रीकृष्णका सखा।
	क	
कंस	(ल २५)	उग्रसेनका पुत्र, श्रीकृष्ण–द्वेषी असुर।
कक्खटी	(ल २००)	श्रीराधाकी वृद्ध बन्दरी।
कटुल	(ल १०८)	श्रीकृष्णका सेवक।
कड़ार	(११४, ल ७२)	श्रीकृष्णका विट।
कण्ठोल	(ल १०८)	शिल्प–सेवक।
कण्डव	(४०ख)	श्रीकृष्णके ताऊ उपनन्दके पुत्र।
कन्दर्पकुहली	(ल २०९)	सदा पुष्पोंसे विभूषित श्रीराधाका पुष्प उद्यान।
कन्दर्पमञ्जरी	(९८, ११७, ल १३७)	श्रीराधाकी वर सखियोंमेंसे छठी।
कन्दर्पसुन्दरी	(२४८, ल १७८)	चौंसठ समाजवाली सखियोंमेंसे चौवनवीं।
कन्वल	(५८)	श्रीकृष्णके पितृतुल्य गोप।
कपिल	(ल ७५)	श्रीकृष्णका ताम्बूल बनानेवाला सेवक।
कपिला,	(६२)	श्रीकृष्णकी जननीतुल्य गोपी।
कपोत	(१००)	कलावतीका पति।
कमला	(२४८)	रङ्गदेवीकी सखी।
कमला	(ल १३९, ल १७७)	श्रीराधाकी प्रियसखी, यूथेश्वरी।
कमलिनी	(११९)	फुल्लकलिकाकी जननी।
करण्ड	(ल १०८)	शिल्प–सेवक।
करन्धम	(ल २९)	श्रीकृष्णका सखा।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
करवालिका	(५५)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
कराला	(५५)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
करुणा	(९५)	रङ्गदेवीकी माता।
कर्पूर	(ल ८१)	श्रीकृष्णका नापित (नाई)।
कर्पूरलतिका	(ल १८०)	श्रीराधिकाकी प्राणसखी।
कर्मठ	(ल १०६)	कुम्भकार।
कलकण्ठ	(ल १०४)	सङ्गीतमें तालधारण करनेवाले।
कलकण्ठी	(१९६, २४८)	रङ्गदेवीकी सखी।
कलकन्दला	(ल १९९)	श्रीराधाकी वाहिका।
कलझङ्कारा	(ल १२७)	श्रीकृष्णकी किङ्किणी।
कलभाषिणी	(ल १८०)	श्रीराधाकी प्राणसखी।
कलविङ्क	(ल ३२)	श्रीकृष्णका प्रियसखा।
कलस्वन	(ल १११)	श्रीकृष्णका राजहंस।
कलहंसी	(२४२)	चौंसठ समाजवाली सखियोंमेंसे सातवीं सखी।
कलाकण्ठी	(२०६, २१४)	श्रीराधाकी सखी।
कलाकण्ठी	(ल १९१)	श्रीराधाकी गान्धर्व सखी।
कलाकेली	(ल १८८)	श्रीराधाकी दासी गोपी।
कलाङ्कुर	(५८, ९९)	श्रीकृष्णके पितृ तुल्य गोप।
कलापिनी	(२४२)	श्रीललिताकी अष्टम सखी।
कलावती	(९७, ९९, २५१)	श्रीराधाकी वर-सखियोंमेंसे प्रथम।
कालटिप्पनी	(२१९)	श्रीराधाकी दूती।
कलिटिप्पनी	(२२३)	रजकी दूती।
कलिन्द	(ल ३०)	कनिष्ठ कल्प सखा।
कल्लोट्ट,	(५३)	श्रीकृष्णके नानाके तुल्य गोप।
कवल	(ल ९४)	वीराका पति।
कवला	(ल ९४)	वीराकी बहन।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
कस्तूरी	(ल १८१)	श्रीराधाकी नित्यसखी।
कस्तूरीमञ्जरी	(ल १८४)	श्रीराधाकी मञ्जरी।
कात्यायनी	(ल १९६)	आयुमें श्रीराधासे बड़ी दूती।
कादम्बरी	(ल १७९)	श्रीराधाकी प्राणसखी।
कान्तिदा	(२२६, २३२)	सन्धिदूती।
कामदा	(ल १८८)	श्रीकृष्णकी सेविका, धात्रीकी कन्या।
कामनगरी	(२४५)	चित्राकी छठी सखी।
काममञ्जरी	(ल १८३)	श्रीराधाकी मञ्जरी।
कामलतिका	(२४८)	रङ्गदेवीकी छठी सखी।
कामलतिका	(ल १७७)	श्रीराधाकी प्रियसखी।
कारण्ड,	(५३)	श्रीकृष्णके नानाके समान गोप।
कावेरी	(२०२, २४९)	सुदेवीकी प्रथम सखी।
काश	(ल १७२)	श्रीराधाकी बुआका पति; पत्नी—भानुमुद्रा।
किङ्किणी	(ल ३१)	श्रीकृष्णका प्रियसखा।
किल	(५३)	श्रीकृष्णके नानाके समान गोप।
किलिम्बा	(६४)	श्रीकृष्णकी स्तनपान करानेवाली धात्री।
कीर्त्तिचन्द्र	(ल १७१)	श्रीराधाके मामा।
कीर्त्तिदा	(२९, ल ३८, ल १६९)	श्रीराधिकाकी माता, रत्नगर्भा नामसे विख्यात।
कीर्त्तिमती	(ल १७२)	श्रीराधाकी माताकी बहन।
कुङ्कुमा	(ल १३८)	यूथेश्वरी सखी।
कुञ्जरी	(२४३)	विशाखाकी चतुर्थ सखी।
कुटिला	(ल १७४)	श्रीराधाकी ननद।
कुठारिका	(११४)	कड़ारकी माता।
कुचारी	(२२२)	चारीकी बहन।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
कुटेर	(५२)	श्रीकृष्णके दादाके समान गोप।
कुण्ड	(ल १०८)	शिल्प-सेवक।
कुण्डल	(ल २२)	श्रीकृष्णके चाचाका पुत्र और सुहृत्।
कुन्द	(ल ३०)	श्रीकृष्णका कनिष्ठकल्प सखा।
कुन्दलता	(ल २८, ल १८७)	उपनन्दके पुत्र सुभद्रकी पत्नी।
कुन्दलतिका	(११५)	शिखावतीकी बड़ी बहन।
कुब्जिका	(६८)	व्रजमें पूजित वृद्ध ब्राह्मणी।
कुसुम	(ल ८१)	श्रीकृष्णका नापित (नाई)।
कुमुदा	(ल १३८)	यूथेश्वरी सखी।
कुरङ्गाक्षी	(१७६, २४४)	चम्पकलताकी प्रथम सखी।
कुरङ्गाक्षी	(ल १७६)	श्रीराधाकी प्रियसखी।
कुरङ्गी	(ल ८४)	श्रीकृष्णकी चेटी।
कुरुविन्दा	(११७)	कन्दर्पमञ्जरीकी माता।
कुलवीर	(ल २४)	श्रीकृष्णका ज्येष्ठकल्प सुहृत्।
कुलिक	(ल ३०)	श्रीकृष्णका कनिष्ठकल्प सखा।
कुवला	(३७ (क))	सन्नन्दकी पत्नी।
कुश	(ल १७२)	कीर्त्तिमतिका पति।
कुशला	(६१)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
कुसुमपेशला	(ल १९२)	श्रीराधाकी सखी।
कुसुमापीड़	(ल २९)	श्रीकृष्णका कनिष्ठकल्प सखा।
कुसुमोल्लास	(ल ८०)	श्रीकृष्णका गान्धिक।
कृपा	(६१)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
कृपीट	(५३)	श्रीकृष्णके नानाके समान गोप।
कृष्ण	(६, १६, प्रायः सर्वत्र)	ग्रन्थके प्रतिपाद्य नायक-चूड़ामणि।
कृष्णा	(ल १३८)	यूथेश्वरी गोपी।
केदार	(५८)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
केलीकन्दली	(ल १७९)	श्रीराधाकी प्राणसखी।
केलीमञ्जरी	(ल १३९)	यूथेश्वरी गोपी।
केशी	(२०)	दैत्य विशेष।
कैरवी	(ल १३८)	यूथेश्वरी गोपी।
कोकिल	(ल ४१, ल ५७)	श्रीकृष्णका प्रियनर्म सखा।
कोटरा	(२१९, २२२)	श्रीकृष्णकी दूती।
कोमल	(ल ८२)	श्रीकृष्णका विशेष दास।
कोमल	(ल ७५)	श्रीकृष्णका ताम्बूलिक।
कौमुदी	(२५१, ल १८१)	श्रीराधाकी नित्यसखी।
कौस्तुभ	(ल १२९)	कालियकी प्रेयसियोंके द्वारा उपहार दिया हुआ मणि।

ख

खञ्जनेक्षणा	(ल १३७)	यूथेश्वरी सखी।

ग

गङ्गा	(ल १०९)	श्रीकृष्णकी उत्कृष्ट धेनु।
गरुड़,	(११६)	शिखावतीका पति।
गन्धमञ्जरी	(ल १८४)	श्रीराधाकी मञ्जरी।
गन्धर्व	(ल ४१, ल ५०–५२, ल १९८)	श्रीकृष्णका प्रियनर्म सखा।
गन्धवेद	(ल ७२)	श्रीकृष्णका विट।
गर्ग	(११०)	यदुवंशके पुरोहित।
गान्धर्वा	(१०९, ल १४३)	श्रीराधाका नाम।
गार्गी	(६७, ल १९८)	गर्गकी पुत्री, विश्व पूज्या।
गुणचूड़ा	(२४६)	तुङ्गविद्याकी सातवीं सखी।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
गुणचूड़ा	(ल १७७)	श्रीराधाकी प्रियसखी।
गुणतुङ्गा	(ल १९१)	श्रीराधाकी गान्धर्व सखी।
गुणमञ्जरी	(ल १८२)	श्रीराधाकी मञ्जरी।
गुणमाला	(ल ८३, ल १८७)	श्रीराधाकी सखी।
गुणवती	(ल १३९)	यूथेश्वरी सखी।
गुणवीर	(२३)	सुवेर्जनाका पति।
गोण्ड	(५३)	श्रीकृष्णके नानाके समान गोप।
गोण्डिका	(२२०, २२५)	श्रीकृष्णकी वनगा दूती।
गोपाली	(ल १३६)	यूथेश्वरी सखी।
गोभट	(ल २३)	श्रीकृष्णका ज्येष्ठकल्प सुहृत्।
गोल	(४५, ५२)	जटिलाका पति।
गोवर्द्धन	(८२)	भैरवका सखा।
गौतमी	(६७)	वरा ब्राह्मणपत्नी।
गौरी	(२५०)	श्रीराधाकी सखियोंमें सातवीं।
गौरी	(ल १७१)	श्रीराधाकी मामी।
ग्रहिल	(ल ७३)	श्रीकृष्णका चेट।

घ

घण्टा	(५५)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
घर्घरा	(५५)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
घाटिक	(५७)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
घूर्घरा	(५५)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
घृणि	(५७)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
घोणी	(५५)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
घोरा	(५५)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।

च

चकोराक्षी	(ल १३९)	यूथेश्वरी सखी।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
चक्राङ्ग	(५८)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
चङ्कनम्	(ल १२६)	श्रीकृष्णका कङ्कन।
चटकाराव	(ल २०५)	श्रीराधाका कटक।
चण्डाक्ष	(८७)	चम्पकलताका पति।
चतुर	(८९)	चित्राके पिता।
चतुर	(ल ८५)	नाना प्रकारके वेशसे गोप-गोपियोंके बीचमें विचरण करनेवाला श्रीकृष्णका सेवक।
चन्दन	(ल ३०)	श्रीकृष्णका कनिष्ठकल्प सखा।
चन्दनकला	(ल ८३)	श्रीकृष्णकी परिचारिका।
चन्दनवती	(ल १८१)	श्रीराधाकी नित्यसखी।
चन्द्रकला	(ल ९०)	पौर्णमासीकी माता।
चन्द्रतिलका	(२४४)	चम्पकलताकी छटी सखी।
चन्द्रभानु	(ल ९७)	वृन्दाके पिता।
चन्द्रमुख	(ल १०३)	श्रीकृष्णका नर्त्तक।
चन्द्ररेखा	(१७०)	विशाखाकी सखी।
चन्द्ररेखा	(ल १७९)	श्रीराधाकी प्राणसखी।
चन्द्ररेखिका	(२४३)	विशाखाकी तृतीय सखी।
चन्द्रलतिका	(ल १७६)	श्रीराधाकी प्रियसखी।
चन्द्रशालिका	(ल १३६)	यूथेश्वरी सखी।
चन्द्रहास	(ल १०३)	श्रीकृष्णका नर्त्तक।
चन्द्रावली	(ल १३६, ल १४१-१४२, ल १९०)	श्रीराधाकी प्रतिपक्ष श्रीकृष्णकी प्रेयसी, यूथेश्वरी।
चन्द्रिका	(२४४)	चम्पकलताकी पञ्चम सखी।
चन्द्रिका	(ल १७८)	श्रीराधाकी प्रियसखी।
चपला	(२४३)	श्रीविशाखाकी छटी सखी।
चम्पकलता	(७९, ८६-८७, १७२-१७६, २४४, ल १७५)	श्रीराधिकाकी सर्वप्रधान परमप्रेष्ठ सखियोंमें तृतीया।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
चर्चिका	(८९)	चित्रादेवीकी जननी; पति—चतुर।
चाटु	(४१ (ख), ५१)	श्रीनन्दके भ्राता राजन्यका पुत्र।
चामरडामरी	(ल १३०)	श्रीकृष्णका चूड़ा।
चारण	(ल ८५)	श्रीकृष्णका उत्तम चर।
चारी	(२१९, २२२)	श्रीकृष्णकी दूती।
चारुकवरा	(२४९)	सुदेवीकी द्वितीय सखी।
चारुचण्डी	(२०६, २११)	सिताखण्डीकी बहन।
चारुचन्द्रिका	(ल २००)	श्रीराधाकी चकोरी।
चारुमुख	(४५ (क), ५१)	सुमुखका कनिष्ठ भ्राता।
चित्रकोरक	(ल ११९)	श्रीकृष्णकी क्रीड़ा गेंद।
चित्ररेखा	(२४७)	इन्दुलेखाकी सखी।
चित्रा	(७९, ८८, १७७–१८२, २४५)	श्रीराधाकी प्रधान आठ सखियोंमेंसे परमप्रेष्ठा चतुर्थ सखी।
चित्रिणी	(ल १९५)	श्रीराधाकी चित्रकारिणी।
चुण्डी	(५६)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
चूड़ा	(२२०, २२४)	श्रीराधाकी दूती।
चूण्डरी	(२२०, २२५)	श्रीराधाकी दूती।
चोण्डिका	(५६)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।

छ

छालिक्यम्	(ल २११)	श्रीराधाका प्रिय नृत्य।

ज

जटिला	(४७(क), ५५, ८५, ल ९५, ल १७४)	श्रीराधाकी सास।
जम्बुल	(ल ७६)	श्रीकृष्णका ताम्बूलिक।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
		ट
टङ्कन	(ल १०६)	श्रीकृष्णका स्वर्णकार।
		ड
डङ्का	(५६)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
डामणी	(५६)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
डामरी	(५६)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
डिण्डिमा	(५६)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
डुम्बी	(५६)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
		ढ
चक्किणी	(५६)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
		त
तडिद्वल्ली	(ल २१०)	श्रीराधाकी उद्यान स्थित स्वर्णयूथी पुष्पकी लता।
तनुमध्यमा	(ल १७८)	श्रीराधाकी प्रियसखी।
तनुमध्या	(२४६)	तुङ्गविद्यायाकी पञ्चम सखी।
तरङ्गाक्षी	(६१)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
तरङ्गिणी	(ल १२४(ख))	श्रीकृष्णकी वीणा।
तरलाक्षी	(ल १३७)	यूथेश्वरी सखी।
तरलिका	(६१)	श्रीकृष्णके माताके समान गोपी।
तरीषण	(५३)	श्रीकृष्णके नानाके समान वृद्ध गोप।
तरुणी	(ल ८३)	श्रीकृष्णकी परिचारिका।
ताण्डविक	(ल १११)	श्रीकृष्णका मयूर।
तान्त्रिकी	(ल १९५)	श्रीराधाकी दैवज्ञा।
तारा	(ल १३६)	यूथेश्वरी सखी।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
तारावली	(ल १३९)	यूथेश्वरी सखी।
तारावली	(ल १२८)	श्रीकृष्णका हार।
तालिक	(ल ७३)	श्रीकृष्णका चेट।
ताली	(६१)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
तिलकिनी	(२४५)	चित्राकी द्वितीय सखी।
तुङ्ग	(ल ८६)	श्रीकृष्णका दूत।
तुङ्गभद्रा	(१९१, २४७)	इन्दुलेखाकी प्रथम सखी।
तुङ्गविद्या	(७९, ९०, १८३–१८७, २४६, ल १७५)	श्रीराधाकी प्रधान आठसखियोंमेंसे परमप्रेष्ठा पञ्चम सखी।
तुङ्गी	(३४, ल २८)	उपनन्दकी पत्नी।
तुङ्गी	(ल १९९)	श्रीराधाकी किङ्करी, वाहिका।
तुङ्गी	(ल २००)	श्रीराधाकी स्थल काया वत्सतरी।
तुण्डिका	(ल २०१)	श्रीराधाकी मयूरी।
तुण्डीकेरी	(ल २०१)	श्रीराधाकुण्डमें विचरणशाली राजहंसी।
तुण्डु	(५२(ख))	श्रीकृष्णके दादाके समान गोप।
तुलावती	(५२(क))	गोलके भ्राताकी कन्या; पति—सुचारु।
तुष्टि	(६३)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
तुष्टिदा	(ल १२१)	श्रीकृष्णकी कर्त्तरी।

द

दक्ष	(ल १११)	श्रीकृष्णका शुक।
दक्षिणा	(८५)	विशाखाकी माता।
दण्डव	(४०)	ऊर्जन्यका पुत्र।
दण्डी	(५८)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
दण्डी	(ल २२)	श्रीकृष्णका सुहृत्, चाचाका पुत्र।
दधिलोभ	(ल ११०)	श्रीकृष्णका बन्दर।
दधिसारा,	(४१(ख), ५०)	श्रीकृष्णकी माताकी बहन।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
दामा	(ल ३१)	श्रीकृष्णका प्रियसखा।
दिव्यशक्ति	(ल २४)	श्रीकृष्णका ज्येष्ठकल्प सुहृत्।
दीपन	(ल १०२)	श्रीकृष्णका साधारण भृत्य।
दुर्मद	(१२२, ल १७३(ख))	अनङ्गमञ्जरीका पति, श्रीराधाका देवर।
दुर्लभ	(ल १०५)	श्रीकृष्णका रजक।
दुर्वल	(९३)	इन्दुलेखाका पति।
दृष्टिमोहनम्	(ल १३१)	श्रीकृष्णका तिलक।
देवकी	(३०, ३१)	श्रीयशोदाका अन्य नाम।
देवकी	(३०, ३१)	श्रीवसुदेवकी पत्नी और श्रीयशोदाकी प्रियसखी।
देवप्रस्थ	(ल २९)	श्रीकृष्णका कनिष्ठकल्प सखा।
देवप्रस्थ	(ल ९१)	पौर्णमासीका भ्राता।
देवर्षि	(७०, २३२)	पौर्णमासीके गुरु श्रीनारद।
द्रोण	(२६)	एक वसु।

ध

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
धनाश्री	(ल २११)	श्रीराधाका प्रियराग।
धनिष्ठा	(२४२, ल ८३, ल १८७)	श्रीललिताकी सखी।
धमनी	(६२)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
धरा	(६२)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
धातकी	(ल १७१)	श्रीराधाकी मामी।
धात्री	(ल १७१)	श्रीराधाकी मामी।
धीमान्	(ल ८५)	श्रीकृष्णका उत्तम चर।
धूरीण	(५८)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
धुर्व	(५८)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
धन्यधन्य	(११५)	शिखावतीके पिता; पत्नी–सुशिखा।
	न	
नन्द	(१८, २३(ख)–२५, ३१, ६०, ल ७०)	पर्जन्यके पाँच पुत्रोंमें मध्यम; श्रीकृष्णके पिता।
नन्दन	(३३, ३७(ख))	नन्दके कनिष्ठ भ्राता।
नन्दा	(२५०)	श्रीराधाकी आठ सखियोंमेंसे आठवीं (सम्मोहन तन्त्रके अनुसार)।
नन्दि	(ल २२)	श्रीकृष्णके भ्रातासे सम्बन्धित सुहृत्।
नन्दिनी	(३९)	श्रीकृष्णकी बुआ।
नर्मदा	(ल १९२)	श्रीराधाकी सखी।
नर्मदा	(ल २०९)	श्रीराधिकाका शलाका।
नलिनी	(ल १९४)	श्रीराधाके नापितकी कन्या।
नवरत्नविड़म्बम्	(ल १३१)	श्रीकृष्णका शिखण्डमुकुट।
नागरी	(२४५)	चित्राकी सप्तम सखी।
नागवेणिका	(२४५)	चित्राकी अष्टम सखी।
नान्दीमुखी	(ल ६५, ल ८७, ल ९९, ल १८९)	श्रीकृष्णकी दूती।
निगमशोभनम्	(ल १२६)	श्रीकृष्णका पीताम्बर।
नीति	(६२)	श्रीकृष्णकी जननीके समान गोपी।
नीतिसार	(ल ८६)	श्रीकृष्णका दूत; सेवा—गोपीकुलके केली–कलाओंमें निपुण।
नेत्रमञ्जरी	(ल १८४)	श्रीराधाकी मञ्जरी।
	प	
पक्षति	(६३)	श्रीकृष्णकी जननीके समान गोपी।
पङ्कजाक्षी	(२४४)	चम्पकलताकी सातवीं सखी।
पटीर	(५८)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
पट्टिश	(५७)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
पतत्रि	(१०१)	पीठरका अनुज, शुभाङ्गदाका पति।
पत्रक	(ल ७३)	श्रीकृष्णका चेट।
पत्री	(ल ७३)	श्रीकृष्णका चेट।
पद्मगन्ध	(ल ११०)	श्रीकृष्णके प्रिया बलीवर्द्द।
पद्ममञ्जरी	(ल १८४)	श्रीराधाकी नित्यसखी।
पद्मा	(ल १३६)	चन्द्रावलीकी सखी।
पयोद	(ल ७७, ल १९८)	श्रीकृष्णका जलसेवक।
पयोनिधि	(१११-११२)	वृषभानुकी माताकी बहनका पुत्र।
पर्जन्य	(१५-२०, ६०)	श्रीकृष्णके दादा।
पल्लव	(ल ७५)	श्रीकृष्णका ताम्बूलिक।
पवन	(ल १०६)	श्रीकृष्णका कुम्भकार।
पाटका	(६३)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
पालिका	(ल १३६, ल १४१)	यूथेश्वरी सखी।
पालिन्धिका	(१९१)	साधारणा दूती।
पालिन्द्री	(ल १९५)	श्रीराधाकी सैरिन्ध्री।
पावन	(४९(क), ८४)	विशाखाके पिता।
पिककण्ठी	(ल १९१)	श्रीराधाकी गान्धर्व सखी।
पिङ्ग	(५७)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
पिङ्गल	(५७, ल ५४)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
पिङ्गला	(ल १०९)	श्रीकृष्णकी श्रेष्ठ धेनु।
पिण्डकेलि	(२०५(ख), २०५, २२०)	श्रीराधाकी सखी।
पिशङ्गाक्ष	(ल ११०)	श्रीकृष्णका बलीवर्द्द।
पिशङ्गी	(ल १०९)	श्रीकृष्णकी धेनु।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
पिशङ्गी	(ल १९९)	श्रीराधा-किङ्करी, वाहिका।
पीठ	(५७)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
पीठर	(८९, १०१)	चित्रादेवीके पति; पतत्रिणके अग्रज।
पीवरी	(३५)	अभिनन्दकी पत्नी।
पुण्डवाणिका	(५६)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
पुण्डरीक	(ल ३२)	श्रीकृष्णका प्रियसखा।
पुण्डरीका	(२०६, २०९)	श्रीराधाकी सखी।
पुण्डी	(६३)	श्रीकृष्णकी जननीके समान गोपी।
पुण्यपुञ्ज	(ल १०५)	श्रीकृष्णका हड्डिप (मेहतर)।
पुञ्जपुण्या	(ल १९६)	श्रीराधाके हड्डिपकी कन्या।
पुरट	(५३)	श्रीकृष्णके नानाके समान गोप।
पुष्कर	(९१, ल ५८)	तुङ्गविद्याके पिता; पुत्र—कोकिल।
पुष्पहास	(ल ८०)	श्रीकृष्णका गान्धिक।
पुष्पाकर	(११७)	कन्दर्पमञ्जरीके पिता।
पुष्पाङ्क	(ल ४२)	श्रीकृष्णका विदूषक।
पेटरी	(२१९, २२१)	श्रीकृष्णकी दूती।
पेशल	(ल ८५)	श्रीकृष्णका श्रेष्ठ चर।
पौर्णमासी	(६९, ल ६५, ल ८७, ल ८९-९१, ल १००, ल १८५)	श्रीकृष्णकी दूती; श्रीनारदकी शिष्या।
प्रगुण	(ल ८२)	श्रीकृष्णका कोषाध्यक्ष।
प्रबल	(ल ९०)	पौर्णमासीका पति।
प्रभा	(६२)	श्रीकृष्णकी जननीके समान गोपी।
प्रभाकरी	(ल २०३)	श्रीराधाके नाकमें अवस्थित मुक्ता।
प्रलम्बाराति	(ल २०)	श्रीबलदेव, श्रीकृष्णके अग्रज, वयस्य-गणोंके अग्रगामी।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
प्राघार	(६६)	श्रीकृष्णके कुलद्विज।
प्रियङ्कर	(ल ३२)	श्रीकृष्णके प्रियसखा।
प्रियम्वदा	(ल १७९)	श्रीराधाकी प्राणसखी।
प्रेमकन्द	(ल ७९)	श्रीकृष्णका वेश करनेवाला सेवक।
प्रेममञ्जरी	(२४८, ल १७८, ल १८३)	रङ्गदेवीकी सखी।
प्रेमवती	(ल १९२)	श्रीराधाकी सखी।

फ

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
फुल्ल	(ल ७५)	श्रीकृष्णका ताम्बूलिक।
फुल्लकलिका	(९८, ११९–१२०)	श्रीराधाकी वरगणके अन्तर्गत सखियोंमेंसे सप्तम।
फुल्लरा	(ल ९७)	वृन्दाकी माता; पति—चन्द्रभानु।

ब

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
बलराम [राम]	(३२, ल २०, ल ६६–७१)	श्रीकृष्णके ज्येष्ठ भ्राता।
बलाका	(४५(क))	चन्द्रमुखकी पत्नी।
बहुला	(ल २००)	श्रीराधाकी प्रियधेनु।
बालिश	(९१)	तुङ्गविद्याका पति।
बिन्दुला	(ल १९९)	श्रीराधाकी किङ्करी, वाहिका।
बिन्दुवती	(ल १८९)	श्रीराधा और श्रीकृष्णकी सन्धि विधान करानेवाली सखी।
बिम्बिनी	(६२)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।

भ

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
भङ्गी	(५४)	श्रीकृष्णकी दादीके समान वृद्धा गोपी।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
भङ्गुर	(ल ७३)	श्रीकृष्णका चेट।
भङ्गुरा, [भाङ्गिला]	(५४)	श्रीकृष्णकी दादीके समान वृद्धा गोपी।
भट	(ल २३)	श्रीकृष्णका ज्येष्ठकल्प सुहृत्।
भद्रकीर्त्ति	(ल १७१)	श्रीराधाका मामा।
भद्रवर्द्धन	(ल २३)	श्रीकृष्णका ज्येष्ठकल्प सुहृत्।
भद्रसेन	(ल ३१, ल ३३)	श्रीकृष्णका प्रियसखा।
भद्रा	(ल ४८, ल १३६, ल १४१)	श्रीराधाकी मुख्या यूथेश्वरी।
भद्राङ्ग	(ल २३)	श्रीकृष्णका ज्येष्ठकल्प सुहृत्।
भागुरि	(६७, १०४)	श्रीकृष्णके पुराहित।
भाग्यराशि	(ल १०५)	श्रीकृष्णका हड्डिप (मेहतर)।
भाग्यवती	(ल १९६)	श्रीराधाके हड्डिप (मेहतर)की कन्या।
भाद्रपदाष्टमी	(ल २१२)	श्रीराधाकी जन्मतिथि।
भानु	(ल १७०)	श्रीराधाके चाचा।
भानुमती	(ल १८४)	रतिमञ्जरीका नामान्तर।
भानुमुद्रा	(ल १७२)	श्रीराधाके पिताकी बहन।
भारत	(ल १०४)	श्रीराधाका भृत्य।
भारती	(ल १३९)	यूथेश्वरी सखी।
भारतीबन्ध	(ल ७२)	श्रीकृष्णका विट।
भारशाखा	(५४)	श्रीकृष्णकी दादीके समान वृद्धा गोपी।
भारुणी	(५४)	श्रीकृष्णकी दादीके समान वृद्धा गोपी।
भारुण्डा	(५५)	श्रीकृष्णकी दादीके समान वृद्धा गोपी।
भार्गवी	(६८)	वृजमें पूजित वृद्ध ब्राह्मणी।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
भुवनमोहिनी	(ल १२१)	श्रीकृष्णकी वंशी।
भृङ्ग	(५७)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
भृङ्गार	(ल ७३)	श्रीकृष्णका चेट।
भृङ्गारिका	(ल १९८)	श्रीराधाकी चेटी।
भृङ्गारी	(ल ८४)	श्रीकृष्णकी चेटी।
भृङ्गी	(ल १९७)	श्रीराधाकी परिचारिका पुलिन्द कन्या।
भेला	(५५)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
भैरव	(८२, ९५)	श्रीललितादेवीका पति, गोवर्द्धन मल्लका सखा।
भोगिनी	(६२)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
भ्रमरक	(ल १११)	श्रीकृष्णका कुत्ता।

म

मकरन्द	(ल ७९)	श्रीकृष्णको वेश धारण करानेवाला सेवक।
मङ्गल	(५७)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
मङ्गल	(ल ७५)	श्रीकृष्णका ताम्बूलिक।
मङ्गला	(ल १३७, ल १८९)	श्रीराधाकी सुहृतपक्ष यूथेश्वरी।
मङ्गला	(ल १०९)	श्रीकृष्णकी प्रिय धेनु।
मञ्जरी	(ल ९७)	वृन्दाकी बहन।
मञ्जिष्ठा	(ल १९४)	श्रीराधाकी रजक कन्या।
मञ्जुकेशिका	(२४९, ल १७८)	सेदुवीकी चतुर्थ सखी।
मञ्जुभाषिणी	(ल १३७)	यूथेश्वरी गोपी।
मञ्जुमेधा	(१८५(ख), २४६, ल १७७)	तुङ्गविद्याकी प्रथम सखी।
मञ्जुलशर	(ल १२०)	श्रीकृष्णके धनुषका गुण।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
मञ्जुला	(ल १८८)	श्रीराधाकी दासी।
मञ्जुला	(ल १९९)	श्रीराधाकी किङ्करी, वाहिका।
मटुक	(ल ४०, ल ६२)	सुदाम-विदग्धके पिता।
मणिकर्बुरे	(ल २०५)	श्रीराधाकी केयूर।
मणिकस्तनी	(ल १०९)	श्रीकृष्णकी धेनु।
मणिकुण्डला	(२४४, ल १७६)	चम्पकलताकी सखी।
मणिबन्ध	(ल २९)	श्रीकृष्णका कनिष्ठकल्प सखा।
मणिबन्धा	(ल १२०)	श्रीकृष्णके धनुषका अग्रभाग।
मणिबान्धव	(ल २०८)	श्रीराधाका दर्पण।
मणिमञ्जरी	(ल १८१, ल १८३)	श्रीराधाकी नित्यसखी मञ्जरी।
मणिमती	(ल १८०)	श्रीराधाकी प्राणसखी।
मण्डन	(ल १२४)	श्रीकृष्णका दण्ड।
मण्डल	(ल २२)	श्रीकृष्णके चाचाका पुत्र, सुहृत।
मण्डली	(२४४, ल १७६)	चम्पकलताकी तृतीय सखी।
मण्डलीभद्र	(ल २३)	श्रीकृष्णका ज्येष्ठकल्प सुहृत्।
मतल्ली	(ल १९७)	श्रीराधिकाकी परिचारिका।
मदनम्	(ल २०४)	श्रीराधाका पदक।
मदनझङ्कृति	(ल १२२)	छह छिद्रोंसे युक्त श्रीकृष्णका वेणु।
मदनालसा	(२४७, ल १७६)	इन्दुलेखाकी आठवीं सखी।
मदिरा	(ल १८१)	श्रीराधाकी नित्यसखी।
मदनोन्मदा	(ल १८०)	श्रीराधाकी प्राणसखी।
मधुकण्ठ	(ल ७३)	श्रीकृष्णका चेट।
मधुकन्दल	(ल ७९)	श्रीकृष्णका वेशकारी।
मधुमङ्गल	(ल ४२, ल ६४-६५, ल १००, ल १९८)	श्रीकृष्णका प्रियनर्म सखा।
मधुमती	(ल १८०)	श्रीराधाकी प्राणसखी।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
मधुमारुतम्	(ल ११९)	श्रीकृष्णका व्यजन।
मधुरराव	(ल १०३)	श्रीकृष्णका स्तुति पाठक।
मधुरा	(२४८)	रङ्गदेवीकी चतुर्थ सखी।
मधुरेक्षणा	(२४६, ल १७७)	तुङ्गविद्याकी चतुर्थ सखी, श्रीराधाकी प्रियसखी।
मधुव्रत	(ल ७३)	श्रीकृष्णका चेट।
मधुस्पन्दा	(२४६)	तुङ्गविद्याकी छठी सखी।
मनोज्ञा	(ल १८१)	श्रीराधाकी नित्यसखी।
मनोरम	(ल ८६)	श्रीकृष्णका दूत।
मनोरमा	(ल १३७)	यूथेश्वरी सखी।
मनोहरा	(२४९)	सुदेवीकी अष्टम सखी।
मन्दर	(ल ३०)	श्रीकृष्णका कनिष्ठकल्प सखा।
मन्द्रघोष	(ल १२१)	श्रीकृष्णका विषाण।
मन्दार	(ल २९)	श्रीकृष्णका कनिष्ठकल्प सखा।
मल्ल	(११९)	फुल्लकलिकाका पिता; पत्नी—कमलिनी।
मल्लार	(ल २११)	श्रीराधाका प्रिय राग।
मल्लिका	(ल ६०)	सनन्दनकी माता; पति—अरुण।
मल्ली	(ल १९७)	श्रीराधाकी परिचारिका पुलिन्द कन्या।
मसृणा	(६१)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
मस्कर	(५८)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
महाकव्या	(६६)	श्रीकृष्णके कुलद्विजकी पत्नी।
महाकीर्त्ति	(ल १७१)	श्रीराधाका मामा।
महागन्ध	(ल ७९)	श्रीकृष्णका वेशकारी।
महागुण	(ल २३)	श्रीकृष्णका ज्येष्ठकल्प सुहृत्।
महानन्दा	(ल १२२)	श्रीकृष्णकी वंशी।
महानील	(४०)	श्रीकृष्णकी बुआ सानन्दाके पति।
महाभीम	(ल २४)	श्रीकृष्णका ज्येष्ठकल्प सुहृत्।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
महायज्वा	(६७)	श्रीकृष्णके पुरोहित।
महारक्षा	(ल १२५)	श्रीकृष्णका भुज-भूषण; नवरत्नोंसे मण्डित।
महावसु	(१०३-११०)	स्तोककृष्ण-हिरण्याङ्गीके पिता।
महाहीरा	(२४९)	सुदेवीकी छठी सखी।
महीपाल	(ल ९७)	वृन्दाके पति।
महीभानु	(ल १६९ (ख)-७२)	श्रीराधाके दादा।
माठर	(५७)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
माणिकी	(ल १९२)	श्रीराधाकी सखी।
माधवी	(१७०, २४३, २५०, ल १७६)	श्रीविशाखाकी प्रथम सखी।
माधुरी	(ल १७८)	श्रीराधाकी प्रियसखी।
माध्वी	(२५१)	श्रीराधाकी अन्य आठ सखियोंमें सप्तम सखी।
मानधर	(ल ७३)	श्रीकृष्णका चेट।
मान्त्रिकी	(ल १९५)	श्रीराधाकी दैवज्ञा।
मारुण्डा	(२२०, २२३)	श्रीराधाकी दूती।
मालती	(१७०, २४३, ल १७६)	श्रीविशाखाकी द्वितीय सखी, श्रीराधाकी प्रियसखी।
मालाधर	(ल ७३)	श्रीकृष्णका चेट।
मालिका	(६१)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
मालिका	(१७१)	विशाखाकी सखी।
माली	(ल ७३)	श्रीकृष्णका चेट।
मित्रा	(१११)	रत्नलेखाकी माता।
मित्रा	(ल ५२)	गन्धर्वकी माता।
मित्रा	(६२)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
मुखरा	(४४, ८४,	श्रीकृष्णकी नानीकी सहचरी,

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
मुखरा	ल १७०(क))	यशोदाकी स्तन्य दात्री, श्रीराधाकी नानी।
मुरला	(ल ८७)	श्रीकृष्णकी दूती।
मुरली	(२१७–२१८)	श्रीराधिकाकी दूती।
मृदुला	(ल १९९)	श्रीराधाकी किङ्करी, वाहिका।
मेघाम्बरम्	(ल २०७)	श्रीराधिकाका मेघके समान रङ्गवाला प्रियवस्त्र।
मेचका	(२०६, २१६)	श्रीराधाकी सखी।
मेदुरा	(६१)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
मेधा	(९१, ल ५८)	तुङ्गविद्या और कोकिलकी माता।
मेनका	(ल १७१)	श्रीराधाकी मामी।
मेला	(२१७–२१८, ल ८७)	श्रीकृष्णकी दूती।
मोदनी	(२४७)	इन्दुलेखाकी सातवीं सखी।
मोरटा	(२२०, २२४)	श्रीराधाकी दूती।
मोहनी	(ल ९४)	वीराकी माता।

य

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
यक्षेन्द्र	(ल २३)	श्रीकृष्णका ज्येष्ठकल्प सुहृत्।
यमुना	(ल २००)	श्रीराधाकी प्रिय धेनु।
यशस्विनी	(४९(ख))	श्रीकृष्णकी मौसी; नामन्तर—हविसारा।
यशोदा	(२५, २८–३१)	श्रीकृष्णकी माता; नामान्तर—देवकी।
यशोदेव	(४७(ख))	श्रीकृष्णके मध्यम मामा।
यशोदेवी	(४९(ख))	श्रीकृष्णकी मौसी; नामान्तर—दधिसारा।
यशोधर	(४७(ख))	श्रीकृष्णके ज्येष्ठ मामा।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
		र
रक्तक	(ल ७३, ल १९८)	श्रीकृष्णका चेट।
रङ्गन	(ल १०६)	श्रीकृष्णका स्वर्णकार।
रङ्गद	(ल १२६)	श्रीकृष्णका अङ्गद।
रङ्गदेवी	(७९, ९४-९५, १९४-१९८, २४८, ल १७५)	श्रीराधाकी प्रधान अष्ट सखियोंमेंसे परमप्रेष्ठ सातवीं सखी।
रङ्गरागा	(ल १९४)	श्रीराधाकी सेविका रजककी कन्या।
रङ्गवाटी	(२४७)	इन्दुलेखाकी तृतीय सखी।
रङ्गसार	(९५(ख))	रङ्गदेवीके पिता; पत्नी—करुणा।
रङ्गावली	(१६९(ख))	विशाखाकी सखी।
रङ्गिणी	(१०६, ल २००)	श्रीराधाकी हिरणी।
रञ्जन	(ल १०५)	श्रीकृष्णका रजक।
रणस्थिर	(ल २४)	श्रीकृष्णका ज्येष्ठकल्प सुहृत्।
रतिकला	(१३८, २४२)	श्रीललिताकी अष्ठसखियोंमेंसे द्वितीय।
रतिका	(२४२)	श्रीललिताकी चतुर्थ सखी।
रतिप्रभा	(ल ८३)	श्रीकृष्णकी परिचारिका।
रतिमञ्जरी	(ल १८२, ल १८४)	श्रीराधाकी मञ्जरी।
रत्नपारम्	(ल १३०)	श्रीकृष्णका किरीट।
रत्नप्रभा	(१३८, २४२)	श्रीललिताकी अष्टसखियोंमेंसे प्रथम, श्रीराधाकी प्रियसखी।
रत्नभवा	(२५२)	सम्मोहन तन्त्रमें उक्त सखियाँ।
रत्नभानु	(ल १७०(ख))	श्रीराधाका चाचा।
रत्नमञ्जरी	(ल १८३)	श्रीराधाकी मञ्जरी।
रत्नमुखी	(ल १२६)	श्रीकृष्णकी अँगूठी।
रत्नलेखा	(९८, १११-११४)	पयोनिधिकी कन्या।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
रत्नावली	(ल १८०)	श्रीराधाकी प्राणसखी।
रमा	(ल १३४)	लक्ष्मी।
रम्भा	(ल ८३)	श्रीकृष्णकी परिचारिका।
रसमञ्जरी	(ल १८२)	श्रीराधाकी नित्यसखी, मञ्जरी।
रसवती	(२५१)	श्रीराधाकी आठ सखियोंमें द्वितीय (सम्मोहन तन्त्रके अनुसार)।
रसशाली	(ल ७६)	श्रीकृष्णका ताम्बूलिक।
रसाल	(ल ७६)	श्रीकृष्णका ताम्बूलिक।
रसालिका	(१८१, २४५)	चित्राकी अष्टसखियोंमें प्रथम।
रसोत्तुङ्गा	(२४७)	इन्दुलेखाकी आठ सखियोंमेंसे द्वितीय।
रसोल्लासा	(ल १९१)	श्रीराधाकी गान्धर्व सखी।
रागमञ्जरी	(ल १८२)	श्रीराधाकी नित्यसखी, मञ्जरी।
रागलेखा	(ल १८८)	श्रीराधाकी दासी
रागवल्ली	(ल १३१)	श्रीकृष्णकी गुञ्जामाला।
राजन्य	(२२, ४१)	श्रीकृष्णके पिताके चाचा।
राधा [राधिका]	(ल १३५–१७५)	श्रीकृष्णकी प्रेयसियोंमें मुख्य।
रामची	(२०६, २१५)	श्रीराधाकी सखी, ललिताकी धात्रीकी पुत्री।
रामिला	(२४५)	चित्राकी आठ सखियोंमें पाञ्चम।
रुद्रवल्लकी	(ल २११)	श्रीराधाकी वीणा।
रूपमञ्जरी	(ल १८२)	श्रीराधाकी नित्यसखी मञ्जरी।
रेमा	(४९(क))	श्रीकृष्णकी मामी; पति—यशोधर।
रोमा	(४९(क))	श्रीकृष्णकी मामी; पति—यशोदेव।
रोचन	(ल २०३)	श्रीराधाका रत्न कुण्डल।
रोचना	(ल ४०, ल ६२)	सुदाम और विदग्धकी जननी।
रोहिणी	(३२, ल ६९)	श्रीकृष्णकी बड़ी माँ, श्रीबलरामकी माता।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
रौचिक	(ल १०५)	श्रीकृष्णका दर्जी।

ल

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
लम्बिका	(ल ८४)	श्रीकृष्णकी चेटी।
ललिता	(७९-८२, १२२, १२९-१३८, १४३, १९१, २२७-२२८, २४२, २५०, ल १३५, ल १७५, ल १८६, ल २०२)	श्रीराधाकी प्रधान आठ सखियोंमेंसे परमप्रेष्ठा प्रथम सखी।
लवङ्गमञ्जरी	(ल १८२)	श्रीराधाकी नित्यसखी मञ्जरी।
लासिका	(ल १७९)	श्रीराधाकी प्राणसखी।
लीला	(ल १३७)	यूथेश्वरी सखी।
लीलामञ्जरी	(ल १८४)	श्रीराधाकी नित्यसखी मञ्जरी।
लीलावती	(२५०)	श्रीराधाकी आठ सखियोंमें प्रथम (सम्मोहन तन्त्रके अनुसार)।

व

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
वंशी	(ल ८७-८८)	श्रीकृष्णकी दूती।
वंशीप्रिया	(ल १०९)	श्रीकृष्णकी प्रियधेनु।
बकुल	(ल ७८)	श्रीकृष्णका वस्त्रसेवक (रजक)।
वक्रेक्षण	(९५(ख))	रङ्गदेवीके पति, भैरवके कनिष्ठ भ्राता।
वत्सला	(६१)	श्रीकृष्णकी जननीके समान गोपी।
वनमाला	(ल १३२)	श्रीकृष्णके चरण तक लम्बी पत्र-पुष्पसे बनी माला।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
वराङ्गदा	(२४६, ल १७७)	तुङ्गविद्याकी आठ सखियोंमेंसे आठवीं, श्रीराधाकी प्रियसखी।
वरारोह	(५३)	श्रीकृष्णके नानाके समान गोप।
वरीयसी	(२१)	श्रीकृष्णकी दादी।
वरीषण	(५३)	श्रीकृष्णके नानाके समान गोप।
वरूथप	(ल २९)	श्रीकृष्णका कनिष्ठकल्प सखा।
वर्त्तिका	(६३)	श्रीकृष्णकी जननीके समान गोपी।
वर्द्धमान	(ल १०७)	श्रीकृष्णका सूत्रधर।
विशाला	(६३)	श्रीकृष्णकी जननीके समान गोपी।
वषट्कार	(६६)	श्रीकृष्णका कुलद्विज।
वसन्त	(ल ४१, ल ५३)	श्रीकृष्णका प्रियनर्म सखा।
वसुदामा	(ल ३१, ल ४८)	श्रीकृष्णका प्रियसखा।
वसुदेव	(२५–२६, ल ६९)	श्रीनन्दके सहृत्तम; नामान्तर— आनकदुन्दुभि; द्रोण स्वरूपका अंश।
वाटिका	(८७)	चम्पकलताकी माता।
वाटुक	(४१(ख), ५१)	राजन्यका पुत्र।
वामनी	(६८)	व्रजमें पूजित वृद्ध ब्राह्मणी।
वारिद	(ल ७७)	श्रीकृष्णका जलसेवक।
वारुडी	(२१९, २२१)	श्रीकृष्णकी दूती।
वावदूक	(ल ८६)	श्रीकृष्णका दूत।
वासन्ती	(ल १८०)	श्रीराधाकी प्राणसखी।
वाहिक	(८५, १००)	श्रीविशाखाके पति।
विचक्षण	(ल १११)	श्रीकृष्णका शुक।
विचित्र	(ल १०७)	श्रीकृष्णका चित्रकार।
विचित्रराव	(ल १०३)	श्रीकृष्णका स्तुतिपाठक।
विचित्रा	(ल १३६)	यूथेश्वरी सखी।
विचित्राङ्गी	(२४७)	इन्दुलेखाकी आठ सखियोंमेंसे छठी।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
विजया	(२५०)	श्रीराधाकी आठ सखियोंमेंसे छठी (सम्मोहन तन्त्रके अनुसार)।
विजयाक्ष	(ल २६)	श्रीकृष्णका ज्येष्ठकल्प सुहृत्।
विटङ्काक्ष	(ल ३२)	श्रीकृष्णका प्रियसखा।
वितण्डिका, (निर्वितण्डिका)	(२०५(ख), २०८)	श्रीकृष्णकी सखी।
विदग्ध	(ल ४१, ल ६१-६३)	श्रीकृष्णका प्रियनर्म सखा।
विदुर	(१२०)	फुल्लकलिकाका पति।
विद्याविलास	(ल १०४)	श्रीकृष्णका साधारण भृत्य।
विनाक	(ल ५२)	गन्धर्वके पिता।
विपक्षमदमर्दिनी	(ल २०६)	श्रीराधाकी नामाङ्कित मुद्रा (अङ्गूठी)।
विमल	(ल ८२)	श्रीकृष्णका दास।
विमला	(ल १३७)	यूथेश्वरी सखी।
विलासकार्मणम्	(ल १२०)	श्रीकृष्णका स्वर्ण चित्रित धनुष।
विलासमञ्जरी	(ल १८३)	श्रीराधाकी नित्यसखी मञ्जरी।
विलास	(ल ७६)	श्रीकृष्णका ताम्बूलिक।
विशाखा	(७९, ८३-८५, ८७, १०१, १२२, १६१-१७१, २४३, २५१, ल १३५, ल १७५, ल १९१)	श्रीराधाकी प्रधान आठ सखियोंमेंसे परमप्रेष्ठा द्वितीय प्रियनर्म सखी।
विशारदा	(ल १३८)	यूथेश्वरी सखी।
विशाल	(ल २९)	श्रीकृष्णका कनिष्ठकल्प सखा।
विशाल	(ल ९४)	वीराका पिता; पत्नी—मोहिनी।
विशोक	(८२)	श्रीललिताके पिता; पत्नी—सारदी।
वीरभद्र	(ल २३)	श्रीकृष्णका ज्येष्ठकल्प सुहृत्।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
वीरा	(ल ८७, ल ९२–९५)	श्रीकृष्णकी दूती।
वीरारोह	(५३)	श्रीकृष्णके नानाके समान गोप।
वृक	(ल १७३(ख))	श्रीराधाके ससुर।
वृन्दा	(२१७–२१४, ल ८७–८८, ल ९६, ल १८७)	श्रीकृष्णकी दूती।
वृन्दारिका	(२१७, ल ८७)	श्रीकृष्णकी दूती।
वृषभ	(ल २९–३०)	श्रीकृष्णका कनिष्ठकल्प सखा।
वृषभानु	(२७, ११३, ल ३४, ल १६८(ख))	श्रीराधाके पिता, श्रीनन्दके सखा।
वेणी	(ल ५६)	उज्ज्वलकी माता।
वेदगर्भ	(६७)	श्रीकृष्णका पुरोहित।
वेदिका	(६६)	श्रीकृष्णके कुलद्विजकी पत्नी।
वेणा	(६३)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
बेला	(९३)	इन्दुलेखाकी माता।
वैजयन्ती	(ल १३२)	श्रीकृष्णकी पाँचवर्ण–पुष्पमयी माला।
व्याघ्र	(ल १११)	श्रीकृष्णका कुत्ता।

श

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
शङ्कर	(५७)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
शङ्करी	(ल १३८)	यूथेश्वरी सखी।
शङ्किनी	(६२)	श्रीकृष्णकी जननीके समान गोपी।
शरदिन्दु	(ल ११९)	श्रीकृष्णका दर्पण।
शल्लकी	(६३)	श्रीकृष्णकी जननीके समान गोपी।
शशिकला	(२४८, ल १७ ७)	रङ्गदेवीकी आठ सखियोंमेंसे द्वितीय।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
शशिमुखी	(ल १७९)	श्रीराधाकी प्राणसखी।
शाण्डिली	(६८)	व्रजमें पूजित वृद्ध ब्राह्मणी।
शान्तिदा	(२२६, २३२)	श्रीकृष्णकी सन्धि दूती।
शारङ्गी	(ल १३८)	यूथेश्वरी सखी।
शारदा	(२५१)	श्रीराधाकी आठ सखियोंमेंसे आठवीं (सम्मोहन तन्त्रके अनुसार)।
शारदाक्षी	(ल १३८)	यूथेश्वरी सखी।
शारिका	(६२)	श्रीकृष्णकी जननीके समान गोपी।
शारी	(ल १३८)	यूथेश्वरी सखी।
शारदी	(ल ५४)	वसन्तकी माता; पति—पिङ्गल।
शार्वी	(६७)	श्रीकृष्णके पुरोहितकी पत्नी।
शालिक	(ल ७३)	श्रीकृष्णका चेट।
शिखा	(५४)	श्रीकृष्णकी दादीके समान वृद्धा गोपी।
शिखावती	(९८, ११५)	श्रीराधाके वर गणोंके अन्तर्गत सखियोंमेंसे पञ्चम सखी।
शिलाभेरी	(५४)	श्रीकृष्णकी दादीके समान गोपी।
शिवदा	(२२६, २३१)	श्रीकृष्णकी सन्धि दूती।
शिवा	(ल १३८)	यूथेश्वरी सखी।
शुभद	(ल २३)	श्रीकृष्णका ज्येष्ठकल्प सुहृत्।
शुभदा	(६१)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
शुभा	(ल २०१)	श्रीराधाकी शारिका।
शुभाङ्गदा	(९८, १०१)	श्रीराधाकी वरा आठ सखियोंमेंसे द्वितीय; श्रीविशाखाकी कनिष्ठ बहन।
शुभानना	(२४३)	विशाखाकी अष्ट सखियोंमेंये आठवीं।
शैब्या	(ल १३६)	यूथेश्वरी सखी।
शोभन	(ल १०२)	श्रीकृष्णका साधारण भृत्य।
शोभा	(ल ८३)	श्रीकृष्णकी परिचारिका।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
शौरसेनी	(२४५)	चित्राकी आठ सखियोंमेंसे तृतीया।
श्यामला	(ल १४१, ल १८९)	यूथेश्वरी सखी, श्रीराधाकी सुहृत्पक्षा।
श्यामा	(ल १३६)	यूथेश्वरी सखी।
श्रीदामा	(ल ३१-३२, ल ३९-४०, ल १७३)	श्रीकृष्णके प्रियसखा।
श्रीमती	(२५१)	श्रीराधाकी अन्य आठ सखियोंमेसे तृतीया।

ष

षष्ठी	(ल १७१)	श्रीराधाकी मामी।

स

सङ्गर	(५७)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
सदा-शान्ता	(२२६, २३१)	श्रीकृष्णकी सन्धिदूती।
सदास्मेरम्	(ल ११९)	श्रीकृष्णका लीलापद्म।
सनन्दन	(ल ४१, ल ४३, ल ५९-६०)	श्रीकृष्णका प्रियनर्म सखा।
सन्धा	(ल १९९)	श्रीराधाकी किङ्करी, वाहिका।
सन्नन्द	(३३, ३६)	श्रीकृष्णके चाचा।
सरला	(ल १२३)	श्रीकृष्णकी मुरली।
सरस	(ल १०४)	श्रीकृष्णका साधारण-भृत्य।
सर्वदा	(ल १९९)	श्रीराधाकी वाहिका।
सागर	(९३)	इन्दुलेखाके पिता।
सागर	(ल ५६)	उज्ज्वलके पिता।
साधिका	(२५०)	श्रीराधाकी आठ सखियोंमेंसे तृतीय (सम्मोहन तन्त्रके अनुसार)।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
सानन्द	(ल १०२)	श्रीकृष्णका साधारण-भृत्य।
सानन्दा	(३९)	श्रीकृष्णकी बुआ।
सान्दीपनि	(७१, ल ६५, ल ९९)	श्रीकृष्णके आचार्य।
सान्धिक	(ल ७३)	श्रीकृष्णका चेट।
सामधेनी	(६६)	श्रीकृष्णके कुलद्विजकी पत्नी।
सारघ	(५७)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
सारङ्ग	(ल ७८)	श्रीकृष्णका वस्त्रसेवक।
सारद	(ल १०४)	श्रीकृष्णका साधारण भृत्य।
सारदी	(८२)	श्रीललिताकी माता।
सिताखण्डी	(२०६, २१०)	श्रीराधाकी सखी।
सिन्धुमती	(९९)	कलावतीकी माता।
सिन्दूरा	(ल १८१)	श्रीराधाकी नित्यसखी।
सुकण्ठ	(ल १०४)	श्रीकृष्णका साधारण सेवक।
सुकण्ठी	(ल १९१)	श्रीराधाकी गान्धर्व सखी।
सुकेशी	(२४९)	सुदेवीकी आठ सखियोंमेंसे तृतीय।
सुखदा	(ल १७०(क))	श्रीराधाकी दादी।
शिखाम्बरा	(५४)	श्रीकृष्णकी दादीके समान वृद्धा गोपी।
सुगन्ध	(ल ८१)	श्रीकृष्णका नापित।
सुगन्धा	(ल १९४)	श्रीराधाकी सेविका नापित-कन्या।
सुगन्धिका	(२४५)	चित्राकी आठ सखियोंमेसे चतुर्थ।
सुघन्टिका	(५५)	श्रीकृष्णकी नानीके समान गोपी।
सुमुख	(६०)	पर्जन्यका सखा।
सुचन्द्रा	(१०५, १०८)	स्तोककृष्णकी माता; पति—महावसु।
सुचरिता	(२४४)	चम्पकलताकी आठ सखियोंमेसे द्वितीय।
सुचारु	(५१)	चारुमुखका पुत्र।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
सुचित्र	(ल १०७)	श्रीकृष्णका चित्रकार।
सुचित्रा	(ल १७५)	चित्राका नामान्तर।
सुतुण्डा	(६३)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
सुदक्षिण	(ल ४८)	अर्जुनके पिता।
सुदण्डिका	(२१२, २०६)	श्रीकृष्णकी सखी।
सुदामा	(ल ३१, ल ३९-४०, ल ६३)	श्रीकृष्णका प्रियसखा।
सुदेव	(४७(ख))	श्रीकृष्णके कनिष्ठ मामा।
सुदेवी, [सुदेविका]	(७९, ९६, १९९-२०४, २४९, ल १७५)	श्रीराधाकी प्रधान आठ सखियोंमेंसे परमप्रेष्ठा अष्टम सखी।
सुधाकण्ठ	(ल १०४)	श्रीकृष्णका साधारण भृत्य।
सुधाकर	(ल १०२)	श्रीकृष्णका साधारण भृत्य।
सुधानाद	(ल १०२)	श्रीकृष्णका साधारण भृत्य।
सुधामुखी	(२५१)	श्रीराधाकी अन्य आठ सखियोंमेंसे चतुर्थ (सम्मोहनतन्त्रके अनुसार)।
सुनदा	(ल २००)	श्रीराधाकी प्रिय धेनु।
सुनन्द	(ल २२)	श्रीकृष्णके ज्येष्ठकल्प सुहृद्भ्राता; सेवा—संरक्षण।
सुनील	(४०(क))	श्रीकृष्णकी बुआका पति।
सुपक्ष	(५९)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
सुप्रसादा	(२२६, २३१)	श्रीकृष्णकी सन्धि दूती।
सुबन्ध	(ल ८१)	श्रीकृष्णका नापित।
सुबल	(ल ४१, ल ४४, ल १९८)	श्रीकृष्णका प्रियनर्म सखा।
सुभगा	(६२)	श्रीकृष्णकी जननीके समान गोपी।
सुभद्र	(ल २२, ल २७-२८)	श्रीकृष्णके ताऊके पुत्र सुहृत्।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
सुभद्रा	(२४२)	श्रीललिताकी आठ सखियोंमेंसे तृतीया।
सुभद्रा	(ल ७०)	श्रीबलदेवकी बहन; पिता—वसुदेव।
सुभानु	(ल १७०)	श्रीराधाके चाचा।
सुमधुरा	(२४६)	तुङ्गविद्याकी आठ सखियोंमेंसे द्वितीय।
सुमध्या	(२४६, ल १७७)	तुङ्गविद्याकी आठ सखियोंमेंसे तृतीय, श्रीराधाकी प्रियसखी।
सुमन	(ल ८०)	श्रीकृष्णका गान्धिक।
सुमन्दिरा	(२४४)	चम्पकलताकी आठ सखियोंमेंसे अष्टम।
सुमुख	(४२, ४५–४६)	श्रीकृष्णके नाना।
सुमुख	(ल १०५)	श्रीकृष्णका धोबी।
सुमुखी	(२४२)	ललिताकी आठ सखियोंमेंसे पञ्चम।
सुमुखी	(ल ६५)	मधुमङ्गलकी माता।
सुमुखी	(ल १३९)	यूथेश्वरी सखी।
सुरङ्ग	(ल ११०)	श्रीकृष्णका मृग।
सुरङ्गी	(१०६)	रङ्गिणी हिरणकी जननी; हिरण्याङ्गीकी माता।
सुरतदेव	(ल ९०)	पौर्णमासीके पिता।
सुरप्रभ	(ल २४)	श्रीकृष्णका ज्येष्ठकल्प सुहृत्।
सुरभि	(२४३)	श्रीविशखाकी आठ सखियोंमेंसे सातवीं।
सुरेमा	(४९)	सुदेवकी पत्नी।
सुलता	(६८)	व्रजमें पूजिता वृद्ध ब्राह्मणी।
सुलम्बा	(ल ८४)	श्रीकृष्णकी चेटी।
सुवर्णमञ्जरी	(ल १८३)	श्रीराधाकी मञ्जरी।
सुविलास	(ल ७६)	श्रीकृष्णका ताम्बूलिक।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
सुवेर्जना	(२२)	श्रीकृष्णके दादाकी बहन।
सुशिखा	(११५)	शिखावतीकी माता।
सुशील	(ल ८२)	श्रीकृष्णका कोषाधिकारी सेवक।
सुशीला	(ल ६३)	सुदाम-विदग्धकी बहन।
सुसङ्गता	(२४७)	इन्दुलेखाकी आठ सखियोंमेंसे चतुर्थ।
सूक्ष्मधी	(ल २०१)	श्रीराधाकी शारिका।
सूर्यसाह्वय	(२३(क), ८९, १११)	वृषभानु; नामान्तर—सूर्यमित्र।
सैरिन्ध्र	(ल ७९)	श्रीकृष्णका वेशकारी सेवक।
सौध	(५९)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
सौभाग्यमणि	(ल २०५)	शंखचूड़के मस्तकसे प्राप्त स्यमन्तक रत्न।
सौम्यदर्शना	(२२६, २३१)	श्रीकृष्णकी सन्धिदूती।
सौरभेय	(५८)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
स्तोककृष्ण	(१०८, ल ३१, ल ३३)	श्रीकृष्णका प्रियसखा।
स्मरयन्त्रम्	(ल २०३)	श्रीराधाका तिलक।
स्मरोद्धुरा	(ल १९१)	श्रीराधाकी गान्धर्व सखी।
स्यमन्तक	(ल २०४)	शंखचूड़ शिरोमणि।
स्वच्छ	(ल ८२)	श्रीकृष्णका अन्य सेवक कोषाधिकारी।
स्वधा	(६८)	व्रजमें पूजित वृद्ध ब्राह्मणी।
स्वधाकार	(६६)	श्रीकृष्णका कुलद्विज।
स्वस्तिदा	(ल २०९)	श्रीराधाकी रत्नकङ्कती।
स्वाहा	(६८)	व्रजमें पूजित वृद्ध ब्राह्मणी।

ह

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
हंसगञ्जन	(ल १२७)	श्रीकृष्णका नूपुरयुगल।
हंसी	(ल १०९)	श्रीकृष्णकी प्रियधेनु।

पात्र	श्लोक संख्या	परिचय
हर	(५९)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
हर	(ल ८०)	श्रीकृष्णका गान्धिक।
हरिकेश	(५९)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
हरिणी	(२४३)	श्रीविशाखाकी आठ सखियोंमेंसे पञ्चम सखी।
हरिमनोहर	(ल २०३)	श्रीराधाका हार।
हरिसारा	(४१)	वाटुक-पत्नी।
हविसारा	(५०)	यशस्विनका नामान्तर।
हारकण्ठी	(२४९)	सुदेवीकी आठ सखियोंमेंसे सप्तम सखी।
हारहीरा	(२४९)	सुदेवीकी आठ सखियोंमेंसे पञ्चम सखी।
हारावली	(ल १३९)	यूथेश्वरी सखी।
हारीत	(५९)	श्रीकृष्णके पिताके समान गोप।
हासङ्क	(ल ४२)	श्रीकृष्णका विदूषक।
हिङ्गुला	(६२)	श्रीकृष्णकी माताके समान गोपी।
हिरण्याङ्गी	(९८, १०२, १०८)	श्रीकृष्णकी वर-सखी।
हेम-मञ्जरी	(ल १८४)	श्रीराधाकी मञ्जरी।